धरती आबा की ऊर्जावान भूमि से प्रकाशित लोकप्रिय दैनिक

खबरमन्त्र

सबकी बात सबके साथ

सुप्रभात
रांची, गुरुवार
24.08.2023

* नगर संस्करण । पेज : 12 | श्रावण, शुक्ल पक्ष, अष्टमी संवत 2080 | मूल्य : ₹ 3 । वर्ष : 10 । अंक : 44 | khabarmantra.net

चांद पर हिन्दुस्तान

- भारत ने रचा इतिहास : चंद्रयान-3 मिशन की शानदार सफलता
- दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग कराने वाला पहला देश बना भारत
- शाम छह बजकर चार मिनट पर चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र पर चंद्रयान ने की सॉफ्ट लैंडिंग।
- चंद्रयान-3 ने 14 जुलाई को चांद पर पहुंचने की यात्रा शुरू की थी
- 23 अगस्त को चांद को चूमा और लहराया तिरंगा
- चांद पर जाने वाला भारत चौथा देश बन गया
- लैंडिंग के 2 घंटे 26 मिनट बाद लैंडर से बाहर आया रोवर, चांद पर छोड़ेगा भारत की छाप

अमृतकाल में अमृत वर्षा

मोदी ने दी बधाई, कहा,- अमृतकाल की प्रथम प्रभा में सफलता की अमृत वर्षा हुई है। हमने धरती पर संकल्प लिया और चांद पर उसे साकार किया। टीम चंद्रयान , इसरो और देश के सभी वैज्ञानिकों को जी-जान से बहुत-बहुत बधाई देता हूं।

मानव जाति के लिए बड़ी उपलब्धि : राष्ट्रपति

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सफल लैंडिंग पर कहा कि ऐसे दिन होते हैं जब इतिहास बनता है। चंद्रमा पर सफल लैंडिंग के साथ भारतीय वैज्ञानिकों ने न केवल इतिहास रचा, बल्कि भूगोल के विचार को भी नया रूप दिया। यह वास्तव में एक महत्वपूर्ण अवसर है। इस तरह की घटना जीवनकाल में एक बार होती है। मैं इसरो और इस मिशन में शामिल सभी लोगों को बधाई देती हूं। मेरा मानना है कि चंद्रयान की सफलता संपूर्ण मानव जाति के लिए एक बड़ी उपलब्धि है।

सीएम हेमंत सोरेन ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर लिखा 'अद्भुत!! अविस्मरणीय!! तिरंगे की आन-बान और शान हम चंद्रमा पर पहुंच गये। देश के हमारे महान वैज्ञानिकों की कड़ी मेहनत, दृढ़ता और लगन को सलाम।

राज्यपाल डॉ सीपी राधाकृष्णन ने चंद्रयान-3 के चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफल लैंडिंग के लिए इसरो परिवार के सभी वैज्ञानिकों को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं दी है। उन्होंने ट्वीट कर लिखा है कि इसरो की इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर देश के हर नागरिक को गर्व है। जय हिन्द!

झारखंड (तपकारा) के वैज्ञानिक सोहन यादव चंद्रयान-3 मिशन के सदस्य रहे। तपकरा में उनके निवास स्थान पर बुधवार को सोहन की मां दिन भर उपवास में रह कर मिशन की सफलता की प्रार्थना करती रहीं।

बिल नेल्सन ने दी बधाई : नासा के प्रशासक बिल नेल्सन ने ट्वीट किया, चंद्रयान-3 के चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफल लैंडिंग के लिए इसरो को बधाई और भारत को चंद्रमा पर अंतरिक्ष यान की सफलतापूर्वक सॉफ्ट-लैंडिंग करने वाला चौथा देश बनने पर बधाई। हमें इस मिशन में आपका भागीदार बनकर खुशी हो रही है।

पूर्व इसरो प्रमुख के सिवन ने दी बधाई

पूर्व इसरो प्रमुख के सिवन ने इसरो के तीसरे चंद्र मिशन चंद्रयान-3 की चंद्रमा पर सफल लैंडिंग पर बधाई दी। उन्होंने कहा कि हम वास्तव में उत्साहित हैं...हम लंबे समय से इस पल का इंतजार कर रहे थे। मैं बहुत खुश हूं।

ऐसा रहा सफर

- **6 जुलाई :** ISRO की तरफ से चंद्रयान-3 मिशन को लॉन्च करने की जानकारी दी गयी। एजेंसी ने बताया कि मिशन को 14 जुलाई को श्रीहरिकोटा से लॉन्च किया जायेगा।
- **7 जुलाई :** लॉन्च पैड व्हीकल का सफल निरीक्षण हुआ। इस तरह चंद्रयान-3 मिशन लॉन्चिंग के लिए एक कदम आगे बढ़ा
- **11 जुलाई :** 24 घंटे तक चलने वाली प्रोसेस की तैयारी पूरी तरह से सफल रही।
- **14 जुलाई :** चंद्रयान-3 मिशन को श्रीहरिकोटा से GSLV Mark 3 (LVM 3) हैवी-लिफ्ट लॉन्च व्हीकल के जरिए दोपहर 2.35 बजे लॉन्च किया गया। इस तरह चंद्रयान मिशन ने चांद तक के सफर की शुरूआत की।
- **15 जुलाई से 22 जुलाई :** चंद्रयान मिशन ने आठ दिनों के भीतर ऑर्बिट-रेजिंग मैन्यूवर को सफलतापूर्वक पूरा किया। कुल मिलाकर चार ऑर्बिट-रेजिंग मैन्यूवर पूरे हुए। इसके जरिए मिशन धीरे-धीरे चांद की ओर रवाना हो गया।
- **1 अगस्त :** इस दिन चंद्रयान को चंद्रमा के ऑर्बिट की तरफ भेजा गया। इस तरह अब वह चंद्रमा की ग्रेविटी का इस्तेमाल कर लैंडिंग की तैयारी में जुट गया।
- **1 अगस्त :** इस दिन चंद्रयान को चंद्रमा के ऑर्बिट की तरफ भेजा गया। इस तरह अब वह चंद्रमा की ग्रेविटी का इस्तेमाल कर लैंडिंग की तैयारी में जुट गया।
- **5 अगस्त :** चंद्रयान-3 मिशन सफलतापूर्वक चांद के ऑर्बिट में एंटर कर गया। इस तरह मिशन अपनी कामयाबी की तरफ से बढ़ता चला गया। इस समय चंद्रयान चांद के पहले ऑर्बिट में था।
- **6 अगस्त से 16 अगस्त :** चांद पर लैंडिंग से पहले चंद्रयान को चार ऑर्बिट-रिडक्शन मैन्यूवर पूरा करने थे। इनके जरिये ही चंद्रयान चांद की सतह के करीब पहुंचता। 10 दिनों के भीतर इन चार ऑर्बिट-रिडक्शन मैन्यूवर को पूरा किया गया।
- **17 अगस्त :** चंद्रयान मिशन में शामिल लैंडर मॉड्यूल सफलतापूर्वक प्रोपल्शन मॉड्यूल से अलग हुआ. इसके बाद चांद तक का सफर लैंडर मॉड्यूल ने अकेले ही शुरू किया।
- **17 अगस्त :** चंद्रयान मिशन में शामिल लैंडर मॉड्यूल सफलतापूर्वक प्रोपल्शन मॉड्यूल से अलग हुआ. इसके बाद चांद तक का सफर लैंडर मॉड्यूल ने अकेले ही शुरू किया।
- **19 अगस्त :** लैंडर मॉड्यूल ने डिबूस्टिंग ऑपरेशन को अंजाम दिया। इसके जरिए वह चांद की सतह की ओर करीब बढ़ता गया।
- **20 अगस्त :** इसरो ने दूसरे डिबूस्टिंग ऑपरेशन को अंजाम दिया और लैंडर मॉड्यूल चांद से 25 किमी की दूरी तक ही रह गया. इसके बाद इसरो ने पूरा फोकस लैंडिंग पर लगा दिया.

17 श्रमिकों की मौत पर सीएम ने जताया दुःख

रांची। सीएम हेमंत सोरेन ने मिजोरम के सैरांग में निमार्णाधीन रेलवे पुल के गिरने से 17 श्रमिकों की मौत पर दुख जताया है। उन्होंने ट्विट कर कहा कि निमार्णाधीन रेलवे पुल के गिरने से 17 श्रमिकों की मृत्यु की दुखद खबर मिली। परमात्मा दिवगंत आत्माओं को शांति प्रदान कर शोकाकुल परिवारजनों को दुख की यह घड़ी सहन करने की शक्ति दे। दुर्घटना में घायल हुए लोगों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करता हूं।

सीएम को बूढ़ा पहाड़ विकास परियोजना नामक पुस्तक भेंट की

रांची। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन को सचिव अमिताभ कौशल ने बूढ़ा पहाड़ विकास परियोजना नामक पुस्तक भेंट की। इस पुस्तक में गढ़वा और लातेहार जिला तथा छत्तीसगढ़ की सीमा से सटे 30 किलोमीटर की परिधि में फैले बूढ़ा पहाड़ इलाके के नक्सल मुक्त होने के बाद वहां चलाई जा रही विकास योजना की पूरी जानकारी है। इस पुस्तक को तैयार करने में गढ़वा और लातेहार के उपायुक्त का अहम योगदान है। मालूम हो कि बूढ़ा पहाड़ क्षेत्र का समग्र विकास राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसी सिलसिले में मुख्यमंत्री के निर्देश पर पहाड़ विकास परियोजना के रूपरेखा के निरूपण के लिए तीन सदस्यीय समिति का गठन किया गया। इस समिति के निर्णय के आलोक में बूढ़ा पहाड़ क्षेत्र में विकास कार्य किये जा रहे हैं।

उपायुक्त का कार्यालय, हजारीबाग
(जिला भू-अर्जन शाखा)

प्रपत्र–VI
समाहर्त्ता या समुचित सरकार
प्रारंभिक अधिसूचना
(अधिनियम–30/2013 की धारा–11 (1) के अधीन)

अधिसूचना सं0:–818/भू0अ0, हजारीबाग। दिनांकः– 19.08.2023

चुंकि समाहर्त्ता/समुचित सरकार को यह प्रतीत होता है कि ग्राम–बलोदर, थाना–सं0–145, थाना–बड़कागाँव, अंचल–बड़कागाँव, जिला–हजारीबाग में भूमि सार्वजनिक प्रयोजन, यथा अडानी इन्टरप्राईजेज लि0, गोन्दुलपारा कोयला खान परियोजना भू अर्जन अपेक्षित है, इसलिए राज्य एस0 आई0 ए0 ईकाई द्वारा सामाजिक प्रभाव मूल्यांकन अध्ययन कराया गया और एक प्रतिवेदन सौंपा गया। सामाजिक प्रभाव मूल्यांकन प्रतिवेदन का सार–संक्षेप यथा निम्न है:–

हजारीबाग जिला के बड़कागाँव अंचल अन्तर्गत अधिग्रहण के लिए प्रस्तावित परियोजना गोन्दुलपारा कोयला खान में रैयती भूमि की मात्रा न्यूनतम है और इसे टाला नहीं जा सकता क्योंकि इस गोन्दलपुरा कोल ब्लॉक का स्थल कोयला मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रदत निर्देशांक (Co-ordinates) के कारण पूर्व निश्चित है एवं प्रस्तावित गोन्दलपुरा कोल ब्लॉक का आवंटन अदाणी इन्टरप्राईजेज लि0 को कोयला मंत्रालय, भारत सरकार के आदेश सं0 NA-104/10/2020-NA, दिनांक 08.03.2021 द्वारा किया गया है। अतः अधिग्रहण के लिए प्रस्तावित भूमि की सीमा परियोजना के लिए आवश्यक न्यूनतम सीमा है। प्रस्तावित परियोजना कोयला खनिज धारित क्षेत्र है जिसका अन्वेषण केन्द्रिय संस्था, सी0एम0पी0डी0आई0 के द्वारा किया गया है। जिससे दूसरे जगह स्थानांतरित नही किया जा सकता है। इस प्रकार प्रस्तावित विस्थापन को कम नही किया जा सकता है। सामाजिक समाघात अध्ययन के समस्त पहलुओं पर विचार के उपरांत पाया गया कि यह परियोजना लोकप्रयोजनार्थ है एंव सार्वजनिक उद्देश्य को पूरा करती है। प्रस्तावित परियोजना का परिचालन लम्बी अवधि के लिए होगा। परियोजना से प्रत्यक्ष एंव अप्रत्यक्ष रूप से लगभग अधिकांश व्यक्तियों को रोजगार के अवसर प्राप्त होगें। प्रारंभिक चरण में प्रस्तावित विकास का परिचालन चरण एक से दूसरे अवसर को जन्म देगा। जिससे अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसरों की संख्या में गुणोत्तर वृद्धि होगी। विकास योजना में खनन से संबंधित कौशल (जैसे ड्राईविंग, तकनीकी कौशल व बुनियादी प्रबंधन कौशल) वयस्क बुनियादी शिक्षा व प्रशिक्षण और सामान्य जीवन कौशल का विकास शामिल होगें। सामुदायिक विकास परियोजनाओं को और अधिक सुदृढ कर समाजिक स्थिति को संतुलित किया जा सकता है। परियोजना की सामाजिक लागत एवं प्रतिकूल सामाजिक प्रभाव की तुलना में संभावित लाभ अधिक है।

भू–अर्जन के कारण विस्थापित परिवारों की सं0 एस0आई0ए0 प्रतिवेदन के अनुसार 781 है। इस बाध्यकारी विस्थापन का कारण नीचे दिया गया है। प्रभावित परिवारों के पुनर्वासन एवं पुनर्व्यवस्थापन के प्रयोजनार्थ अपर समाहर्त्ता अथवा नियम 2(1) (ख) के तहत नियुक्त पदाधिकारी को प्रशासक के रुप में नियुक्त किए गए है। अतएव अधिसूचित किया जाता है कि ग्राम–बलोदर, थाना–सं0–145, थाना–बड़कागाँव, अंचल–बड़कागाँव, जिला–हजारीबाग में उपर्युक्त कथित परियोजना के कमोवेश 79.35 एकड़ यानि 32.11 हेक्टेयर मानक माप का भूखंड, जिसका विस्तृत विवरण निम्नलिखित अर्जनाधीन है जो निम्नवत है:–

क्र0 सं0	खाता सं0	सर्वे प्लॉट सं0	स्वामित्व का प्रकार	भूमि का प्रकार	अर्जन के अधीन क्षेत्रफल (एकड़ में)	हितबद्ध व्यक्ति का नाम व पता	सीमा (भूखण्ड सं0) उ0	द0	पू0	प0
46	5	140	नीज	टांड–III	0.3200	तिलक गंझु पारसनाथ गंझु प्रमेश्वर गंझु जगदेव गंझु खेमलाल गंझु पिता रामसहाय गंझु वो भुनेश्वर गंझु पिता स्व0 बढ़न गंझु	प्लॉट –149	प्लॉट –141	प्लॉट –139	प्लॉट –148
47	5	141	नीज	धान–III	0.4900	ठाकुरी गंझु , कजरू गंझु कुलेश्वर गंझु पिता स्व0 चमन गंझु वो कमल गंझु, जीवन गंझु जानकी गंझु पिता स्व0 किशुन गंझु वो देवा गंझु, पैरू गंझु, बौधी गंझु, मो0 चरकी पिता स्व0 घनश्याम गंझु वो दशमी भुईन पिता स्व0 रूशन गंझु वो तिलक गंझु, पारसनाथ गंझु, परमेश्वर गंझु, जगदेव गंझु, खेमलाल गंझु पिता स्व0 रामसहाय गंझ वो भुनेश्वर गंझु पिता स्व0 सौना गंझु वो बुधन गंझु पिता स्व0 अलखु गंझु वो कोमल गंझु पिता कोइली गंझु वो छेदी गंझु पिता स्व0 दीना गंझु।	प्लॉट –147	प्लॉट –142	प्लॉट –148	प्लॉट –145
48	21	142	नीज	धान–III	0.1300	बंधु गंझु पिता स्व0 करम गंझु वो ठकुरी गंझु, आतो गंझ, छक्कन गंझु, कैलाश गंझु पिता स्व0 धरम गंझु सा0 बलोदर	प्लॉट –141	प्लॉट –143	प्लॉट –141	प्लॉट –145
49	21	143	नीज	धान–III	0.2000	बंधु गंझु पिता स्व0 करम गंझु वो ठकुरी गंझु, आतो गंझ, छक्कन गंझु, कैलाश गंझु पिता स्व0 धरम गंझु सा0 बलोदर	प्लॉट –142	प्लॉट –134	प्लॉट –139	प्लॉट –144
50	5	145	नीज	टांड–III	0.1350	ठाकुरी गंझु , कजरू गंझु कुलेश्वर गंझु पिता स्व0 चमन गंझु वो कमल गंझु, जीवन गंझु जानकी गंझु पिता स्व0 किशुन गंझु वो देवा गंझु, पैरू गंझु, बौधी गंझु, मो0 चरकी पिता स्व0 घनश्याम गंझु वो दशमी भुईन पिता स्व0 रूशन गंझु वो तिलक गंझु, पारसनाथ गंझु, परमेश्वर गंझु, जगदेव गंझु, खेमलाल गंझु पिता स्व0 रामसहाय गंझ वो भुनेश्वर गंझु पिता स्व0 सौना गंझु वो बुधन गंझु पिता स्व0 अलखु गंझु वो कोमल गंझु पिता कोइली गंझु वो छेदी गंझु पिता स्व0 दीना गंझु।	प्लॉट –147	प्लॉट –144	प्लॉट –142	प्लॉट –146
51	5	145/1	नीज	टांड–III	0.0450	मोसामात चरकी देवी उर्फ चीतवा पति शीबन गंझु	प्लॉट –147	प्लॉट –144	प्लॉट –142	प्लॉट –146
52	5	146	नीज	टांड–III	0.1500	ठाकुरी गंझु , कजरू गंझु कुलेश्वर गंझु पिता स्व0 चमन गंझु वो कमल गंझु, जीवन गंझु जानकी गंझु पिता स्व0 किशुन गंझु वो देवा गंझु, पैरू गंझु, बौधी गंझु, मो0 चरकी पिता स्व0 घनश्याम गंझु वो दशमी भुईन पिता स्व0 रूशन गंझु वो तिलक गंझु, पारसनाथ गंझु, परमेश्वर गंझु, जगदेव गंझु, खेमलाल गंझु पिता स्व0 रामसहाय गंझ वो भुनेश्वर गंझु पिता स्व0 सौना गंझु वो बुधन गंझु पिता स्व0 अलखु गंझु वो कोमल गंझु पिता कोइली गंझु वो छेदी गंझु पिता स्व0 दीना गंझु।	प्लॉट –147	प्लॉट –131	प्लॉट –145	प्लॉट –127
53	9	147	नीज	टांड–I	0.1100	केदार साव, विराज साव, रामअवतार साव पिता स्व0 बौधा साव सा0 बादम	प्लॉट –149	प्लॉट –141	प्लॉट –148	प्लॉट –111
54	11	163	नीज	टांड–III	0.3300	तेजो उर्फ कैला गंझु, नारायण गंझु पिता स्व0 पारसनाथ गंझु वो ठुरच गंझु, विकास गंझु पिता स्व0 छेदी गंझु वो प्रयाग गंझु पिता स्व0 मोहन गंझु	प्लॉट –162	प्लॉट –164	प्लॉट –162	प्लॉट –156
55	11	167	नीज	टांड–III	1.1900	लक्ष्मण महतो वो सुरेश महतो पिता मुंशी महतो तालेश्वर महतो बुटन महतो पिता रंगु महतो	प्लॉट –164	प्लॉट –624	प्लॉट –624	प्लॉट –168
56	19	169	नीज	टांड–III	0.4000	खैटा गंझु, कछिया गंझु पिता स्व0 सुकर गंझु वो जेतु गंझु पिता स्व0 नान्‍‍हु गंझु वो कार्तिक गंझु पिता स्व0 मोहन गंझु वो भादे गंझु, अमृत गंझु पिता स्व0 मोहन गंझु सा0 बलोदर टोला जामुन टोला।	प्लॉट –168	प्लॉट –594	प्लॉट –595	प्लॉट –535
57	13	171	नीज	धान–II	0.0500	रामेश्वर गंझु, उगन गंझु पिता स्व0 धनु गंझु वो लटन गंझु, झोतर गंझु पिता स्व0 मोहन गंझु वो मंगरी गंझुईन, मनतोरीया, पूजी पिता स्व0 जीतन गंझु वो महावीर गंझु, भूखा गंझु, टिमन गंझु उर्फ प्रेमलाल गंझु पिता स्व0 मीना गंझु वो माघा गंझु पिता स्व0 त्रिभुवन गंझु सा0 बलोदर	प्लॉट –136	प्लॉट –172	प्लॉट –168	प्लॉट –172
58	13	171/1	नीज	धान–II	0.0600	पुसन गोप पिता नान्दो गोप	प्लॉट –136	प्लॉट –172	प्लॉट –168	प्लॉट –172
59	13	172	नीज	धान–II	0.2500	रामेश्वर गंझु, उगन गंझु पिता स्व0 धनु गंझु वो लटन गंझु, झोतर गंझु पिता स्व0 मोहन गंझु वो मंगरी गंझुईन, मनतोरीया, पूजी पिता स्व0 जीतन गंझु वो महावीर गंझु, भूखा गंझु, टिमन गंझु उर्फ प्रेमलाल गंझु पिता स्व0 मीना गंझु वो माघा गंझु पिता स्व0 त्रिभुवन गंझु सा0 बलोदर	प्लॉट –134	प्लॉट –173	प्लॉट –168	प्लॉट –133
60	13	172/1	नीज	धान–II	0.1400	पुसन गोप पिता नान्दो गोप	प्लॉट –134	प्लॉट –173	प्लॉट –168	प्लॉट –133
61	5	173	नीज	धान–II	0.4100	मनोहर कुमार, खिरोधर महतो पिता गिरधारी महतो वो नन्दकिशोर महतो, डालेश्वर महतो पिता बोधन महतो	प्लॉट –172	प्लॉट –531	प्लॉट –532	प्लॉट –174
62	5	174	नीज	धान–II	0.1100	मनोहर कुमार, खिरोधर महतो पिता गिरधारी महतो वो नन्दकिशोर महतो, डालेश्वर महतो पिता बोधन महतो	प्लॉट –172	प्लॉट –512	प्लॉट –173	प्लॉट –175
63	21	175	नीज	टांड–III	0.1600	बंधु गंझु पिता स्व0 करम गंझु वो ठकुरी गंझु, आतो गंझ, छक्कन गंझु, कैलाश गंझु पिता स्व0 धरम गंझु सा0 बलोदर	प्लॉट –133	प्लॉट –512	प्लॉट –174	प्लॉट –176
64	5	176	नीज	धान–II	0.5600	ठाकुरी गंझु , कजरू गंझु कुलेश्वर गंझु पिता स्व0 चमन गंझु वो कमल गंझु, जीवन गंझु जानकी गंझु पिता स्व0 किशुन गंझु वो देवा गंझु, पैरू गंझु, बौधी गंझु, मो0 चरकी पिता स्व0 घनश्याम गंझु वो दशमी भुईन पिता स्व0 रूशन गंझु वो तिलक गंझु, पारसनाथ गंझु, परमेश्वर गंझु, जगदेव गंझु, खेमलाल गंझु पिता स्व0 रामसहाय गंझ वो भुनेश्वर गंझु पिता स्व0 सौना गंझु वो बुधन गंझु पिता स्व0 अलखु गंझु वो कोमल गंझु पिता कोइली गंझु वो छेदी गंझु पिता स्व0 दीना गंझु।	प्लॉट –132	प्लॉट –508	प्लॉट –175	प्लॉट –177
65	17	177	नीज	धान–II	0.08	ठाकुरी गंझु पिता चमन गंझु	प्लॉट –130	प्लॉट –181	प्लॉट –176	प्लॉट –178
66	17	178	नीज	धान–II	0.0300	मिठु गंझु वल्द मुंगी गंझु कॉम भोगता सा0 देह।	प्लॉट –130	प्लॉट –180	प्लॉट –177	प्लॉट –179
67	17	179	नीज	धान–II	0.0400	मिठु गंझु वल्द मुंगी गंझु कॉम भोगता सा0 देह।	प्लॉट –180	प्लॉट –180	प्लॉट –178	प्लॉट –180
68	5	181	नीज	धान–II	0.6800	नेमिया देवी पति अमृत गंझु सा0 बलोदर।	प्लॉट –180	प्लॉट –503	प्लॉट –508	प्लॉट –185
69	5	181/1	नीज	धान–II	0.0500	ठाकुरी गंझु , कजरू गंझु कुलेश्वर गंझु पिता स्व0 चमन गंझु वो कमल गंझु, जीवन गंझु जानकी गंझु पिता स्व0 किशुन गंझु वो देवा गंझु, पैरू गंझु, बौधी गंझु, मो0 चरकी पिता स्व0 घनश्याम गंझु वो दशमी भुईन पिता स्व0 रूशन गंझु वो तिलक गंझु, पारसनाथ गंझु, परमेश्वर गंझु, जगदेव गंझु, खेमलाल गंझु पिता स्व0 रामसहाय गंझ वो भुनेश्वर गंझु पिता स्व0 सौना गंझु वो बुधन गंझु पिता स्व0 अलखु गंझु वो कोमल गंझु पिता कोइली गंझु वो छेदी गंझु पिता स्व0 दीना गंझु।	प्लॉट –180	प्लॉट –503	प्लॉट –508	प्लॉट –185
70	21	182	नीज	मकान सहन	0.0400	बंधु गंझु पिता स्व0 करम गंझु वो ठकुरी गंझु, आतो गंझ, छक्कन गंझु, कैलाश गंझु पिता स्व0 धरम गंझु सा0 बलोदर	प्लॉट –180	प्लॉट –181	प्लॉट –181	प्लॉट –183
71	9	183	नीज	मकान सहन	0.0500	नान्दो गंझु वो सुकर गंझु वो कन्दन गंझु पेशरान महादेव गंझु डीलु गंझु माता स्व0 सुकरी देवी कॉम भोगता सा0 देह।	प्लॉट –184	प्लॉट –185	प्लॉट –182	प्लॉट –185
72	5	184	नीज	धान–II	0.0200	तिलक गंझु पारसनाथ गंझु प्रमेश्वर गंझु जगदेव गंझु खेमलाल गंझु पिता रामसहाय गंझु वो भुनेश्वर गंझु पिता स्व0 बढ़न गंझु	प्लॉट –180	प्लॉट –185	प्लॉट –183	प्लॉट –126
73	11	185	नीज	धान–II	0.2500	तेजो उर्फ कैला गंझु, नारायण गंझु पिता स्व0 पारसनाथ गंझु वो ठुरच गंझु, विकास गंझु पिता स्व0 छेदी गंझु वो प्रयाग गंझु पिता स्व0 मोहन गंझु	प्लॉट –184	प्लॉट –502	प्लॉट –181	प्लॉट –126
74	8	186	नीज	टांड–I	0.2900	चरण गंझु वो परन गंझु पेशरान बीरू गंझु 1 हिस्सा ब हिस्सा बराबर वो टेकन गंझु पिता फागु गंझु वो वंशी गंझु पिता स्व0 जादो गंझु पेशरान लखी गंझु 1 हिस्सा ब हिस्सा बराबर कॉम भोगता सा0 देह टोला जामुन टोला।	प्लॉट –123	प्लॉट –188	प्लॉट –126	प्लॉट –187
75	5	187	नीज	धान–III	0.1167	देवन्ती देवी पति ग्यादत्त सिंह जाति भूमिहार एवं विभा देवी पति अशोक कुमार सिंह जाति भूमिहार सा0 अम्बाजीत।	प्लॉट –84	प्लॉट –188	प्लॉट –123	प्लॉट –193
76	5	187/I	नीज	धान–III	0.1167	कुन्ती देवी पति रामलखन सिंह जाति भूमिहार सा0 अम्बाजीत	प्लॉट –84	प्लॉट –188	प्लॉट –123	प्लॉट –193
77	5	187/II	नीज	धान–III	0.1166	हरिनारायण सिंह पिता स्व0 पाठक धनेश्वर सिंह एवं श्री पाठक भानुप्रताप सिंह वो श्री माधो प्रताप सिंह वो श्री शिवनारायण सिंह पिता स्व0 पाठक धनेश्वर सिंह जाति भूमिहार सा0 अम्बाजीत।	प्लॉट –84	प्लॉट –188	प्लॉट –123	प्लॉट –193
78	18	189	नीज	परती कदीम	0.1800	रमला भुईयां वो शमला भुईयां वो फगुआ भुईयां पेशरान..............भुईयां कॉम भुईयां साकिन गाली ब हिस्सा बराबर।	प्लॉट –188	प्लॉट –444	प्लॉट –447	प्लॉट –440
79	5	190	नीज	धान–III	0.0334	देवन्ती देवी पति ग्यादत्त सिंह जाति भूमिहार एवं विभा देवी पति अशोक कुमार सिंह जाति भूमिहार सा0 अम्बाजीत।	प्लॉट –188	प्लॉट –440	प्लॉट –189	प्लॉट –438
80	5	190/I	नीज	धान–III	0.0333	कुन्ती देवी पति रामलखन सिंह जाति भूमिहार सा0 अम्बाजीत	प्लॉट –188	प्लॉट –440	प्लॉट –189	प्लॉट –438
81	5	190/II	नीज	धान–III	0.0333	हरिनारायण सिंह पिता स्व0 पाठक धनेश्वर सिंह एवं श्री पाठक भानुप्रताप सिंह वो श्री माधो प्रताप सिंह वो श्री शिवनारायण सिंह पिता स्व0 पाठक धनेश्वर सिंह जाति भूमिहार सा0 अम्बाजीत।	प्लॉट –188	प्लॉट –440	प्लॉट –189	प्लॉट –438
82	5	191	नीज	धान–III	0.0500	ठाकुरी गंझु , कजरू गंझु कुलेश्वर गंझु पिता स्व0 चमन गंझु वो कमल गंझु, जीवन गंझु जानकी गंझु पिता स्व0 किशुन गंझु वो देवा गंझु, पैरू गंझु, बौधी गंझु, मो0 चरकी पिता स्व0 घनश्याम गंझु वो दशमी भुईन पिता स्व0 रूशन गंझु वो तिलक गंझु, पारसनाथ गंझु, परमेश्वर गंझु, जगदेव गंझु, खेमलाल गंझु पिता स्व0 रामसहाय गंझ वो भुनेश्वर गंझु पिता स्व0 सौना गंझु वो बुधन गंझु पिता स्व0 अलखु गंझु वो कोमल गंझु पिता कोइली गंझु वो छेदी गंझु पिता स्व0 दीना गंझु।	प्लॉट –188	प्लॉट –438	प्लॉट –190	प्लॉट –192
83	1	196	नीज	धान–II	0.0300	बकास्त लगान पाने वाला	प्लॉट –79	प्लॉट –414	प्लॉट –195	प्लॉट –198
84	13	262	नीज	धान–II	0.0700	प्रवील महतो पिता स्व0 टेको महतो सा0 बलोदर	प्लॉट –286	प्लॉट –261	प्लॉट –263	प्लॉट –286
85	2	263	नीज	धान–III	0.1100	केशर भुईयां पिता स्व0 मीठुवा भुईयां उर्फ तुलवा भुईयां साकिन गोन्दलपुरा।	प्लॉट –274	प्लॉट –261	प्लॉट –264	प्लॉट –262
86	10	264	नीज	धान–II	0.2200	हरजीवन गोप, जीतन गोप, कामेश्वर गोप पिता स्व0 खेदन गोप वो चौधरी गोप, बिन्दु गोप, निन्दु गोप पिता सुकर गोप वो कैला गोप पिता स्व0 कोल्हा गोप वो सोबरन गोप पिता स्व0 झरी गोप सा0 गोन्दलपुरा।	प्लॉट –274	प्लॉट –261	प्लॉट –265	प्लॉट –263
87	4	265	नीज	धान–III	0.1475	भीखु राणा पिता स्व0 बंधन राणा वो नेपाल राणा पिता स्व0 बंशी राणा वो पुरन राणा, सीताराम राणा, जनार्दन राणा पिता स्व0 उतीम राणा वो गुलाबी राणा पिता स्व0 बुधन राणा वो फागुन राणा पिता स्व0 खुशी बढ़ही, वो देयाल राणा फुटानी राणा, गोविन्द राणा, पिता स्व0 सोना राणा, धमन राणा, लालो राणा, जुगल राणा पिता स्व0 खेदन राणा वो गोबिन्द राणा, अशोक राणा, मनोज राणा पिता स्व0 कमल राणा वो दशरथ राणा, बिन्दु राणा पिता स्व0 कोल्हा राणा, ईश्वरी राणा, हारो राणा पिता स्व0 जीतन राणा वो महेश राणा, नरेश राणा पिता स्व0 बिगन राणा वो देवा राणा, लक्ष्मण राणा, धनी राणा, मीतु राणा, महेन्द्र राणा पिता स्व0 दिलचन्द राणा वो लालसहाय राणा, कोमल राणा, तिलक राणा पिता स्व0 भेखल राणा, हिंद राणा, भूनेश्वर राणा पिता स्व0 टेकन राणा वो मोगल राणा पिता स्व0 रिझन राणा वो तुलसी राणा, खेमलाल राणा, प्रभु राणा, महाबीर राणा पिता स्व0 जग्रनाथ राणा वो दुखन राणा पिता स्व0 लेदो राणा साकिन देह।	प्लॉट –273	प्लॉट –261	प्लॉट –261	प्लॉट –264
88	4	265/1	नीज	धान–III	0.0825	शीतली देवी पति उतीम राणा	प्लॉट –273	प्लॉट –261	प्लॉट –261	प्लॉट –264
89	14	267	नीज	धान–II	0.3200	पार्वतीया देवी पति चमन गंझु	प्लॉट –268	प्लॉट –261	प्लॉट –223	प्लॉट –266
90	11	269	नीज	धान–II	0.1800	तेजो उर्फ कैला गंझु, नारायण गंझु पिता स्व0 पारसनाथ गंझु वो ठुरच गंझु, विकास गंझु पिता स्व0 छेदी गंझु वो प्रयाग गंझु पिता स्व0 मोहन गंझु	प्लॉट –572	प्लॉट –268	प्लॉट –623	प्लॉट –270

यह अधिसूचना भू–अर्जन, पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन में उचित प्रतिकर एवं पारदर्शिता अधिकार अधिनियम, 2013 (अधिनियम संख्या 30/2013) की धारा–11 (1) के उपबंधो के अधीन सभी संबंधित व्यक्तियों के लिए जारी की जाती है।

भूमि की योजना का निरीक्षण जिला भू–अर्जन पदाधिकारी, हजारीबाग के कार्यालय में किसी कार्य दिवस को कार्यावधि में किया जा सकेगा। समाहर्त्ता–सह–समुचित सरकार उक्त अधिनियम की धारा 12 में यथाउपबंधित एवं यथाविनिर्दिष्ट कार्यो के समुचित निष्पादन हेतू अपेक्षित किसी भूमि का सर्वेक्षण एवं उसकी प्रविष्टि करने, किसी भूमि के किसी स्तर को मापने के लिए अवभूमि खोदने या भू–वेधन–छिद्र करने सहित सभी अन्य कार्यो के संचालन करने हेतु जिला भू अर्जन पदाधिकारी, हजारीबाग और उनके कर्मचारी को प्राधिकृत करती है।

अधिनियम की धारा 11 (4) के अधीन कोई व्यक्ति जिला समाहर्त्ता के पूर्व अनुमोदन के बिना इस अधिसूचना के प्रकाशन की तिथि से प्रारंभिक अधिसूचना में विनिर्दिष्ट भूमि का कोई अंतरण यथा क्रय/विक्रय नहीं करेगे या ऐसा कोई अंतरण नहीं करवाएगा या ऐसी भूमि पर कोई अवभार नहीं उत्पन्न करेगा। अधिनियम की धारा 15 के अधीन यथाउपबंधित इस अधिसूचना के प्रकाशन की तिथि से साठ (60 दिनों) के अंतर्गत भू अर्जन की बाबत किसी प्रकार की आपत्तियां हितबद्ध व्यक्ति द्वारा जिला भू–अर्जन पदाधिकारी, हजारीबाग के समक्ष दर्ज की जा सकेगी।

ह0/–
उपायुक्त सह समुचित सरकार, हजारीबाग

PR 305385 Land Reforms(23-24)#D

उद्योग विभाग की मेक इन झारखंड पॉलिसी की समीक्षा

एसटी-एससी उद्यमियों के लिए बने इंडस्ट्रियल कॉरिडोर: सीएम

छोटे उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए किये गये हैं कई प्रावधान

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। सीएम हेमंत सोरेन ने कहा है कि झारखंड में एमएसएमई सेक्टर काफी मायने रखती है। मुख्यमंत्री श्री सोरेन बुधवार को उद्योग विभाग द्वारा छोटे उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए तैयार मेक इन झारखंड पॉलिसी-2023 की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राज्य में इस सेक्टर के उद्योगों के विकास के लिए सभी जरूरी संसाधन उपलब्ध हैं। उन्होंने कहा कि एग्रो बेस्ड इंडस्ट्रीज को बढ़ावा देने पर सरकार का विशेष जोर है। ऐसे में इस पॉलिसी में इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा जाये। इससे किसानों के उत्पादों का भी बेहतर सदुपयोग होगा। उन्होंने अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित जाति के उद्यमियों को बढ़ावा देने के लिए इंडस्ट्रियल कॉरिडोर की स्थापना पर जोर दिया जहां बिजली-पानी-सड़क जैसी सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध हों। इससे अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के ज्यादा से ज्यादा युवाओं युवाओं को उद्योगों लगाने के लिए बढ़ावा मिले। उन्होंने इसके लिए कार्य योजना बनाकर उसे धरातल पर उतारने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित जाति तथा महिलाएं उद्योग लगाने के प्रति आकर्षित हों। इसके लिए सर्विसेज सेक्टर से उन्हें जोड़ने की पहल करें। इसके तहत उन्हें होटल, रेस्टोरेंट, स्कूल, अस्पताल, लैबोरेट्री आदि खोलने के लिए जमीन के साथ-साथ अन्य सुविधाएं भी मुहैया कराने पर पहल करें।

बैठक में मुख्य सचिव सुखदेव सिंह, सीएम की प्रधान सचिव वंदना दादेल, अजय सिंह, विनय कुमार चौबे, जितेंद्र कुमार सिंह, मनमोहन प्रसाद समेत कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

बाबूलाल ने सारठ में जनसभा को किया संबोधित

काम के लिए नहीं, कमाने के लिए बनी महागठबंधन सरकार : मरांडी

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा है कि देश में तीसरी बार नरेंद्र मोदी की सरकार बननी चाहिये। श्री मरांडी बुधवार को सारठ में जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राज्य में महागठबंधन की सरकार काम के लिए नहीं बल्कि कमाने के लिए बनी है। उन्होंने कहा कि गठबंधन सरकार ने निकाय चुनाव नहीं कराकर झारखंड को लूट का अड्डा बनाया है। बिचौलियों और दलालों को अवैध तरीके से खनिज संपदा की लूट की खुली छूट दे दी गई है। बालू, कोयला, पत्थर व अन्य खनिज संपदा अवैध तरीके से लूटा जा रहा है। पांच लाख रोजगार नहीं तो भत्ता देने के नाम पर युवाओं को हेमंत सरकार ने गुमराह किया। उन्होंने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी भ्रष्टाचार समाप्त करने का आह्वान किया है।

डुमरी विस उपचुनाव : जेएमएम ने जारी की स्टार प्रचारकों की सूची

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। डुमरी विस उपचुनाव के लिए झामुमो ने 36 स्टार प्रचारकों की सूची जारी की है। इसमें अध्यक्ष शिबू सोरेन, कार्यकारी अध्यक्ष हेमंत सोरेन समेत कांग्रेस, राजद, भाकपा माले, जदयू के नेता हैं। इसमें प्रदेश कांग्रेस प्रभारी अविनाश पांडेय, राजेश ठाकुर, आलमगीर आलम,चंपाई सोरेन, सरफराज अहमद, संजय सिंह, सत्यानंद भोक्ता, जलेश्वर महतो, खीरू महतो, रामेश्वर उरांव, विनोद सिंह, विनोद पांडेय, सुप्रियो भट्टाचार्य, हफिजुल हसन, सुदिव्य कुमार, मथुरा प्रसाद महतो, योगेंद्र प्रसाद, सीता सोरेन, फागु बेसरा, मिथिलेश ठाकुर, बन्ना गुप्ता, जोबा मांझी, विजय हांसदा, बसंत सोरेन, अंबा प्रसाद, ममता देवी, कुमार जयमंगल, बादल पत्रलेख, प्रदीप यादव, अभिषेक प्रसाद, बंधु तिर्की, दीपिका पांडेय, संजय यादव और निजामुद्दीन अंसारी हैं।

मातृ मृत्यु दर में कमी लाने की सरकारी पहल

राज्य के 124 सीएचसी में स्थापित की जायेगी ब्लड स्टोरेज यूनिट

योजना के लिए 15 करोड़ 89 लाख 68 हजार रुपये की दी गयी स्वीकृति

प्रत्येक ब्लड स्टोरेज की यूनिट पर खर्च होंगे 8 .50 लाख रुपये

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। राज्य सरकार झारखंड में मातृ मृत्यु दर में कमी लाने के लिए हर संभव कोशिश कर रही है। राष्ट्रीय मातृ मृत्यु दर 97 के विरुद्ध झारखंड की मातृ मृत्यु दर 56 है, जिसे राज्य सरकार शून्य करने का प्रयास कर रही है। यही कारण है कि विभाग की ओर से राज्य के 124 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में ब्लड स्टोरेज यूनिट की स्थापना करने की तैयारी हो रही है। वित्त वर्ष 2023-24 में यूनिट की स्थापना के लिए 15 करोड़ 89 लाख 68 हजार रुपये की योजना की स्वीकृति दी गई है। प्रत्येक यूनिट की स्थापना पर 8.50 लाख रुपये खर्च किए जाएंगे।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में प्रसव के दौरान रक्त की पड़ती है जरूरत : प्रखंड स्तर पर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रेफरल अस्पताल के रूप में काम करता है। यहां सर्जरी के माध्यम से प्रसव कराया जाता है और कई बार अचानक रक्त की जरूरत पड़ती है। ब्लड स्टोरेज यूनिट नहीं होने के कारण सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों को जिला अस्पताल के ब्लड बैंक पर निर्भर रहना पड़ता है। प्रसव के दौरान रक्त की जरूरत पड़ने कई बार रक्त उपलब्ध नहीं हो पता है। नतीजा प्रसूता की मौत भी हो जाती है और यह मातृ मृत्यु दर का एक प्रमुख कारण भी है।

आउटसोर्सिंग पर होगी लैब टेक्निशियन की नियुक्ति : ब्लड स्टोरेज यूनिट के संचालन के लिए आउटसोर्सिंग पर लैब टेक्नीशियन की नियुक्ति की जाएगी। स्वास्थ्य विभाग ने एक ब्लड स्टोरेज यूनिट पर एक कर्मचारी के लिए प्रतिवर्ष 2 लाख 16 हजार रुपये व्यय का अनुमान लगाया है। वहीं विभाग ने ऐसी व्यवस्था कायम करने का निर्देश दिया है कि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के ब्लड स्टोरेज यूनिट का ब्लड खराब न हो। इसके लिए जिले के ब्लड बैंक से समन्वय बनाकर रखना है। ब्लड की सेफ लाइफ 35 से 42 दिन होती है।

धरती आबा की ऊर्जावान भूमि से प्रकाशित लोकप्रिय दैनिक

खबर मन्त्र

सबकी बात सबके साथ

सुप्रभात
रांची, गुरुवार
24.08.2023

* नगर संस्करण । पेज : 12 | श्रावण, शुक्ल पक्ष, अष्टमी संवत 2080 | मूल्य : ₹ 3 । वर्ष : 10 । अंक : 44 | khabarmantra.net

SURJABASHA

भारत ने रचा इतिहास, चंद्रयान-3 की सॉफ्ट लैंडिंग सफल, जश्न में डूबा देश

दक्षिणी ध्रुव पर सबसे पहले फहरा तिरंगा

एजेंसी

बेंगलुरु। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने बुधवार को अंतरिक्ष क्षेत्र में एक नया इतिहास रचते हुए चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर लैंडर विक्रम और रोवर प्रज्ञान से लैस लैंडर मॉड्यूल की सॉफ्ट लैंडिग कराने में सफलता हासिल की। भारतीय समयानुसार शाम करीब 06:04 पर इसने चांद की सतह को छुआ। इसके साथ ही भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला दुनिया का पहला देश तथा चांद की सतह पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला दुनिया का चौथा देश बन गया। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर भारत की सॉफ्ट लैंडिंग एक ऐसी उपलब्धि है, जो अब तक किसी देश को हासिल नहीं हुई है। इसरो के महत्वाकांक्षी तीसरे चंद्र मिशन चंद्रयान-3 के लैंडर मॉड्यूल (एलएम) ने बुधवार शाम चंद्रमा की सतह चूमकर अंतरिक्ष विज्ञान में सफलता की एक नयी इबारत रची। वैज्ञानिकों के अनुसार, इस अभियान के अंतिम चरण में सारी प्रक्रियाएं पूर्व निर्धारित योजनाओं के अनुरूप ठीक से चलीं।

पूरे देश में जश्न : मिशन की सफलता से पूरे देश में जश्न मनाया जा रहा है। इसकी सफलता की कामना के लिए सुबह से देशभर में यज्ञ और हवन कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा था।

इसरो प्रमुख ने टीम को दी बधाई : इसरो के प्रमुख एस सोमनाथ ने बुधवार को चंद्रयान-3 की सफलता के लिए अपनी टीम के वैज्ञानिकों को श्रेय दिया और देश के नागरिकों को बधाई दी। वहीं दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग के बाद इसरो के पूर्व प्रमुख के सिवन ने कहा कि यह अच्छी खबर है, जिसका वे गत चार साल से इंतजार कर रहे थे।

चांद के बाद अब सूरज की बारी...

चंद्रयान-3 की सफलता के बाद इसरो की नजर आने वाले कई बड़े मिशन पर है। इनमें से एक है आदित्य एल-1। इस मिशन का जिक्र पीएम मोदी ने भी किया। आदित्य एल-1 मिशन, भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी का अब तक का सबसे जटिल मिशन है। इस चुनौती को ध्यान में रखते हुए इसरो ने तैयारी तेज कर दी है। कई देशों की आशंका के बावजूद इसरो ने बड़ी कामयाबी हासिल की है।

शाम करीब छह बजकर चार मिनट पर इसने चांद की सतह को छुआ

खुशी से झूम उठे साइंटिस्ट

चंद्रयान की सफल सॉफ्ट लैंडिंग से बेंगलुरु में इसरो टेलीमेट्री, ट्रैकिंग और कमांड नेटवर्क (आईएसटीआरएसी) के मिशन ऑपरेशंस कॉम्प्लेक्स में इसरो के साइंटिस्ट खुशी से झूम उठे।

चांद पर सॉफ्ट लैंडिंग के बाद चंद्रयान-3 का लैंडर मॉड्यूल।

धरती पर संकल्प लिया, चांद पर साकार किया : मोदी

पीएम मोदी ने इसरो के वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए दक्षिण अफ्रीका से वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से देशवासियों को संबोधित किया। उन्होंने कहा, जब हम अपनी आंखों के सामने ऐसा इतिहास बनते हुए देखते हैं तो जीवन धन्य हो जाता है। ऐसी ऐतिहासिक घटनाएं राष्ट्रीय जीवन की चिरंजीव चेतना बन जाती है। यह पल अविस्मरणीय है, यह क्षण अभूतपूर्व है, यह क्षण विकसित भारत के शंखनाद का है। यह क्षण नये भारत के जयघोष का है। यह क्षण मुश्किलों के महासागर को पार करने का है। यह क्षण जीत के चंद्र पथ पर चलने का है। यह क्षण 140 करोड़ धड़कनों के सामर्थ्य का है। यह क्षण भारत में नयी ऊर्जा, नये विश्वास, नयी चेतना का है। हमने धरती पर संकल्प लिया और चांद पर उसे साकार किया। आज हम अंतरिक्ष में नए भारत की नयी उड़ान के साक्षी बने हैं। हर घर में उत्सव शुरू हो गया है। हमारे वैज्ञानिकों के परिश्रम से भारत उस दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचा है, जहां आज तक दुनिया का कोई भी देश नहीं पहुंच सका है। आज के बाद से चांद से जुड़े मिथक बदल जायेंगे, कथानक भी बदल जायेंगे।

भारत चांद पर : इसरो प्रमुख

इसरो प्रमुख एस सोमनाथ ने इस ऐतिहासिक सफलता पर खुशी व्यक्त करते हुए कहा, हमने चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग में सफलता हसिल कर ली है। भारत चांद पर है। यह सफलता इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि हाल में रूस का लूना-25 चांद पर उतरने की कोशिश करते समय दुर्घटना का शिकार हो गया था। यह एक ऐसी सफलता है जिसे न केवल इसरो के शीर्ष वैज्ञानिक, बल्कि भारत का हर आम और खास आदमी टीवी की स्क्रीन पर टकटकी बांधे देख रहा था। देश के अनेक स्कूलों में बच्चों के लिए इस ऐतिहासिक घटना का सीधा प्रसारण किया गया। इसरो के अधिकारियों के मुताबिक, लैंडिंग के लिए लगभग 30 किलोमीटर की ऊंचाई पर लैंडर ने 'पॉवर ब्रेकिंग फेज' में कदम रखा और गति को धीरे-धीरे कम करके चंद्रमा की सतह तक पहुंचने के लिए अपने चार थ्रस्टर इंजन की रेट्रो फायरिंग करके उनका इस्तेमाल करना शुरू कर दिया।

अद्भुत!! अविस्मरणीय!! जोहार। जय विज्ञान! जय हिंद...! : हेमंत

रांची। मिशन चंद्रयान 3 की सफलता पर झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने इसरो और देशवासियों को बधाई दी है। उन्होंने कहा- भारत के वैज्ञानिकों ने वह करिश्मा कर दिया है जिसे दुनिया में अभी तक कोई नहीं कर पाया था। सीएम हेमंत सोरेन ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर लिखा- अद्भुत!! अविस्मरणीय!! तिरंगे की आन-बान और शान चंद्रमा पर पहुंच गया। देश के हमारे महान वैज्ञानिकों की कड़ी मेहनत, दृढ़ता और लगन की बदौलत चंद्रयान-3 आज चंद्रमा पर उतर गया। इस ऐतिहासिक सफलता के मौके पर इसरो की पूरी टीम सहित समस्त देशवासियों को अनेक-अनेक बधाई और जोहार। जय विज्ञान! जय हिंद...! देश की इस सफलता पर रांची में दीपावली जैसा उत्सव दिखा। लोगों ने खुशी से झूमते हुए आतिशबाजी की। इस मिशन की सफलता के लिए झारखंड में कई जगह पूजा-अर्चना और हवन किया जा रहा था।

राज्यपाल ने भी दी बधाई

झारखंड के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने भी लोगों को बधाई दी है। उन्होंने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर लिखा- चंद्रयान-3 के चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफल लैंडिंग हेतु इसरो परिवार के सभी वैज्ञानिकों को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं। इसरो की इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर देश के हर नागरिक को गर्व है। जय हिन्द!

बाबूलाल ने दी बधाई

चंद्रयान-3 की सॉफ्ट लैंडिंग पर भाजपा नेता बाबूलाल मरांडी ने कहा कि आज हम सब एक ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बने हैं। चंद्रयान-3 लैंडर मॉड्यूल चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित लैंड कर गया है। ये क्षण अभूतपूर्व है। ये क्षण नये भारत के शंखनाद का है। ये क्षण सफलता के चंद्र पथ पर चलने का है। ये क्षण 140 करोड़ देशवासियों के सामर्थ्य का है।

यूएसए, यूएसएसआर और चीन से भी बड़ी सफलता

चांद के दक्षिण ध्रुव पर भारत के अंतरिक्ष वैज्ञानिकों ने सफल लैंडिग करा कर साहसिक कारनामा सफलतापूर्वक कर दिखाया है। चांद पर सॉफ्ट लैंडिंग में सफलता हासिल कर भारत ऐसी उपलब्धि प्राप्त करने वाला दुनिया का चौथा देश बन गया है। इससे पहले अमेरिका, पूर्ववर्ती सोवियत संघ और चीन के नाम ही यह रिकॉर्ड था, लेकिन ये देश भी अब तक चांद के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र पर विजय प्राप्त नहीं कर पाये हैं। 14 जुलाई को प्रक्षेपित चंद्रयान-3 से पहले चंद्रयान-2 सात सितंबर 2019 को चंद्र सतह पर पहुंचने से कुछ देर पहले सॉफ्ट लैंडिंग में विफल हो गया था। भारत ने पहला चंद्र मिशन 2008 में भेजा था।

न्यूज डायरी

सफल लैंडिंग के बाद अब आगे क्या करेगा चंद्रयान

नयी दिल्ली। 14 दिनों तक रोवर चांद की सतह का अध्ययन करेगा। चांद के मौसम का हाल जानेगा, पानी का पता लगायेगा। लैंडर पर लगे तीन पेलोड्स प्लाज्मा, तापमान व भूकंपीय क्षेत्र की अब स्टडी करेंगे। लैंडर के सेंसर चांद की सतह पर मौजूद खनिजों की पहचान करेंगे।

यूरोपीय स्पेस एजेंसी और नासा ने दी बधाई

नयी दिल्ली। दुनिया की अंतरिक्ष एजेंसियां भारत और इसरो के वैज्ञानिकों को बधाई दे रही हैं। भारत की इस सफलता पर यूरोपीय स्पेस एजेंसी ने इसरो के वैज्ञानिकों को शाबाशी दी, तो दुनिया की सबसे बड़ी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने बधाई दी है।

सामूहिक संकल्प का नतीजा : कांग्रेस

नयी दिल्ली। कांग्रेस ने चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग को इसरो की बेमिसाल उपलब्धि बताया। साथ ही इसे सामूहिक संकल्प का नतीजा बताया। इस सफलता को लेकर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने ट्वीट कर बधाई दी है।

पलामू में सड़क हादसा दो की मौत

मेदिनीनगर। नेशनल हाईवे 75 पर बुधवार को सड़क दुर्घटना में दो लोगों की मौत हो गयी। हाइवे पर बेलगाम ट्रक ने सवारी से भरी ऑटो को जोरदार टक्कर मार दी। मृतकों में एक महिला भी है। दोनों मृतक एक ही गांव के रहने वाले थे। यह हादसा सतबरवा थाना क्षेत्र के राजडेरवा में हुआ।

रेलवे का निर्माणाधीन पुल गिरा, 20 की मौत

आइजोल। मिजोरम के सैरांग के पास एक निर्माणाधीन रेलवे पुल के ढह जाने के बाद बुधवार को 20 मजदूरों की मौत हो गयी। कई अन्य लोगों के फंसे होने की आशंका है, क्योंकि घटना के वक्त वहां 35-40 मजदूर मौजूद थे। राष्ट्रपति और पीएम ने श्रमिकों की मौत पर दुख जताया है।

टीएसपीसी के तीन नक्सली गिरफ्तार

मेदिनीनगर। पलामू पुलिस ने टीएसपीसी के तीन नक्सलियों को गिरफ्तार किया है। उनके पास से पुलिस ने हथियार समेत कई सामग्री को बरामद किया है। पुलिस इलाके में सर्च अभियान चला रही है। खबर थी कि टॉप कमांडर नगीना और निशांत का दस्ता छतरपुर इलाके में किसी घटना को अंजाम देने की फिराक में है। इसी सूचना के आलोक में सर्च अभियान चलाकर उन्हें धर दबोचा।

गहना आभूषण

सोना (बिक्री)	55,600 रु./10 ग्राम
चांदी	74,000 रु./प्रति किलो

शराब कारोबारियों के 32 ठिकानों पर छापेमारी

रामेश्वर उरांव के आवास समेत झारखंड, बंगाल में इडी की दबिश

- रोहित उरांव से पूछताछ, घर से नकद 30 लाख नकद बरामद
- छापामारी में लैपटॉप, पेन ड्राइव, ज्वेलरी समेत मिले कई दस्तावेज
- योगेंद्र तिवारी व भाई से शनिवार को होगी पूछताछ

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। प्रवर्तन निदेशालय (इडी) की टीम ने शराब घोटाला मामले में बड़ी कार्रवाई करते हुए बुधवार तड़के झारखंड के रांची, धनबाद, पलामू, देवघर, दुमका, गोड्डा, जामताड़ा, गिरिडीह, हजारीबाग, धनबाद और पश्चिम बंगाल, (कोलकाता) के 32 ठिकानों पर एक साथ छापामारी की। मंत्री रामेश्वर उरांव के रांची बरियातू स्थित आवास, पलामू में छापेमारी में इडी टीम ने नकद 30 लाख रुपये, दस्तावेज समेत कई कागजात बरामद किये। इसके अलावा विनय सिंह के आवास से करोड़ों की ज्वेलरी बरामद हुई है। वहीं इस मामले में योगेंद्र तिवारी और अमरेंद्र तिवारी से ईडी की टीम शनिवार को पूछताछ करेगी। इडी की टीम ने इन कारोबारियों के यहां से महत्वपूर्ण दस्तावेज, लैपटॉप, पेन ड्राइव समेत कई आपत्तिजनक दस्तावेज बरामद किया है। रोहित उरांव से इडी ने पूछताछ की है। जल्द ही इन लोगों को झारखंड में हुए शराब घोटाले के मामले में इडी समन जारी करेगी। छापेमारी से पूर्व झारखंड पुलिस की ओर से फोर्स की व्यवस्था की गयी थी।

(शेष पेज 11 पर)

रोहित का शराब कारोबार में बड़ा निवेश

मंत्री रामेश्वर उरांव के पुत्र रोहित उरांव का राज्य के शराब कारोबार में बड़ा निवेश बताया जा रहा है। इडी सूत्रों की मानें तो उसने योगेंद्र तिवारी के माध्यम से इस व्यवसाय में बड़ी रकम का निवेश किया है। रोहित और योगेंद्र शराब कारोबार में एक दूसरे के पार्टनर हैं। इडी ने शराब घोटाले में योगेंद्र तिवारी व प्रेम प्रकाश तथा अन्य की भूमिका की प्रारंभिक जांच के बाद इस घोटाले की जांच में जुटी है। 21 मार्च को आयकर विभाग की छापेमारी में यह खुलासा हो गया था कि शराब कारोबारी योगेंद्र ने करीब 15 करोड़ से अधिक की अघोषित संपत्ति अर्जित की है।

शराब कारोबारी योगेंद्र व सहयोगी के ठिकाने पर भी छापा

झारखंड के बड़े शराब कारोबारी योगेंद्र तिवारी और उनके सहयोगियों के ठिकानों पर छापेमारी की गयी। इडी ने श्री तिवारी के रांची स्थित हरमू हाउसिंग के पटेल चौक स्थित आवास, दुमका के गिलानपाड़ा चौक स्थित व्यावसायिक कार्यालय, टाटा शोरूम चौक पर स्थित तनिष्क शोरूम, खिजुरिया में तिवारी ऑटोमोबाइल, कुम्हारपाड़ा में रहने वाले सहयोगी पप्पू शर्मा और अनिल सिंह के घर में भी रेड किया। इडी अधिकारी यहां से बरामद दस्तावेजों कर रहे हैं। वहीं दूसरी ओर इडी रेड पर कांग्रेस ने भाजपा पर निशाना साधा है। विधायक इरफान अंसारी ने इडी को अमित शाह की इलेक्शन एजेंट बताया है।

पथ निर्माण की समीक्षा बैठक में सीएम हेमंत सोरेन ने चेताया

सड़क निर्माण में लापरवाही पर नपेंगे इंजीनियर

- बेहतर और गुणवत्तायुक्त सड़क नेटवर्क बढ़ाने पर सरकार का जोर

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। सीएम हेमंत सोरेन ने कहा है कि बेहतर सड़कों के नेटवर्क से विकास को गति मिलती है। ऐसे में अच्छी सड़कों के निर्माण पर सरकार का विशेष जोर है। अगर सड़कों की गुणवत्ता को लेकर कोई शिकायत मिलती है, तो संबंधित इंजीनियर और ठेकेदार के खिलाफ कड़ी कार्रवाई होगी। मुख्यमंत्री ने बुधवार को पथ निर्माण विभाग की उच्च स्तरीय बैठक में विभिन्न सड़क परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की। अधिकारियों से कहा कि सड़क निर्माण तय समय पर पूरा हो, इसका ख्याल रखें।

(शेष पेज 11 पर)

बैठक में पथ निर्माण विभाग की समीक्षा करते मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन।

वन विभाग से बात कर निदान करें

मुख्यमंत्री को पथ निर्माण विभाग के सचिव ने बताया कि राज्य में फॉरेस्ट क्लीयरेंस से संबंधित 13 सड़क परियोजनाएं हैं। इनमें पांच में वन विभाग द्वारा एनओसी मिल चुका है जबकि 8 सड़क परियोजनाएं फॉरेस्ट क्लीयरेंस की वजह से अटकी हुई हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि वन विभाग और पथ निर्माण विभाग आपस में समन्वय बनाकर इसका निदान निकालें ताकि सड़कों के निर्माण में आ रही अड़चनें दूर हो सके।

JGi | ARKA JAIN University Jharkhand Recognized by UGC
RANKED 5 AMONG TOP 15 EMERGING UNIVERSITY CATEGORY | Outlook ICARE RANKING 2022
ADMISSIONS OPEN 2023 - 24 SESSION
DIRECT ADMISSION FOR STUDENTS WITH CUET SCORE
3 YEAR FULL TIME BA (H) English | Fashion Design Journalism & Mass Comm.
CELEBRATING 12 YEARS OF EXCELLENCE
5000+ Students | 07+ Schools | 30+ Program | 175+ Faculty Members
COMMERCE & MANAGEMENT: BBA, BBA + Business Analytics, B.Com (H), MBA, B.Com (H) / BBA + CIMA, UK, B.Com (H) / BBA + ACCA, UK
ENGINEERING AND IT: B.Tech (Mechanical / Electrical / Computer Science), BCA, MCA, Diploma in Engineering, B.Tech / BCA + Data Analytics, M.Tech (Thermal / Manufacturing / Computer Science / Computer Science and Information Tech.
HUMANITIES: BA - English (H), BA - Fashion Design (H), BA - Journalism & Mass Comm. (H)
HEALTH & ALLIED SCIENCE: B.Optometry, B.Sc Biotechnology
PHARMACY: B.Pharma, D.Pharma
NURSING: B.Sc Nursing, GNM
LAW: BBA LLB (H)
RESEARCH: Ph.D in Comm. & Management, Ph.D in English, Ph.D in Mass Communication, Ph.D in Computer Science, Ph.D in Mechanical Engineering
TOP 5 REASONS TO BE A PART OF ARKA JAIN University
1 Part of the JGI Group, Bengaluru, mentored and Guided by JAIN (Deemed-to-be-University), Bengaluru
2 Interdisciplinary approach to Programme Learning
3 MOUs with Corporates for Intensive Industry Support
4 State-of-the-art Infrastructure Facility
5 Encouragement to Entrepreneurship and Sports
IMPECCABLE PLACEMENT RECORD OF BATCH 2022
230+ COMPANIES VISITED | 450+ JOBS OFFERED | 10LPA HIGHEST SALARY | 4.5 LPA AVERAGE SALARY
500+ COMPANIES HIRED OUR GRADUATES TILL DATE
PHASE IV - AJU CET NOTIFICATION 2023
STUDENTS WITH CUET SCORE ARE EXEMPTED FROM AJU CET
THE UNIVERSITY INVITES APPLICATION FOR PHASE IV OF COMMON ENTRANCE TEST & COUNSELING (WHEREVER APPLICABLE) FOR VACANT SEATS AFTER 3RD ROUND OF COUNSELING FOR THE FOLLOWING COURSES
• BBA • MBA • BCA • B. TECH • M. TECH
• DIPLOMA IN ENGG. • B. TECH (LATERAL) • DIPLOMA IN ENGG. (LATERAL)
LAST DATE OF SUBMISSION OF APPLICATION FOR 4TH PHASE OF COUNSELING - 3RD SEPTEMBER, 2023
DATE OF 4TH PHASE OF ONLINE AJU CET BETWEEN - 11TH AUGUST TO 10TH SEPTEMBER 2023
*FOR MORE DETAILS, PLEASE REFER TO ADMISSION CALENDAR IN THE WEBSITE UNDER ADMISSION SECTION.
Students can avail application form from the Admission Office / University Campus or download from our website www.arkajainuniversity.ac.in
Note: Student having valid score card of CAT | XAT | MAT | CMAT (For MBA), JEE Main Examination (For B. Tech), PECE (For Polytechnic), Gate Exam (M. Tech), Common University Entrance Test (CUET) are exempted from AJU CET
1800-1200-200 | 0657-2220285 | 8406800562 | Apply Online: www.arkajainuniversity.ac.in
Chaibasa/CKP: 8406800563 | Ghatshila: 9955062615 | Hazaribagh: 7903233264 | Bokaro: 6201696510
Admission Office: D-28, Danish Arcade, Opposite Asian Inn Hotel, Dhatkidih, Jamshedpur - 831001
Campus Address: Opposite Kerala Public School, Mohanpur, Gamharia, District Seraikela Kharsawan, Jharkhand - 832108

लैंगिक रूढ़िवादिता से लड़ने को लड़कियों की एकजुटता महत्वपूर्ण : किरण पासी

स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग ने शुरू किया 'रक्षा बंधन, सुरक्षा का बंधन' अभियान

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग ने बुधवार को राज्य स्तरीय साप्ताहिक अभियान 'रक्षाबंधन, सुरक्षा का बंधन' शुरू किया। यूनिसेफ और सिनी के साथ यह अभियान 23 से 30 अगस्त तक राज्य के सभी कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों (केजीबीवी) और झारखंड बालिका आवासीय विद्यालयों (जेबीएवी) में चलाया जाएगा।

रक्षा बंधन का शाब्दिक अर्थ सुरक्षा, संरक्षण और प्रेम का धागा है। लड़कियों के हितों की रक्षा करने और उनकी भलाई को सुनिश्चित करने के समाज के मजबूत इरादे को व्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। रक्षा बंधन, सुरक्षा का बंधन अभियान का उद्देश्य रक्षाबंधन त्योहार जैसे महत्वपूर्ण अवसर का उपयोग लैंगिक भेदभाव, बाल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या, यौन शोषण, मानव तस्करी और घरेलू हिंसा जैसे मुद्दों को लेकर लड़कियों और शिक्षकों के बीच जागरूकता पैदा करना है। यह अभियान लड़कियों के खिलाफ लैंगिक भेदभाव के खिलाफ समर्थन पैदा करने तथा उनके आत्म-सम्मान एवं आत्मविश्वास को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। अभियान के दौरान पूरे सप्ताह नियोजित गतिविधियों के माध्यम से केजीबीवी और जेबीएवी में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इन स्कूलों में वार्डन द्वारा प्रतिनियुक्त शिक्षक इन कार्यक्रमों के संचालन में योगदान देंगे। इस दौरान विभिन्न गतिविधियों जैसे कि केजीबीवी और जेबीएवी की लड़कियों द्वारा एक-दूसरे को राखी बांधना, लैंगिक मुद्दों पर नारा लेखन, पेंटिंग प्रतियोगिताएं, यूनिसेफ की मीना कहानियों की स्क्रीनिंग, सिनी के द्वारा निर्मित फिल्म स्पंदन का प्रदर्शन तथा महिलाओं एवं किशोरियों के मुद्दों पर लड़कियों द्वारा लघु नाटिका का प्रदर्शन भी किया जाएगा। अभियान के दौरान लड़कियां एक-दूसरे का सहयोग एवं समर्थन करने और अपनी शिक्षा को जारी रखने एवं चुनौतियों और नकारात्मक लैंगिक मानदंडों आदि से निपटने के लिए शपथ भी लेंगी।

इस अवसर पर जेएससीईआरटी एवं जेईपीसी की निदेशक किरण कुमारी पासी ने कहा कि हम रक्षाबंधन के इस अवसर का उपयोग लैंगिक भेदभाव और लड़कियों के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में समाज में जागरुकता पैदा करने के लिए कर रहे हैं। हम यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि केजीबीवी और जेबीएवी की सभी लड़कियां इस अभियान में भाग लें। लैंगिक रूढ़िवादिता से लड़ने के लिए लड़कियों की एकजुटता महत्वपूर्ण है। इस अभियान और इसकी गतिविधियों के माध्यम से लड़कियों को लैंगिक भेदभाव की बुराइयों के बारे में जो संदेश मिलेगा, उसे वे अपने परिवार और समुदाय तक पहुंचाएंगी। उन्होंने कहा कि मुझे यकीन है कि यह अभियान जेसीईआरटी, सिनी और यूनिसेफ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। लैंगिक भेदभाव से संबंधित समस्याओं का समाधान करने में योगदान देगा। समाज में इसके बारे में जागरूकता बढ़ाने में भी मदद करेगा। इस अभियान के माध्यम से लड़कियां एकजुट होंगी और एक-दूसरे के लिए समर्थन और ताकत का स्तंभ बनेंगी। मुझे पूरा विश्वास है कि इस अभियान के माध्यम से हमारा समाज महिलाओं के मुद्दों के प्रति अधिक बाल हितैषी और संवेदनशील बनेगा।

वहीं, यूनिसेफ झारखंड की प्रमुख डॉ कनीनिका मित्र ने कहा कि रक्षा बंधन जैसे पारंपरिक त्योहारों का समाज पर गहरा प्रभाव होता है। इनके माध्यम से लैंगिक भेदभाव जैसे मुद्दे के प्रति समाज में जागरूकता पैदा किया जा सकता है। यह त्यौहार प्राचीन काल से ही बहनों और भाइयों के बीच प्रेम और भाईयों के द्वारा बहनों की सुरक्षा और उसकी भलाई के प्रति संकल्पित होने के रूप में मनाया और दशार्या जाता रहा है। इस अभियान के माध्यम से हम भाइयों द्वारा बहनों के प्रति सुरक्षात्मक प्रेम की अवधारणा को विस्तार देने के लिए रक्षा बंधन से पहले के सप्ताह (23-30 अगस्त) को चिह्नित कर रहे हैं, जिसमें केजीबीवी की लड़कियों की सहभागिता को भी शामिल किया गया है। इसके पीछे की सोच यह है कि लड़कियां दोस्त, बहन और सहयोगी के रूप में एक-दूसरे की ताकत बन सकती हैं और शिक्षा को जारी रखने, आत्मसम्मान को बनाए रखने, छेड़छाड़ और उत्पीड़न से निपटने तथा बाल विवाह के खिलाफ सामूहिक आवाज उठाने में एक-दूसरे का समर्थन कर सकती हैं। रक्षा बंधन के माध्यम से प्रदर्शित की गई प्रेम और सहयोग की भावना का उपयोग समाज में लड़कियों के प्रति सुरक्षात्मक वातावरण का निर्माण करने के लिए किया जा सकता है, ताकि सभी लड़कियां सुरक्षित महसूस करे और उन्हें समाज में समान अधिकार और अवसर मिले।

डीएसपीएमयू के विद्यार्थियों का 15 दिनी इंटर्नशिप संपन्न

रांची। डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय (डीएसपीएमयू) के 20 छात्र-छात्राओं ने 15 दिवसीय इंटर्नशिप प्रशिक्षण पूरा किया। इसका समापन 23 अगस्त को हुआ। विद्यार्थी बिरसा कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू) के कृषि संकाय के अधीन मृदा विज्ञान विभाग में इंटर्नशिप कर रहे थे। मौके पर कुलपति डॉ ओएन सिंह ने प्रत्येक छात्र-छात्राओं से इंटर्नशिप के अनुभवों को जाना। उन्हें प्रशिक्षण प्रमाण- पत्र प्रदान किया। उन्होंने औद्योगिक प्रदूषण और फसल उत्पादन में इसके प्रभाव, ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता के नुकसान और पर्यावरण पर इसके प्रभाव, जलवायु के प्रतिकूल प्रभाव को कम करने के लिए हाल की प्रथाओं आदि की जानकारियों को साझा किया। राज्य के अन्य विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राओं के लाभ के लिए भी इस प्रकार का इंटर्नशिप प्रशिक्षण जारी रखने पर जोर दिया। मौके पर डीन एग्रीकल्चर डॉ डीके शाही ने मिट्टी के रासायनिक विश्लेषण, भौतिक और जैविक मापदंडों के बारे में बताया। बेहतर मृदा स्वास्थ्य एवं मृदा परीक्षण के संबंध में किसी भी प्रश्न के लिए भविष्य में संकाय सदस्यों से संपर्क बनाये रखने की बात कही। पाठ्यक्रम समन्वयक डॉ शशि भूषण कुमार ने उच्च फसल उत्पादन के लिए मिप्टी के पर्यावरण में सुधार की रणनीतियां विषयक इंटर्नशिप के विषयों की जानकारी दी।

खबर एक नजर में

बुढ़मू के गुतरु ग्राम में व्यंजनों को बनाने एवं प्रदर्शित करने की प्रतियोगिता आयोजित

रांची। कृषि विज्ञान केंद्र, रांची ने बुढ़मू प्रखंड के गुतरु ग्राम में बुधवार को पोषक अनाज आधारित विभिन्न व्यंजनों को बनाने एवं प्रदर्शित करने की प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस प्रतियोगिता में कुल 47 महिला किसानों ने भाग लिया। उन्होंने मडुआ से बने कुल 53 व्यंजनों का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में सत्यनारायण मुंडा, प्रखंड प्रमुख, बुढ़मू मुख्य अतिथि एवं उप प्रमुख, बुढ़मू विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम में अजीत कुमार सिंह, वरीय वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केंद्र, रांची ने पोषक अनाज के प्रसार के लिए केवीके अंतर्गत किये जा रहे विभिन्न कार्यों पर प्रकाश डाला। डॉ विशाखा सिंह, वैज्ञानिक, गृह वैज्ञानिक, केवीके, रांची ने कार्यक्रम के उद्देश्य एवं पोषक अनाज के महत्व के बारे में बताया गया। मुख्य अतिथि ने झारखंड में मडुआ की खेती एवं महत्व के बारे में चर्चा करते हुए बताया कि पोषक अनाज के सेवन के कारण ही ग्रामीण लोगों में रोगों से लड़ने की क्षमता का अच्छा विकास हुआ एवं कोरोना काल में भी ग्रामीण लोगों में अधिक समस्या देखने को नहीं मिली। कार्यक्रम में अतिथि के रूप में उपस्थित राज्य विपणन प्रबंधक, इफको ने रांची जिले में पोषक अनाजों की खेती एवं उसमें पोषक तत्वों के प्रबंधन पर चर्चा की। कार्यक्रम का संचालन केवीके के वैज्ञानिक, पौध सुरक्षा डॉ राजेश कुमार ने किया।

शैल्बी डिवाइन में गर्भाशय की जटिल सर्जरी कर मां-बच्चे की बचायी गयी जान

रांची। शैल्बी डिवाइन सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल में प्लेसेंटा पर्क्रिटा से होने वाली खतरे का जटिल सिजेरियन ऑपरेशन करके बच्चा और जच्चा दोनो को बचाया गया। शैल्बी डिवाइन अस्पताल के सीनियर लैप्रोस्कोपिक, स्त्री एवं प्रसूति रोग एवं हाई रिस्क प्रेग्नेंसी विशेषज्ञ डॉ अपेक्षा साहू ने बताया कि उनके पास डाल्टनगंज कि ऐसी मरीज आयी, जिसको 19 सप्ताह की प्रेग्नेंसी थी। उन्होंने बताया कि मरीज को एक रेयर ओब्स्ट्रेटिक कंडीशंन था, जिसमें पता चला कि गर्भ में पल रहे शिशु के गर्भनाल से जुड़ा प्लासेंटा बच्चेदानी को पार करते हुए पेशाब कि थैली को छेदने वाला है। इस कारण महिला के गर्भाशय से लगातार खून रिसने लगा था। खतरे को देखते हुए सभी जगह इलाज से इनकार किया जा चुका था। उसे किसी तरह 24 सप्ताह तक मेडिकल ट्रीटमेंट दिया गया, लेकिन अत्यधिक रक्तस्राव होने से बच्चा और जच्चा दोनों की जान का खतरा होने लगा तो तुरंत हाईरिस्क सर्जरी का प्लान किया गया। सीजेरियन किया गया और साथ में उनका बच्चेदानी को भी निकाला गया। बच्चेदानी को सप्लाई करने वाले खून कि नली को बांध दिया गया। बच्चा 640 ग्राम का है और नियोनेटल आइसीयू में है। अभी दोनों स्वस्थ हैं। ऑपरेशन के छठे दिन मां को छुट्टी दे दी गयी थी। यह जानकारी साझा करते हुए अस्पताल के मेडिकल और मैनेजिंग डाइरेक्टर डॉ देवनीस खेस ने बताया कि शैल्बी डिवाइन सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल रांची में अत्याधुनिक हाईरिस्क सर्जरी, आइसीयू और ज्वाइंट रिप्लेसमेंट और बोनमैरो व खून से संबंधित बीमारियों का विश्वस्तरीय चिकित्सा सुविधा मौजूद है।

आरडीसीआइएस रांची ने बर्नपुर इस्पात संयंत्र के साथ अनूठी वायरलेस प्रणाली विकसित की

रांची। सेल-आरडीसीआइएस, रांची और इसको इस्पात प्लांट (आइएसपी), बर्नपुर ने संयुक्त रूप से एक अनूठी वायरलेस प्रणाली का विकास किया है। इसका उद्घाटन मनीष राज गुप्ता, इडी(वर्क्स), आइएसपी एवं संदीप कुमार कर, इडी, आरडीसीआइएस ने किया। मौके पर आरडीसीआइएस के मुख्य महाप्रबंधकगण संजय परिदा एवं एस गोस्वामी तथा बर्नपुर व आरडीसीआइएस के वरीय अधिकारी भी मौजूद थे।

कल रिलीज होगी झारखंड के कलाकारों की फिल्म 'डॉट कॉम शादी के शगूफे'

रांची। झारखंड के थिएटर कलाकारों ने एक बड़े ऑनलाइन प्लेटफार्म पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर एक बार फिर से अपना परचम लहराया है। उनकी लघु फिल्म 'डॉट कॉम शादी के शगूफे' की रिलीज डेट तय हो गयी है। फिल्म 25 अगस्त, 2023 को रिलीज हो रही है। रांची स्थित थिएटर टू सिनेमा की यह फिल्म है। कथानक और निर्देशन सनातन ने किया है। स्क्रिप्ट झारखंड के अभिनेता मनोज सहाय ने लिखा है। फिल्म के लगभग सभी कलाकार रांची के युवा रंगमंच के हैं। फिल्म की सिनेमेटोग्राफी और एडिटिंग भी रांची के ही राजू सोनी एवं सुमित (गोलू) ने किया है।

इनर व्हील क्लब डिस्ट्रिक्ट-325 की 6 प्रोजेक्ट की लांचिंग

रांची। इनर व्हील क्लब डिस्ट्रिक्ट-325 की डिस्ट्रिक्ट चेयरमैन डॉ रागिनी रानी ने बुधवार को इनर व्हील क्लब रांची पलाश तथा इनर व्हील क्लब रांची साउथ का संयुक्त रूप से निरीक्षण किया। यह कार्यक्रम होटल बिरसा विहार रांची में हुआ। इस अवसर पर दोनों क्लब की ओर से संयुक्त रूप से 6 प्रोजेक्ट की लांचिंग की गयी। इस मौके पर क्लब की कार्यकारिणी समिति ने डॉ रागिनी रानी को अपने कार्यों का ब्योरा दिया। मंच का संचालन इनर व्हील क्लब रांची पलाश की पूर्व अध्यक्षा श्वेता चौधरी तथा रांची साउथ की पूर्व अध्यक्ष संगीता शरण ने किया। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्वलन से हुई। क्लब सचिव सीमा झा ने अपने क्लब के कार्यों की रिपोर्ट पढ़ी। सरिता मिश्रा ने डॉ रागिनी रानी का बायोडाटा पढ़ा। डॉ रागिनी रानी ने इनर व्हील के उद्देश्य के बारे में विस्तार से बताया तथा क्लब की सदस्याओं का उत्साह बढ़ाया। यह जानकारी सुष्मा सिन्हा ने दी।

गोस्सनर कॉलेज में मनी पद्मश्री रामदयाल मुंडा की जयंती

रांची। गोस्सनर कॉलेज रांची के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग की ओर से बुधवार को पद्मश्री रामदयाल मुंडा की 84वीं जयंती मनाई गयी। सर्वप्रथम डॉ रामदयाल मुंडा की तस्वीर पर डॉ ज्योति टोप्पो संस्कृत विभाग अध्यक्ष के द्वारा माल्यार्पण किया गया। उपस्थित सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थी प्रतिनिधि के द्वारा पुष्प अर्पित कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया। मौके पर बतौर मुख्य अतिथि डॉ ज्योति टोप्पो ने कहा डॉ मुंडा जी बहुत गरीबी में रहकर अपनी पढ़ाई जारी रखे। जब हॉस्टल में रहते थे उस समय भोजन नहीं मिलता था तब वे बांसुरी बजाया करते थे । उनके जीवन से सभी विद्यार्थियों को सीख लेने की जरूरत है। डॉ मीना तिर्की ने कहा डॉ रामदयाल मुंडा जी महान मानव शास्त्री थे , जिन्होंने अपने कार्य के द्वारा हमारे बीच में अमिट छाप पड़ गए हैं। मौके पर हेमंत कुमार टोप्पो ने डॉ मुंडा जी के जीवनी पर प्रकाश डाला । डॉ कोरनेलियुस मिंज ने अपने साथ घटी घटनाओं का जिक्र किया। मौके पर डॉक्टर हाराधन कोइरी और डॉ प्रशांत गौरव ने भी अपने विचार व्यक्त किए । मंच संचालन प्रोफेसर मीना सुरीन तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रोफेसर फ्रांसिस मुर्मू मैं किया।

आइएलसीसी के मेडले सांग प्रतियोगिता में ब्रिजफोर्ड के बच्चे ने किया टॉप

रांची। इंटरनेशनल लाइब्रेरी एंड कल्चरल सेंटर ने बुधवार को एक इंटरस्कूल मेडले सॉन्ग (मैश-अप) प्रतियोगिता आयोजित की। यह कक्षा 9-12 के छात्रों के लिए खुला था। उन्हें हिंदी फिल्मी गीतों का मूल मिश्रण प्रस्तुत करना था। प्रत्येक स्कूल को 1-3 प्रतिभागियों और संगतकारों की एक टीम की अनुमति दी गई थी। उन्हें प्रस्तुति, गीत चयन, आवाज की गुणवत्ता, गीत और पिच, लय और सद्भाव, आत्मविश्वास आदि पर आंका गया। निर्णायक के रूप में रूपेश कुमार सिंह, अनुराग मोदी और अंचला सिंह थीं। कार्यक्रम का संचालन आईएलसीसी की सांस्कृतिक सचिव रेखा मिश्रा एवं समिति सदस्य नीति मेहंदीरत्ता ने किया। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले स्कूलों में डीएवी बरियातू, डीपीएस, ब्रिजफोर्ड तुपुदाना, सचिदानंद ज्ञान भारती मॉडल स्कूल, सुरेंद्रनाथ सेंटेनरी, डीएवी कपिलदेव और शारदा ग्लोबल शामिल थे।

इस प्रकार रहा परिणाम: **पहला** : ब्रिजफोर्ड तुपुदाना: विशाखा राणा, अभिनव तमांग, इशान नैय्यर। दूसरा : सुरेंद्रनाथ सेंटेनरी स्कूल: विश्वजीत बनर्जी, सुरजीत मुखर्जी, संगतकार सौमिली सखेल, अनुराग आनंद, आदित्य बोस के साथ। तीसरा : दिल्ली पब्लिक स्कूल: उदित जैन, साकिब अहमद, साहिल सानी।

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने किया चार्टर्ड अकाउंटेंट मीट का आयोजन

खबर मन्त्र संवाददाता

उद्घाटन करते सेंट्रल बैंक के महाप्रबंधक वाई अनिल कुमार।

रांची। सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, रांची ने स्थानीय होटल में चार्टर्ड अकाउंटेंट मीट का आयोजन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ सेंट्रल बैंक के महाप्रबंधक वाई अनिल कुमार ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर चार्टर्ड अकाउंटेंट एवं सेंट्रल बैंक की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए श्री कुमार ने बैंक की विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया।

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के क्षेत्रीय प्रमुख सुनील कुमार ने कहा कि सीए एवं बैंक एक दूसरे के पूरक हैं। इस तरह के आयोजन से ना केवल हमारे बीच आपसी समझ बढ़ेगी, बल्कि इससे हमारे संबंध और भी प्रगाढ़ होंगे।

इस अवसर पर प्रेसिडेंट आइसीएआइ, रांची चैप्टर पंकज मक्कर ने इस तरह के आयोजन के लिए बैंक के प्रति आभार प्रकट किया तथा बैंक के साथ पूर्ण सहयोग का वादा किया। वाइस प्रेसिडेंट आइसीएआइ, रांची चैप्टर सुश्री श्रद्धा वागला, प्रभात अग्रबाल, सदस्य आइसीएआइ रांची चैप्टर, आलोक कुमार, मुख्य प्रबंधक ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में बैंक की विभिन्न योजनाओं के संबंध में जानकारी देते हुए बैंक के अधिकारी मनीष कुमार एवं अमित कुमार ने पूछे गये प्रश्नों का समाधान किया। कार्यक्रम में पीयूष मोदी, श्वेता भगत, मनीष कुमार साह, राजीव सिंह, नीतू लकड़ा, प्रशांत प्रसून, संतोष कुमार, सौरभ कुमार, सोनल कुमार सिन्हा आदि उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन प्रशांत देशपांडे उप क्षेत्रीय प्रमुख सेंट्रल बैंक आफ इंडिया ने किया।

इमाम हुसैन की शहादत हक एवं सच्चाई की राह पर चलने का पैगाम है : एसएसपी

खबर मन्त्र संवाददाता

एसएसपी किशोर कौशल से मिलते सेंट्रल मुहर्रम कमिटी के सदस्य।

रांची। मुहर्रम एवं तीजा के समापन के बाद सेंट्रल मुहर्रम कमिटी का एक प्रतिनिधिमंडल बुधवार को एसएसपी किशोर कौशल से मिला। प्रतिनिधिमंडल को संबोधित करते हुए एसएसपी किशोर कौशल ने कहा कि भारत एक ऐसा देश है जहां सभी धर्मों के लोग सभी त्योहारों को आपस में मिलकर मनाते चले आ रहे हैं। यही हमारी बहुरंगी सांस्कृति व तहजीब का हिस्सा है साथ ही साथ साम्प्रदायिक सौहार्द, आपसी एकता एवं भाईचारा का संदेश है।

उन्होंने आगे कहा कि सभी धर्मों के त्योहार में शिक्षाप्रद बातें होती हैं उसी प्रकार मुहर्रम भी एक एसा त्योहार है जो कर्बला में इमाम हुसैन की शहादत लोगों को हक एवं सच्चाई की राह पर चलने का पैगाम देता है जिसपर हम सभी को अमल करने की जरूरत है। इस मौके पर सिटी एसपी सुभांशु जैन एवं ट्राफिक एसपी हारिश बिन जमा भी मौजूद थे।

प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व कमिटी के अध्यक्ष जावेद गद्दी, महासचिव अकीलुर्रहमान एवं प्रवक्ता मो. इसलाम ने किया। इस मौके पर श्री महावीर मंडल रांची के जयसिंह यादव,सेन्ट्रल मुहर्रम कमिटी के अध्यक्ष जावेद गद्दी, महासचिव अकीलुर्रहमान, प्रवक्ता मो. इसलाम, इमामबख्श अखाड़ा के आफताब आलम, धवताल अखाड़ा के जमील गद्दी, फिरोज अंसारी, मो. इश्तेयाक, मो. परवेज, मो. सरफराज, मो. शहनवाज एवं राजू भाई शामिल उपस्थित थे।

सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में मनी तुलसीदास की जयंती

कार्यक्रम में भाग लेते बच्चे।

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, धुर्वा, रांची में बुधवार को तुलसीदास की जयंती मनायी गयी। इस उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में भैया-बहनों द्वारा श्री राम दरबार की झांकी प्रस्तुत की गयी। इस अवसर पर भैया-बहनों ने तुलसीदास के जीवन के संबंध में विस्तृत विचार प्रस्तुत किये। भैया-बहनों ने रामायण की चौपाइयां प्रस्तुत कीं। आचार्य प्रदीप कुमार वर्णवाल, श्रीमती अमिता सिंह एवं श्रीमती इंदू सिंह ने अपने विचार प्रस्तुत किये। इस अवसर पर विद्यालय की प्राचार्य डॉ संध्या सिंह, उप प्राचार्य ललन कुमार, राकेश पांडेय, श्रीमती शुभश्री तिवारी, कुमरेंद्र झा एवं समस्त आचार्य, दीदी उपस्थित रहे।

सलोनी मिस फ्रेशर और उत्सव मिस्टर फ्रेशर बने

खबर मन्त्र ब्यूरो

मोमेंटो दे कर सम्मानित करतीं मुख्य अतिथि।

रांची। गोस्सनर कॉलेज के वनस्पति शास्त्र विभाग की ओर से बुधवार को फ्रेशर्स कम फेयरवेल कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें सेमेस्टर 6 के बच्चों को विदाई दी गई और सेमेस्टर-2 के बच्चों का स्वागत किया गया। इस कार्यक्रम में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए ।

मौके पर मिस और मिस्टर प्रेशर भी चुने गए । सलोनी टोप्पो मिस फ्रेशर और उत्सव कुमार मिस्टर फ्रेशर बने । हेमा कुमारी को मिस फेयरवेल और सूर्यकांत नाग को मिस्टर फेयरवेल चुना गया । सभी को मोमेंटो देकर सम्मानित भी किया गया। इस अवसर पर वनस्पति शास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ मृदुला खेस्स ने बतौर मुख्य अतिथि बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि जीवन में शिक्षा का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि शिक्षा ही आपके जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है। आपके जीवन को सफल बनाता है। इसीलिए संयमित और आत्म नियंत्रित रहकर शिक्षा को ग्रहण कर और ऊंचाइयों को प्राप्त करें। मौके पर विभाग के प्रोफेसर शशि, डॉक्टर चित्रा,प्रिया मीनाक्षी भी मौजूद थी । कार्यक्रम का संचालन लेनी और अक्षा ने किया।

आयोजन को सफल बनाने में क्लोदिया, विश्वजीत, स्नेहा,मेरी, मोहम्मद अजहर का महत्वपूर्ण योगदान रहा।इस अवसर पर वनस्पति शास्त्र विभाग के सैकड़ों विद्यार्थी मौजूद थे।

संजय गांधी मेमोरियल कॉलेज के असिस्टेंट प्रोफेसर महेश भगत का निधन

रांची। संजय गांधी मेमोरियल कांलेज पंडरा के असिस्टेंट प्रोफेसर महेश भगत का 50 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। ब्रेन हेमरेज के बाद उन्हें रिम्स में भर्ती कराया गया था। एक सप्ताह तक रिम्स में इलाज के बाद बुधवार सुबह 8 बजे उनका निधन हो गया। खबर मिलते ही आदिवासी समाज में शोक की लहर दौड़ गयी। वे अपने पीछे पत्नी और बच्चों को छोड़ गए हैं। वे कुडुख लिटरेसी सोसायटी ऑफ इंडिया के सचिव के पद पर रहकर कुडुख भाषा के विकास के लिए काम कर रहे थे। वे हमेशा करम और सरहुल पर्व में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे तथा आदिवासी समाज के प्रखर नेता भी थे। उन्होंने कुडुख भाषा के विकास को लेकर कई पुस्तकें लिखी हैं।

सकारात्मक ऊर्जा के साथ काम और बेहतर परिणाम हमारी जिम्मेदारी : सौम्या

खबर मन्त्र ब्यूरो

प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेते संकुल साधन सेवी।

रांची। झारखंड शिक्षा परियोजना (जेइपीसी) की ओर से बुधवार को मुख्यमंत्री उत्कृष्ट विद्यालय अमर शहीद लाल विश्वनाथ शाहदेव जिला स्कूल के सभागार में विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षकों के रूप में जिला के सभी सीआरपी का दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम बुधवार को संपन्न हो गया।

मौके पर पीरामल फाउंडेशन की जिला हेड सौम्या ने कहा कि कमियों के बीच चुनौतियों को सकारात्मक ऊर्जा के साथ लेकर काम करना और बेहतर परिणाम देना हमारी जिम्मेदारी है। उन्होंने अलग-अलग विषयों पर अपना विचार रखा और प्रशिक्षण के टिप्स दिए। वहीं पिरामल फाउंडेशन की सायली एवं कावेरी नाग ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया। इस मौके पर मास्टर ट्रेनर सीता राम झा तथा उमेश कुमार शर्मा ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के अंतिम दिन विभिन्न विषय पर जानकारी दी।

बच्चों के अधिगम स्तर में बढ़ोतरी में भूमिका एवं अणुश्रवण पर हुई चर्चा

इससे पूर्व दो दिवसीय प्रशिक्षण का समापन अभियान गीत हम होंगे कामयाब.... के साथ किया गया। प्रशिक्षण के अंतिम दिन माता-पिता एवं अभिभावकों का बच्चों के अधिगम स्तर में बढ़ोतरी में भूमिका एवं अणुश्रवण विषय पर चर्चा की गई। इस मौके पर मास्टर ट्रेनर सीता राम झा एवं उमेश कुमार शर्मा ने बच्चों के लालन-पालन से संबंधित चुनौतियों पर प्रकाश डाला तथा इसी विषय पर समझ विकसित करने पर बल दिया। प्रशिक्षण के मौके पर प्रतिभागी संकुल साधन सेवी सुनील कुमार गुप्ता, अजीत कुमार सिंह,मंटु कुमार साहु, विजय रंजन पाठक, मनीष कुमार, जनक मुंडा, जयंत लकड़ा, शिवा मुंडा, ललित तिर्की, कुलदीप सुरीन, आसीत टोप्पनो, अभय नायक, माला मिश्रा, सुषमा रानी, रागिनी सिन्हा, उषा कुमारी, कल्याणी कुमारी, सुमन मिश्रा, पम्मी कुमारी, रुबी देव, ललित सेन, विकास कुमार गुप्ता,अरविंद कुमार गुप्ता, राजेंद्र नाथ देवघरिया, कुमार रोहित, कमलाकांत मेहता, रविंद्र कुमार ठाकुर, जगन्नाथ मुखर्जी, कुमार सिकंदर, विकास चक्रवर्ती, अब्दुल नासिर, मो फिरोज आलम, साजिद अजीम, सज्जाद अहमद,मो नौशाद, श्याम कुमार, मो जुबैर, राधाकांत पांडेय, श्रीकांत प्रसाद, सतीश कुमार सिंह, झरिया महतो, मृत्युंजय महतो सहित सैकड़ों प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण में हिस्सा लिया।

सीआरपी के कंधों पर एसएमएसी के उन्नयन की बड़ी जिम्मेदारी टिकी : प्रभा सहाय

समापन सत्र के दौरान रांची जिला की सहायक कार्यक्रम पदाधिकारी प्रभा सहाय ने जिले के सभी प्रतिभागी संकुल साधन सेवियों को प्रशिक्षण से संबंधित आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी सीआरपी के कंधों पर एसएमएसी के उन्नयन की बड़ी जिम्मेवारी टिकी है। उन्होंने कहा कि सीआरपी के माध्यम से विद्यालयों की जमीनी हकीकत का पता चलता है। इससे विद्यालयों में व्याप्त समस्याओं के समाधान के लिए योजना बनाने में मदद मिलती है।

चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग से इतराया झारखंड

झारखंड की दो संस्थाओं ने इसरो के लिए डिजाइन किया था लांचिंग पैड

मेकॉन और एचइसी में बंटी मिठाई, शहर में भी जश्न का मौहाल

सुधीर

रांची। राज्य की दो संस्थाओं मेकॉन और एचईसी ने मिलकर इसरो के लिए लांचिंग पैड डिजाइन किया था। झारखंड के इसी योगदान के कारण चंद्रयान-3 चांद के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्व उतरा। भारत का मिशन चंद्रयान-3 की सफलता से संपूर्ण झारखंड इतराने लगा है। चंद्रयान-3 के कई महत्वपूर्ण उपकरणों का निर्माण एचईसी में किया गया है। वहीं, मेकॉन के ही 50 इंजीनियर्स की टीम ने लांच पैड को डिजाइन किया था, जहां से इसरो के छोटे-बड़े रॉकेट लांच किये जाते हैं। इसरो के लिए सबसे बड़े लांचिंग पैड जीएसएलवी को मेकॉन ने तैयार किया है। इसके उपकरण रांची और टाटा में बने हैं। मेकॉन ने इसके कॉन्सेप्ट से लेकर कमिशनिंग तक का काम किया। बताते चलें कि 350 करोड़ रुपये के बजट वाले जीएसएलवी का अनावरण देश के जाने-माने वैज्ञानिक और पूर्व राष्ट्रपति डॉ एपीजे अब्दुल कलाम ने किया था।

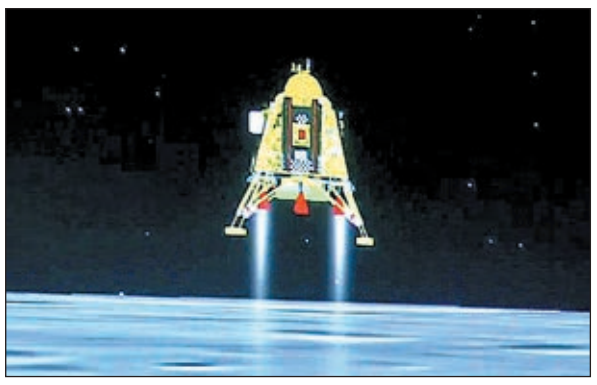

1999 में मेकॉन को मिला था लांचिंग पैड बनाने का कांट्रैक्ट : मेकॉन के इंजीनियर और इस प्रोजेक्ट का हिस्सा रहे निशिथ कुमार ने बताया कि वर्ष 1999 में मेकॉन को इसरो के लिए रॉकेट प्रक्षेपण के लिए लांचिंग पैड बनाने का कांट्रैक्ट मिला था। यह पहला मौका था, जब भारत में रॉकेट को लांच करने के लिए लांचिंग पैड का निर्माण किया गया। इसके पहले भारत के पास रॉकेट के प्रक्षेपण के लिए लांचिंग पैड बनाने का कोई अनुभव नहीं था। हमारे पास पुराना कोई रेफरेंस भी नहीं था। इसरो ने अपनी जरूरतें बतायीं और मेकॉन के एसआर मजुमदार के नेतृत्व में मेकॉन के 50 इंजीनियर्स की कोर टीम ने काम शुरू किया और इस प्रोजेक्ट को सफल बनाया।

टाटा को भी मेकॉन ने दिया था उपकरण बनाने का काम : श्री कुमार ने बताया कि मेकॉन के पास मेकेनिकल, गैस्ट्रल, सिविल और टेक्निकल समेत कई काम थे। देश की प्रतिष्ठित कंपनी टाटा ने जमशेदपुर की इकाई में कुछ उपकरणों का निर्माण किया था। एचईसी ने भी कई उपकरणों का निर्माण किया और असेंबलिंग का भी काम किया। चेन्नई की कंपनी केटीवी, मुंबई की कंपनी गोदरेज के अलावा भी कई कंपनियों ने लांचिंग पैड के लिए उपकरण बनाये थे। कुछ इक्विपमेंट्स रूस और यूरोप से भी मंगवाये गये थे।

एचइसी ने कई महत्वपूर्ण उपकरण बनाकर दिये : हेवी इंजीनियरिंग कॉर्पोरेशन (एचइसी), जिसे मदर ऑफ ऑल इंडस्ट्रीज कहा जाता है, ने जीएसएलवी के लिए हॉरिजोंटल स्लाइडिंग डोर, फोल्डिंग कम वर्टिकल रिपोजिशनेबल प्लैटफॉर्म (एफसीवीआरपी), मोबाइल लांचिंग पेडेस्टल और 10 टन का हैमर हेड टावर क्रेन बनाया है। इसरो अपने सभी बड़े रॉकेट का प्रक्षेपण इसी मोबाइल लांचिंग पेडेस्टल से करता है। बताते चलें कि10 टन का हैमर हेड टावर क्रेन रॉकेट के बैलेंस को बनाये रखता है।

मून मिशन का झारखंड के दो लाल बने हिस्सा

रांची। भारत ने चंद्रयान-3 मिनश के जरिए बुधवार को चांद पर फतह हासिल कर लिया। पूरी दुनिया भारत के इस गौरव पर शाबासी दे रही है। भारत की इस सफलता ने आंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में खोज के लिए अवसर बढ़ा दिया है। इस मून मिशन में इसरो की टीम में झारखंड के दो लाल भी शामिल हैं।

सोहन यादव : खूंटी के तोरपा क्षेत्र के तपकरा गांव निवासी वैज्ञानिक सोहन यादव की, जो चंद्रयान-3 के आर्बिटर इंटिग्रेशन और टेस्टिंग टीम में शामिल हैं। सोहन मिशन गगनयान से भी जुड़े रहे हैं। सोहन के पिता घूरा यादव ट्रक ड्राइवर हैं, जबकि मां गृहणी। सोहन तपकरा जैसे छोटे से गांव में पढ़ाई कर वैज्ञानिक बने हैं। उन्होंने तपकरा स्थित शिशु मंदिर में प्राथमिक शिक्षा हासिल की है। पिछले सात वर्षों से वह इसरो से जुड़े हैं। सोहन रांची के डीएवी बरियातू से पढ़ाई की है। ट्रक ड्राइवर शिव शंकर यादव के पुत्र सोहन कुमार यादव डीएवी बरियातू से 12वीं करने के बाद आईआईटी में सफलता हासिल की। इसरो में उन्होंने 2017 में ज्वॉइन किया और लगातार चंद्रयान मिशन टीम के सदस्य बने रहे। चंद्रयान 2 और चंद्रयान 3 दोनों में ही इन्होंने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आयुष झा : चंद्रयान-3 के लैंडिंग मैनेजमेंट सिस्टम की टीम में जमशेदपुर के आयुष झा भी शामिल रहे हैं। आयुष जमशेदपुर के डीएवी बिष्टुपुर से 12वीं की पढ़ाई की है। उनका पूरा परिवार चक्रधरपुर में रहता है। आयुष वैसे तो इसरो अहमदाबाद में कार्यरत हैं, लेकिन पिछले एक महीने से वह चंद्रयान-3 की लैंडिंग ऑपरेशन के लिए बैंगलोर में हैं। वहां वह अपनी पूरी टीम के साथ सफलतापूर्वक चंद्रयान-3 की लैंडिंग कराने के काम में जुटे थे। इससे पहले आयुष चंद्रयान-2 से भी जुड़े हुए थे। इस बार वह रडार विकास के साथ उसकी लैंडिंग और रियूजेबल लॉन्च व्हीकल मिशन पर काम किया। जेईई में बेहतर रैंक हासिल करने के बाद आयुष ने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्पेस साइंस एंड टेक्नोलाजी तिरुवनंतपुरम से ग्रेजुएशन किया। फिर 2016 में इसरो के स्पेस एप्लीकेशन सेंटर अहमदाबाद में योगदान दिया।

डीएवी बरियातू के छात्रों ने राष्ट्रीय ध्वज लेकर चंद्रयान को चांद की सतह पर सही लैंडिंग की मंगल कामना की

रांची। डीएवी बरियातू के छात्र छात्राओं ने अपने अपने हाथों में भारत का राष्ट्रीय ध्वज लेकर चंद्रयान 3 को चांद की सतह पर सुरक्षित लैंडिंग के लिए मंगल कामना की। भारतीय जनता युवा मोर्चा कला एवं खेल प्रकोष्ठ रांची महानगर की ओर से डीएवी बरियातू में जय हो कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर मुख्य अथिति के रूप में स्कूल के प्राचार्य वीके पांडेय, भाजयुमो के आशुतोष द्विवेदी, भाजपा ओबीसी मोर्चा के राजीव रंजन मौजूद थे।

डीएवी बरियातू के प्राचार्य वीके पांडेय ने कहा कि हमें गर्व है कि हमारे स्कूल का पूर्व छात्र सोहन कुमार यादव भी इस चंद्र यान 2 और 3 मिशन के निर्माण में अपनी महत्व पूर्ण भूमिका निभाई है। डीएवी परिवार उन्के उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

वीके पांडेय, प्राचार्य, डीएवी बरियातू

चांद पर सॉफ्ट लैंडिंग के लिए सभी धर्म समुदाय के लोगों ने की प्रार्थना

रांची। भारत ने चांद छू लिया। बुधवार को चंद्रयान-3 के चंद्रमा पर सफल लैंडिंग को लेकर राजधानी में विभिन्न समुदायों ने दुआएं की और अपने अपने रीति रिवाजों से पूजा अर्चना की।

तेतर टोली सरना स्थल में आदिवासी समाज ने प्रार्थना सभा का आयोजन किया। इस प्रार्थना सभा में आदिवासी समाज के साथ-साथ स्कूल के बच्चों ने भी अपने हाथों में चंद्रयान-3 के पोस्टर लेकर प्रार्थना की।

पहाड़ी मंदिर में चंद्रयान-3 की सफलता पूर्वक लैंडिंग के लिए विशेष पूजा अर्चना की गयी। पहाड़ी मंदिर के आधार तल पर स्थित शिवलिंग पर जल चढ़ाया गया और आरती की गयी। साथ ही हवन पूजन का भी अनुष्ठान किया गया।

हजरत कुतुबुद्दीन रिसालदार बाबा के दरगाह पर चादरपोशी की गयी। चंद्रयान-3 के चंद्रमा पर सफलता पूर्वक लैंडिंग के लिए हजरत कुतुबुद्दीन रिशालदार बाबा की मजार पर चंद्रयान 3 की लैंडिंग की कामयाबी के लिए दुआएं मांगी गई।

सुरेश्वर महादेव मंदिर में की गयी पूजा-अर्चना

चंद्रयान 3 के चांद पर पहुँचने पर सुरेश्वर महादेव मंदिर में पूजा की गयी। जैसे ही चंद्रयान ने चांद पर सफल लैंडिंग की, लोग वंदे मातरम की जयघोष करने लगे। मंदिर समिति के अध्यक्ष सुरेश साहू और महासचिव संतोष कुमार ने कहा कि यह भारतीयों के लिए गर्व का पल है।

मेकॉन के इंजीनियरों ने चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग को लाइव देखा

रांची। चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग को मेकॉन के इंजीनियरों ने लाइव देखा। इस मौके को यादगार बनाने के लिए मेकॉन ने 4 सेल्फी प्वाइंट लगाए हैं। एक मेकॉन मुख्यालय के पास, दो जेवीएम श्यामली में और एक इस्पात अस्पताल में। ये सेल्फी पॉइंट अभी कुछ दिनों तक अपनी जगह पर बने रहेंगे, ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इस यादगार सफलता से जुड़ सकें। इस मौके पर कार्यपालक निर्देशक संजय कुमार सिन्हा के अलावा, आशा वजीर, देबाशीष वर्मा, एस सामंता, निशीथ कुमार समेत कई अधिकारी मौजूद थे।

चंद्रयान-3 की सफलता नये भारत के उदय का है जयघोष : अन्नपूर्णा देवी

रांची। केंद्रीय शिक्षा राज्यमंत्री अन्नपूर्णा देवी ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर चंद्रयान 3 की शानदार लैंडिंग पर कहा कि भारत के वैज्ञानिकों में दक्षता, क्षमता और आत्मविश्वास की कमी नहीं थी लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व ने इन वैज्ञानिकों और अन्वेषी संस्थानों को अभूतपूर्व समर्थन और प्रोत्साहन दिया। अब हमारा आत्मविश्वास मिशन गगनयान और सूरज पर पहुंचने के अभियान की सफलता सुनिश्चित करेगा।

मिशन चंद्रयान-3 की सफलता से भारत बना विश्वगुरु : बाबूलाल मरांडी

रांची। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने चंद्रयान की सफलता पर राज्य की सवा तीन करोड़ जनता की ओर से इसरो के वैज्ञानिकों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में भारत के वैज्ञानिकों ने इतिहास रचा है। भारत आज अंतरिक्ष क्षेत्र में विश्वगुरु बन चुका है। क्षेत्रीय संगठन महामंत्री नागेंद्र त्रिपाठी ने कहा आज देश के लिए गौरव का क्षण है।

चंद्रयान-3 की सफलता पर सांसद सेठ ने भारतीय वैज्ञानिकों को दी बधाई

रांची। सांसद संजय सेठ ने चंद्रयान की सफलता पर इसरो परिवार को बधाई और शुभकामनाएं दी है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मार्गदर्शन, वैज्ञानिकों की तपस्या और 140 करोड़ देशवासियों की शुभकामनाओं का परिणाम है कि इस क्षेत्र में बड़ी सफलता हासिल की है। यह देखकर सुखद लगता है कि अब देश के हर अभियान में देशवासी प्रत्यक्ष रूप से शामिल हो रहे हैं।

अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भारत ने लगायी लंबी छलांग : रघुवर दास

रांची। भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रघुवर दास ने कहा है कि चंद्रयान की इस सफलता के बाद आगामी पीढ़ी के लिये चंदा मामा दूर के नहीं रहेंगे। उन्होंने अभियान की इस अभूतपूर्व सफलता के लिए इसरो के सभी वैज्ञानिकों और इस मिशन से जुड़े सभी साथियों को बहुत-बहुत बधाई व शुभकामनाएं दी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल मार्गदर्शन में देश लगातार नयी ऊंचाईयों को छू रहा है।

भारत के वैज्ञानिकों के लिए अब कोई सरहद दूर नहीं : प्रतुल शाहदेव

रांची। भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव ने कहा है कि अब चंदा मामा दूर के नहीं रहे। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में देश के वैज्ञानिकों के लिए अब कोई सरहद दूर नहीं रहा। भारतीय वैज्ञानिकों ने चंद्रयान को कुशलतापूर्वक चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव में लैंड कराया, जहां पहले किसी देश ने लैंडिंग नहीं की थी। प्रधानमंत्री ने अब सूर्य का भी अध्ययन करने के लिए नए मिशन की घोषणा की है।

बाबा विद्यापति स्मारक समिति ने दी बधाई

रांची। बाबा विद्यापति स्मारक समिति के जयंत झा ने चन्द्रयान 3 की सफलता पर इसरो के वैज्ञानिकों और भारत सरकार को बधाई दी है। चन्द्रयान 3 के मिशन की सफलता को लेकर कचहरी रोड स्थित कार्यालय में कार्यक्रम का आयोजन बुधवार को किया गया था। कार्यक्रम में डॉ पंकज, भानु, रमेश भारतीय, बॉबी सिंघानिया आदि मुख्य रूप से मौजूद थे।

भारत पूरे विश्व का नेतृत्व करेगा : वीसी

रांची। रांची विश्वविद्यालय के बेसिक साइंस परिसर स्थित आइक्यूएसी में चंद्रयान-3 के लैंडिंग के लाइव प्रसारण को देखने की व्यवस्था की गयी थी। कुलपति आरयू प्रो अजीत कुमार सिन्हा के नेतृत्व में विभिन्न विभागों के प्राध्यापक, डीन, विभागाध्यक्षों ने चंद्रयान-3 की लैंडिंग को देखा। कुलपति प्रो.सिन्हा ने कहा कि यह गर्व का अवसर है। हमारे वैज्ञानिकों ने पूरे विश्व में स्वयं को साबित किया है। कहा कि आज के बाद भारत विश्व का नेतृत्व करेगा।

राज्यपाल से मिले बीएयू के कुलपति

रांची। राज्यपाल-सह-झारखंड राज्य के विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति डॉ सीपी राधाकृष्णन से बुधवार को बिरसा कृषि विश्वविद्यालय रांची के कुलपति डॉ ओंकार नाथ सिंह ने राज भवन में भेंट की एवं विश्वविद्यालय की विभिन्न शैक्षणिक व प्रशासनिक गतिविधियों से अवगत कराया।

राज्यपाल को माइनिंग समिट में किया आमंत्रित

रांची। राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन से बुधवार को पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के वरीय स्थानीय निदेशक मंतोष सिंह ने राज भवन में भेंट की। इस दौरान उन्होंने संस्था की ओर से आयोजित किये जा रहे द्वितीय झारखण्ड माइनिंग समिट में सम्मिलित होने को आमंत्रित किया।

रांची के उपायुक्त का फेसबुक एकाउंट हैक

रांची। साइबर अपराधियों ने रांची उपायुक्त राहुल सिन्हा का फेसबुक एकाउंट हैक कर लिया है। अपराधियों द्वारा उपायुक्त के प्रोफाइल से लोगों से संपर्क कर पैसे की मांग की जा रही है। इस संबंध में साइबर थाना में उपायुक्त कार्यालय से रिपोर्ट दर्ज करा दी गयी है। उपायुक्त ने कहा कि किसी भी परिस्थिति में पैसे मांगे जाने पर भुगतान नहीं करें।

सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज की जमीन पर कब्जा मामला

आज सुनवाई में सशरीर पेश होंगे डीजीपी, रांची एसएसपी

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। भू माफियाओं द्वारा सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जस्टिस स्वर्गीय एमवाई इकबाल की जमीन पर बनी बाउंड्री वॉल को तोड़े जाने मामले में कोर्ट के स्वतः संज्ञान की सुनवाई झारखंड हाईकोर्ट में बुधवार को हुई। कोर्ट ने मामले की सुनवाई कल यानी गुरुवार को निर्धारित करते हुए राज्य के डीजीपी एवं रांची एसएसपी को कोर्ट में सशरीर उपस्थित होने का निर्देश दिया है। गौरतलब हो कि 25 जून को चर्च रोड के विक्रांत चौक (डॉक्टर फतेहउल्लाह रोड) के सामने स्थित सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जस्टिस स्वर्गीय एमवाई इकबाल की जमीन पर बनी बाउंड्री वॉल को भू-माफियाओं ने तोड़ दिया था। वहां तैनात गार्डों ने बाद में भू माफियाओं को वहां से खदेड़ दिया। साथ ही लोअर बाजार पुलिस को इसकी सूचना दी थी। भू-माफिया अपने साथ मजदूर, गेट, बालू, सीमेंट और ईंट लाए थे।

कांग्रेस विधायक दीपिका पांडेय सिंह के खिलाफ पीड़क कार्रवाई पर रोक

रांची। हाइकोर्ट ने कांग्रेस विधायक दीपिका पांडेय सिंह के खिलाफ पीड़क कार्रवाई के आदेश पर रोक को बरकरार रखा है। हाइकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस अनिल कुमार चौधरी की कोर्ट में महगामा विधायक दीपिका पांडेय सिंह द्वारा दायर क्वैशिंग याचिका पर सुनवाई हुई। मामले में प्रार्थी की ओर से बहस जारी रही। कोर्ट ने अपने पूर्व के आदेश को विस्तार देते हुए अगली सुनवाई तक विधायक दीपिका पांडे सिंह के खिलाफ किसी भी तरह की पीड़क कार्रवाई पर रोक जारी रखी है। अगली सुनवाई 30 अगस्त को होगी।

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने कार्यकारी व अग्रणी मोर्चा के अध्यक्षों के साथ की बैठक, कई मुद्दों पर हुई बात

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। प्रदेश कांग्रेस कमिटी के कार्यकारी अध्यक्ष एवं अग्रणी मोर्चा के अध्यक्षों के साथ प्रदेश कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने बैठक की। बैठक में यह निर्णय लिया गया कि संगठन को और अधिक सशक्त और धारदार बनाने के लिए अगले माह जिलाध्यक्ष, जिला प्रभारी महासचिव, विधानसभा प्रभारी सचिव का राजनीतिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जाएगा। झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमिटी के महासचिव सह प्रवक्ता राकेश सिन्हा ने बताया

कि केन्द्र सरकार की नीतियों के खिलाफ जैसे महंगाई, देश की गिरती अर्थव्यवस्था, व्याप्त भ्रष्टाचार, बेरोजगारी आदि प्रमुख मुद्दों को लेकर झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमिटी राज्य के सभी जिलों में डिजिटल प्रचार वाहन का शुभारंभ करेगी। साथ ही कैग की रिपोर्ट द्वारा उजागर मोदी सरकार में भ्रष्टाचार के खिलाफ राज्य के सभी जिला मुख्यालयों में 25 अगस्त 2023 को संवाददाता सम्मेलन किया जायेगा। प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने अग्रणी मोर्चा के तमाम अध्यक्षों को निर्देश दिया कि मोर्चा संगठन जैसे महिला कांग्रेस, युवा कांग्रेस, एनएसयूआई, सेवादल का एक-एक कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित करें और इसकी तिथि की जानकारी अविलंब प्रदेश कांग्रेस कार्यालय को दें।

बैठक में बन्धु तिर्की, गीता कोड़ा, कालीचरण मुंडा, अमुल्य नीरज खलखो, राकेश सिन्हा, गुंजन सिंह, नेली नाथन, गजेन्द्र सिंह, आमिर हासमी उपस्थित थे।

नसीम हत्याकांड में तीन अभियुक्त दोषी करार

रांची। अदालत ने बुधवार को नसीम अंसारी हत्याकांड के आरोप में जेल में बंद मोईद अंसारी, इमरान खान उर्फ सज्जू खान व मुख्तार अंसारी को दोषी करार दिया है। तीनों की सजा के बिंदु पर सुनवाई के लिए 29 अगस्त निर्धारित की गई है।

तत्कालीन अंचलाधिकारी की एक वेतन वृद्धि पर रोक

रांची। राज्य सरकार ने तत्कालीन अंचल अधिकारी कांके अनिल कुमार को मामूली दंड दिया है। उनकी असंचयात्मक प्रभाव से एक वेतन वृद्धि रोक दी गयी है। उनपर नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी के पीछे जुमार नदी को भरकर बेचने की तैयारी में मिली-भगत का आरोप है।

शराब घोटाले का किंगपिन है योगेंद्र तिवारी, जामताड़ा के अलग-अलग थानों में दर्ज है 14 प्राथमिकी

सिवान से आकर योगेंद्र तिवारी ने झारखंड में बनाया साम्राज्य

दुमका और देवघर में नामी है मैहर गार्डेन

भाई जोगेंद्र तिवारी कर चुका है रूस से मेडिकल की पढ़ाई

कुबेर सिंह

रांची। छत्तीसगढ़ के बाद झारखंड में भी शराब घोटाले की जांच में इडी की एंट्री हो गई है। इडी के अधिकारी मनी लॉड्रिंग के एंगल पर पूरे मामले की जांच कर रही है। झारखंड, बंगाल में एक साथ हुए छापेमारी में शराब सिंडिकेट में हड़कंप मच गया है। इस पूरे कार्रवाई के केंद्र में शराब और बालू कारोबारी योगेंद्र तिवारी है।

अब सवाल यह है कि शराब कारोबारी योगेंद्र तिवारी कौन है। इडी की कार्रवाई से पूर्व यह वर्ष 2020 में राज्य सरकार के रडार पर क्यों था।

योगेंद्र तिवारी के खिलाफ जामताड़ा के अलग-अलग थानों में 14 प्राथमिकी दर्ज है। इन प्राथमिकी में दो ऐसा है, जिनमें उत्पाद अधिनियम के उल्लंघन की धाराएं लगी हुई है।

कौन है शराब किंग योगेंद्र तिवारी

योगेंद्र तिवारी मूल रूप से बिहार के सिवान का रहने वाला है। पिता रामेश्वर तिवारी चितरंजन रेल इंजन कारखाना में कर्मचारी थे। उन्होंने जामताड़ा के मिहिजाम में अपना बसेरा खड़ा किया। रिटायरमेंट के बाद रामेश्वर तिवारी सरकारी हाट-बाजार का ठेका लेने लगे। हाट बाजार के ठेके के बाद देसी शराब डिपो का डाक लेना शुरू किया। उनके इस काम को पुत्र योगेंद्र तिवारी ने आगे बढ़ाया। योगेंद्र तिवारी का बड़ा भाई जोगेंद्र तिवारी फिजिशियन है, उसने रूस से मेडिकल की डिग्री ली है।

योगेंद्र तिवारी अपने पिता की विरासत को आगे बढ़ाकर अकूत संपत्ति अर्जित की। सूत्रों के मुताबिक इसके और परिजनों के नाम जामताड़ा में बाइक का शोरूम, जामताड़ा में होटल, मिहिजाम में होटल, दुमका में ज्वेलरी का शोरूम, देवघर के डाबर ग्राम में मैहर गार्डन है। इसने दुमका, जामताड़ा, देवघर, गोड्डा, रांची, धनबाद में अच्छी खासी प्रोपर्टी खड़ी की है। मिहिजाम स्थित योगेंद्र तिवारी के घर में एसबीआई की शाखा चलती है। यह शख्स बालू के अलावा शराब और रियल स्टेट का भी कारोबार करता है। इसकी दो प्रमुख कंपनियां मैहर डेवलपर्स और मैहर होटल्स प्रा. लिमिटेड के नाम से रजिस्टर्ड हैं। मैहर डेवलपर्स के नाम से दुमका के कुमड़ाबाद में देसी शराब बनाने की फैक्ट्री भी चलती है।

स्टॉक मिलान में गड़बड़ी की मिली थी शिकायत : साल 2020 में योगेंद्र के करीबियों के नाम शराब दुकानों में स्टॉक मिलान में गड़बड़ी पायी पायी गयी थी। उस दौरान कई लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया था। हिरासत में लेने के बाद जांच का हवाला देकर पुलिस ने योगेंद्र को छोड़ दिया था। योगेंद्र का विपक्षी दल के दिग्गज नेता से करीबी संबंध है। बाद के दिनों में उसने सत्ताधारी दल के एक नेता को कारोबार में पार्टनर बनाया। लेनदेन में झंझट होने पर खनन विभाग ने पुलिस के सहयोग से छापेमारी की थी।

अदभुत पल

देश की 140 करोड़ की शुभकामना और दुआ का असर, इसरो के वैज्ञानिकों का अदभुत प्रयास का सार्थक परिणाम सामने आया। भारत ने अंतरिक्ष केक्षेत्र में विश्व कीर्तिमान रच दिया। यह नया भारत है। यह भारत अपनी विश्व स्तरीय शोध और कर्म निष्ठा से हर क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। आजादी के बाद से इसरो की स्थापना और विकास की कहानियों में यह पल अब तक का सबसे अदभुत पल था। सोशल मीडिया के जमाने में बुधवार सुबह से ही चर्चा का विषय था कि आज शाम क्या होगा? हमारे संस्थाओं के प्रति अंतरराष्ट्रीय नकारात्मक आधारहीन एजेंडा के बीच भारतीय जनमानस का आत्म विश्वास भी लगातार कम होता जा रहा था। साथ ही इसरो के कुछ प्रयास विफल होने के कारण भी लोगों में मायूसी का माहौल था। लेकिन नये भारत के लिये यह अदभुत पल है जब अतंरिक्ष के क्षेत्र में जिसमें विश्व के चार देश का ही दबदबा था वहा भारत उच्च शिखर पर पहुंचा। क्या भारतीय जनमानस यह भूल सकता है कि हमारे इसरो के वैज्ञानिक साइकिल पर अतंरिक्ष शोध की सामग्री ले जाया करते थे। यह फोटो अब बीते कल की बात हो गयी। आज एक नये भारत का अभ्युदय हुआ जो तमाम कठिनाई और समस्या के बीच अपने अंतरिक्ष शोधों में विश्व का सिरमौर बन गया है। निश्चित तौर पर इसरो के वैज्ञानिक इस सफलता के लिये बधाई के पात्र हैं। साथ ही देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में मिली यह सफलता भारत के इतिहास में स्वर्णअक्षरों में अंकित हो गया है। अंतरिक्ष में मिली इस सफलता के मायने बहुत अधिक है। अब दुनिया के शीर्ष देशों में भारत का सिक्का जम गया है। विकसित देशों से बहुत कम लागत में अपनी योजनाओं को पूरा करने का कीर्तिमान पहले ही रच चुका है।

जिन-मोदी संवाद?

दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में 15वीं शिखर वार्ता में भारत और चीन के बीच कई तरह के विवादों और मुद्दों को लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग से बातचीत करते हैं या नहीं।

चूंकि इस बात की सम्भावना कूटनयिक हलकों में भी जतलाई गई है कि दोनों राष्ट्राध्यक्षों के बीच मुलाकात की सम्भावना है, तो देश की यह आशा स्वाभाविक है कि मोदी भारत के हितों से जुड़े मसलों को कड़ाई से उठायेंगे। भारत में चीन की घुसपैठ और कुछ स्थानों पर हो चुकी झड़पों को लेकर मोदी ने देश के भीतर कभी स्पष्ट बात नहीं की, सिवाय यह कहने के कि पड़ोसी देश की ओर से कोई घुसपैठ नहीं हुई है। संसद के भीतर व बाहर एकाध बयानों के अलावा भारत सरकार या मोदी ने कभी भी इस बात को स्वीकार नहीं किया कि चीन देश की सीमा के भीतर घुस आया है। मोदी की अनेक मौकों पर चीनी राष्ट्रपति से मुलाकात तो हुई है लेकिन मोदी ने यह मसला कभी भी नहीं उठाया। देखना यह होगा कि अब भी मोदी लोगों को निराश करते हैं या चीन को कड़े लफ्जों में भारत की सम्प्रभुता का सम्मान करने की नसीहत देते हैं। वैसे तो पश्चिमी दुनिया के प्रभाव से अलग 5 बड़े देशों- ब्राजील, रूस, इंडिया, चीन एवं दक्षिण अफ्रीका (ब्रिक्स) द्वारा परस्पर सहयोग व विकास के उद्देश्यों को लेकर वर्ष 2010 में गठित इस संगठन में शामिल होने के लिये 60 देश इच्छुक हैं परन्तु यह तय नहीं हुआ है कि देशों के आवेदन को स्वीकार करने के पैमाने क्या होने चाहिये। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार जिन देशों को शामिल करने का निर्णय लिया जायेगा वह परस्पर सहमति से होगा। अब तक तो ईरान को इसमें शामिल करने के लिए रूस एवं चीन ने समर्थन जताया है।

आत्मबल संपन्न बनें

विचार-प्रवाह

श्रीराम शर्मा आचार्य

हम मनस्वी और परमार्थ के लिये स्वार्थ को छोड़ना आवश्यक है। आत्मकल्याण के लिये भौतिक श्री-समृद्धि की कामनाओं से मुँह मोड़ना पड़ता है। दोनों हाथ लड्डू मिलने वाली उक्ति इस क्षेत्र में चरितार्थ नहीं हो सकती। उन बाल बुद्धि लोगों से हमें कुछ नहीं कहना जो थोडा-सा पूजा-पाठ करके विपुल सुख-साधन और स्वर्ग-मुक्ति दोनों ही पाने की कल्पनाएँ करते रहते हैं। दो में से एक ही मिल सकता है। जिसकी कामनाएँ प्रबल हैं, वह उन्हीं की उधेड़बुन में इतना जकड़ा रहेगा कि श्रेय साधना एक बहुत दूर की मधुर कल्पना बनकर रह जायगी। जिसे श्रेय साधना है, उसे पेट भरने, तन ढकने में ही संतोष करना होगा, तभी उसका समय एवं मनोयोग परमार्थ के लिये बच सकेगा। सृष्टि के आदि से लेकर अब तक के प्रत्येक श्रेयार्थी का इतिहास यही है। उसे भोगों से विमुख हो त्याग का मार्ग अपनाना पड़ा है। आत्मोत्कर्ष की इस कीमत को चुकाये बिना किसी का काम नहीं चला। तीर्थयात्रा, व्रत, उपासना, कथा-कीर्तन, प्रणाम, प्राणायाम जैसे माध्यम मन बहलाने के लिए ठीक हैं, पर उनमें किसी को आत्मा की प्राप्ति या ईश्वर दर्शन जैसे महान लाभ पाने की आशा नहीं करनी चाहिए। उपासना से नहीं साधना से कल्याणकी प्राप्ति होती हैं और जीवन साधना के लिए व्यक्तिगत जीवनमें इतना आदर्शवाद तो प्रतिष्ठापित करना ही होता है जिसमेंलोकमंगल के लिये महत्त्वपूर्ण स्थान एवं अनुदान संभव हो सके।

कार्टून वर्ल्ड

लेटर टू एडिटर

राजनीतिक अपरिपक्वता

हाल ही के दिनों में देश के चुनावी अभियानों में राजनेताओं की अमर्यादित भाषा बेचैन करने वाली है। किसी भी सभ्य समाज में हर जिम्मेदार नागरिक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी वाणी और व्यवहार पर अंकुश रखेगा। नेताओं के शब्दों की अमयार्दा और अशालीनता आजादी के सात दशक बाद भी लोकतंत्र की अपरिपक्वता को ही दशार्ता है। **-पूनम जमशेदपुर**

सहयोग जरूरी

सामाजिक दृष्टि से जरूरी छोटी बचतों को संरक्षण लेख कोरोना कॉल में महत्वपूर्ण और सारगर्भित था। कोरोना संक्रमण की दूसरी पारी पर स्वास्थ्य विभाग के कर्मियों और आमजन के सहयोग से ही विजय पायी जा सकती है। इस महामारी को मानवीय असावधानी का परिणाम भी कहा जा सकता है। अब मई मध्य तक लाखों पीड़ित होंगे, सभी सावधान रहें यह जरूरी है। **-अनिल कौशिक, रांची**

अब रोवर प्रज्ञान चांद की जानकारी देगा

- सुधांशु कुमार

जिस इलाके में अपना विक्रम लैंडर उतरा है वहां आसपास कई किलोमीटर लंबे-चौड़े गड्ढे हैं। यहां बहुत ज्यादा तापमान और -200 डिग्री तापमान भी हो जाता है। यहां की मिट्टी के बारे में किसी को कुछ नहीं पता है। कहते हैं कि लाखों साल से ये वैसी ही है। अपना रोवर अब 14 दिनों तक चांद की सतह पर घूमकर मिट्टी की जांच करेगा, पानी की संभावना तलाशेगा।

जैसे ही इसरो में तालियां बजीं, पीएम नरेंद्र मोदी ने दक्षिण अफ्रीका से तिरंगा लहराया। वह ब्रिक्स समिट के लिए जोहान्सबर्ग में हैं। विश्व ने देखा कि भात ने कीर्तिमान रच दिया है।

बच्चों ने जो कहानियां अपनी दादी या नानी से सुनी थीं, उसी चंदा मामा के घर आज हम पहुंच गए। जी हां, चांद पर अपने चंद्रयान-3 के कदम पड़ गए हैं। रोवर प्रज्ञान को लेकर विक्रम लैंडर चांद की सतह पर उतर गया है। जैसे ही सिग्नल मिला, इसरो के मिशन कंट्रोल में बैठे साइंटिस्ट ही नहीं टीवी से चिपके करोड़ों लोग तालियां बजाने लगे। भारतीयों की बरसों की तमन्ना पूरी हो गई। पीएम मोदी ने भी इस बात का जिक्र किया कि अब चंदा मामा दूर के नहीं रहे। जी हां, इस समय कुछ वैसी ही खुशी हो रही है जैसा मामाश्री के घर पहुंचने पर भांजे-भांजियों को होती है। पूरा भारत जश्न मना रहा है। इस बार दिवाली पहले आ गई है। 15 मिनट के उस आखिरी पलों में देशवासियों की धड़कनें बढ़ी हुई थीं लेकिन इस बार इसरो ने इतिहास रच दिया। हमारे वैज्ञानिकों ने दिखा दिया कि जो काम अमेरिका और रूस जैसे देश नहीं कर सकते, वो भारत कर सकता है। जी हां, गर्व कीजिए हमारा यान तिरंगा लेकर चांद के रहस्यमय क्षेत्र दक्षिणी ध्रुव पर उतरा है। कुछ दिन पहले ही रूस का लूना-25 यान चांद पर क्रैश हो गया था लेकिन भारत नाकामी से हारकर बैठने वालों में से नहीं है। चंद्रयान-2 की खामियों को सुधारकर विक्रम के पैरों में 'अंगद' की पावर देकर यान को रवाना किया गया था। आज हमारे वैज्ञानिकों ने साबित कर दिया कि कोशिश करने वालों की हार नहीं होती। ऐसे समय में बचपन में पढ़ी वो कविता भी दोहरा लीजिए क्योंकि अब चंदा मामा दूर के नहीं रहे। हम उनके पास पहुंच गए हैं।

चंदा मामा दूर के
साथ लिए आए तारे
चमक रहे मिलकर सारे
राजमहल में जैसे जगमग
जलते दिए कपूर के
चंदा मामा दूर के।

वो गीत बदल दो, अब चंदा मामा दूर नहीं

वो गीत बदल दो, अब चंदा मामा दूर नहीं

जो चांद पर पहुंचे उनके सामने दुनिया ने सर झुकाया है... जब पूरब और पश्चिम फिल्म में यह डायलॉग मनोज कुमार बोलते हैं तो प्राण का जवाब होता है- है कोई ऐसी बात तुम्हारे देश की, जिस पर कि सर ऊंचा कर सको। इसके बाद मनोज कुमार पर फिल्माया गीत दशकों से भारतीयों की जुबान पर रहा है। उसी गीत में एक लाइन आती है- तारों की भाषा भारत ने दुनिया को पहले सिखलाई, देता न दशमलव भारत तो यूं चांद पे जाना मुश्किल था। धरती और चांद की दूरी का अंदाजा लगाना मुश्किल था। आगे जब फिल्में बनेंगी तो उसकी लाइन जरूर आगे बढ़ाई जाएगी। भारत के चांद पर पहुंचने की गौरवगाथा जरूर दोहराई जाएगी। हमारा सौभाग्य है कि हम ऐसे समय में जन्मे जब देश चांद पर पहुंचा है। आज हमारे पुरखे जहां भी होंगे, गर्व महसूस कर रहे होंगे। विक्रम साराभाई से लेकर अब्दुल कलाम को आज पूरा देश याद कर रहा है।

हम गौरवशाली हैं...
हम गौरवशाली हैं...

आज कुछ लोगों को रामधारी सिंह दिनकर की वो कविता भी याद आ रही होगी जो आपने प्राइमरी स्कूल में पढ़ी होगी।

हठ कर बैठा चांद एक दिन
माता से यह बोला,
सिलवा दो मां, मुझे ऊन का
मोटा एक झिंगोला।

जी हां, भारत की यह उपलब्धि कितनी बड़ी है, इसे हर भारतीय को समझना जरूरी है। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला भारत पहला देश बन गया है। रूस का लूना 25 भी दक्षिणी ध्रुव पर नहीं उतर सका। जितने बजट में भारत में फिल्म बनती है, इसरो ने चांद पर अपना चंद्रयान उतार दिया। अपना चंद्रयान-2 भले ही चांद पर नहीं उतरा लेकिन उसका ऑर्बिटर अब भी काम कर रहा है।

आज हम ऐतिहासिक घटना के गवाह बने हैं। पहली बार 14 सितंबर 1959 को मानव निर्मित यान चांद पर उतरा था। वह रूस का लूना-2 था। अगर आप 40 साल की उम्र के आसपास हैं तो आपके पिता की उम्र उस समय साल दो साल ही रही होगी। ऐसे में समझिए कि आज का दिन कितना ऐतिहासिक है। खास बात यह है कि जब भारत ने मून मिशन शुरू किया तो उसने मुश्किल लक्ष्य चुना। चंद्रमा के उजले हिस्से में उपकरणों को धूप से रोशनी मिलती रहती है। ऐसे में अब तक किसी भी देश ने अपने यान को अंधेरे वाले हिस्से में उतरने की हिम्मत नहीं की थी।

जिस इलाके में अपना विक्रम लैंडर उतरा है वहां आसपास कई किलोमीटर लंबे-चौड़े गड्ढे हैं। यहां बहुत ज्यादा तापमान और -200 डिग्री तापमान भी हो जाता है। यहां की मिट्टी के बारे में किसी को कुछ नहीं पता है। कहते हैं कि लाखों साल से ये वैसी ही है। अपना रोवर अब 14 दिनों तक चांद की सतह पर घूमकर मिट्टी की जांच करेगा, पानी की संभावना तलाशेगा। इससे धरती और चांद के ही नहीं सौर मंडल के रहस्य सामने आ सकते हैं।

स्वर्ण अक्षरों में दर्ज हुआ भारत का नाम?

जैसे रूस चांद पर पहला यान भेजने वाला देश था और अमेरिका कदम रखने वाला पहला देश बना। इसी तरह से आज भारत चांद के दक्षिणी ध्रुव पर उतरने वाला पहला देश बन गया है। हम रहें न रहें, आने वाली पीढ़ियां याद रखेंगी कि 23 अगस्त 2023 को भारत का यान चांद पर उतरा था।

खास बात

ग्रीन एनर्जी पर ध्यान

श्रेया जय

रिलायंस इंडस्ट्रीज (आरआईएल) ने हरित ऊर्जा क्षेत्र में दस्तक देने का ऐलान किया। कंपनी की योजना अपनी 'नई ऊर्जा और नया मटिरियल्स' इकाई के तहत सौर ऊर्जा उत्पादन और विनिर्माण, हाइड्रोजन उत्पादन, ई-ईंधन तथा ऊर्जा भंडारण की है। इसके अलावा कंपनी नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए एक प्लेटफॉर्म विकसित करेगी और इन क्षेत्रों में निवेश के लिए दीर्घावधि वैश्विक पूंजी जुटाएगी।

आरआईएल के चेयरमैन मुकेश अंबानी ने कंपनी की सालाना आम बैठक में कहा कि त्रिआयामी योजना के तहत अगले तीन साल में इन क्षेत्रों पर 75,000 करोड़ रुपये का निवेश किया जाएगा। इसके लिए जामनगर में 5,000 एकड़ में करीब 60,000 करोड़ रुपये की लागत धीरूभाई अंबानी ग्रीन एनर्जी गीगा कॉम्प्लेक्स स्थापित किया जाएगा जबकि 15,000 करोड़ रुपये मूल्य शृंखला, साझेदारी और भविष्य की प्रौद्योगिकियों पर निवेश किया जाएगा।

अंबानी ने कहा, 'इस तरह रिलायंस पूर्णतः एकीकृत एंड-टू-एंड अक्षय ऊर्जा पारिस्थितिकी विकसित करेगी।' कंपनी एकीकृत सोलर फोटोवोल्टिक मॉड्यूल के लिए 4 गीगा फैक्टरी, उन्नत ऊर्जा भंडारण, हरित हाइड्रोजन के लिए इलेक्ट्रोलाइजर फैक्टरी और हाइड्रोजन को ईंधन में बदलने के लिए ईंधन सेल फैक्टरी लगाएगी।

सौर विनिर्माण के लिए आरआईएल एकीकृत विनिर्माण इकाई लगाएगी, जिसमें कच्चा सिलिका और पॉलिज सिलिकन को ईंधन में, वेफर को तैयार उत्पाद सेल और मॉड्यूल में तब्दील करेगी।

यह भारत के सौर विनिर्माण योजना को व्यापक तौर पर बढ़ाएगा। हालांकि इसकी क्षमता कितनी होगी, उसका खुलासा कंपनी ने नहीं किया है। भारत अपनी जरूरत को 90 फीसदी सोलर सेल और मॉड्यूल का आयात करता है। इनमें से 80 फीसदी आयात चीन से किया जाता है। उद्योग के आंकड़ों के अनुसार देश में 3,100 मेगावॉट सेल विनिर्माण और 9,000 मेगावॉट के मॉड्यूल विनिर्माण की क्षमता है।

मिजोरम की राजधानी आइजोल के पास सायरांग में निमार्णाधीन रेलवे ब्रिज गिरने से 17 मजदूरों की मौत तथा कई लोगों के घायल होने की अत्यंत दुखद सूचना मिली। ईश्वर सभी दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करें।

- सुदेश महतो, आजसू सुप्रीमो

आपके ट्वीट

#चंद्रयान3 मिशन की एसोसिएट प्रोजेक्ट डायरेक्टर कल्पना जी कहती हैं, यह मेरे और मेरी टीम के लिए सबसे यादगार पल है। हम पिछले कई सालों से यही प्रयास कर रहे थे। हमने अपना लक्ष्य हासिल कर लिया।

- अन्नपूर्णा देवी, केन्द्रीय मंत्री

देश के लिये गर्व का पल है। 140 करोड़ देशवासियों के दुआओं और इसरों के वैज्ञानिकों के प्रयास का प्रतिफल है हमारा चांद पर सफल मिशन।

- नरेन्द्र मोदी

निजाम बदला, हुक्मरान बदले लेकिन प्याज टमाटर के तेवर नहीं बदले

सामयिक

इन दिनों टमाटर सुर्ख. है। प्याज होना चाहता है। उसकी आसमान छूती कीमतें जनसामान्य को परेशान तो करने के बाद वैसे अब उतार पर हैं। हर किसी की रसोई की अनिवार्यता कहे जाने वाले टमाटर की कीमतें अभूतपूवंऊँचाई को छूकर उतर तो चुकी हैं लेकिन लगता है कि महंगे टमाटर वर्तमान निजाम के दौर में बहस के योग्य नहीं हैं- वैसे ही जैसे अन्य उपभोक्ता वस्तुओं के बढ़ते दाम भी नहीं रहे। यह दीगर बात है कि जिन मुद्दों का हो-हल्ला कर भाजपा केन्द्रीय सत्ता पर 2014 में काबिज हुई है, उनमें से एक महंगाई थी। यह आज के हुक्मरानों और विपक्ष के तत्कालीन झंडाबरदार नेताओं के लिये डायन थी जिसने जनता को बहुत हलाकान किया था।

2014 के पहले जब भारतीय जनता पार्टी विपक्ष में थी, तो महंगाई हमेशा बड़ा मुद्दा होती थी। होना भी चाहिये क्योंकि आम आदमी के बजट को बिगाड़ने से लेकर उसकी कमर तोड़ने का यह काम करती है। बहुत पुरानी बातें छोड़ भी दी जायें तो आज जो नेता भाजपा के संगठन व सरकार में बड़े ओहदे सम्हाले बैठे हैं उनमें से ज्यादातर ने इस सरकार के आने के पहले महंगाई के खिलाफ आंदोलनों में हिस्सा जरूर लिया होगा या जिनकी खाली सिलेंडरों के साथ अथवा महंगी सब्जियों की मालाएं पहने हुए तस्वीरें प्रकाशित हुई होंगी।

निजाम बदला। हुक्मरान बदले; और परिस्थितियां बदलीं। जो लोग पहले महंगाई को पानी पी-पीकर कोसते थे, अब उनके गले सूखने बन्द हो गये हैं। भाजपा का शासन काल ऐसा है जो किसी भी मुद्दे पर न संवाद करता है और न जवाब देता है। फिर वह चाहे भ्रष्टाचार हो या फिर उसके द्वारा लिये गये गलत आर्थिक फैसलों के दुष्परिणाम हों, चीन द्वारा की गई घुसपैठ हो या पुलवामा कांड अथवा कोरोना के दौरान स्वास्थ्य सम्बन्धी कुप्रबंधन। किसी भी विषय पर सरकार ने कभी अपने कर्तव्यों को पूरा नहीं किया और न ही जवाबदेही की भावना का प्रदर्शन किया। कोई भी फैसला कैसे लिया गया, इस प्रक्रिया से लोगों को हमेशा अनभिज्ञ रखा गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हों या उनकी सरकार का कोई भी मंत्री, शायद ही किसी विषय पर जनमानस को संतुष्ट कर पाया हो। चूंकि सारी शक्तियां स्वयं मोदी के अधीन हैं, अन्य मंत्रियों, अधिकारियों, संस्थाओं, विभागों की हैसियत आज हां में हां मिलाने से अधिक कुछ भी नहीं रह गई है। जब स्थिति ऐसी हो तो किसी भी बात का कोई स्पष्टीकरण हो ही नहीं सकता। केन्द्र सरकार हो या देश के किसी भी राज्य की भाजपा प्रणीत सरकार, यह नहीं बता पा रही है कि जो पेट्रोल पहले 40-45 रुपये का होकर भी महंगा था, वही आज 100 रुपए का होकर भी सस्ता कैसे है? ऐसे ही, डीजल, रसोई गैस, तेल, मसाले, सब्जियां आदि महंगी होकर भी सरकार व उसके नेताओं एवं समर्थकों को सस्ती क्यों लगती हैं?

इस पूरे काल का मूल्यांकन जब भी होगा, तय है कि मीडिया अपनी चुप्पी के लिये सर्वाधिक कोसा जायेगा। लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ के रूप में स्वीकृत मीडिया राजसत्ता को गैर जिम्मेदार और लोकविरोधी बनने में प्रमुख सहायक संस्थान के रूप में याद किया जायेगा। मीडिया ने महंगाई के परिप्रेक्ष्य में इस झूठ को फैलाने और उसे लोगों द्वारा आत्मसात किये जाने में प्रमुख भूमिका निभाई कि कीमतें इसलिये बढ़ाई गई हैं कि इससे देशविरोधी ताकतों से लड़ने में सरकार को मदद मिल रही है। वैसे अकेला राष्ट्रवाद इस महंगाई को बढ़ाने का जिम्मेदार नहीं है। समाज में हिंसा और नफरत का जो वातावरण बनाया गया है उसने भी सरकार को महंगाई बढ़ाने का औचित्य प्रदान किया है। एक बड़ा वर्ग मानता है कि मोदी सरकार बहुसंख्यकों के धर्म की रक्षा कर रही है इसलिये उसकी इतने छोटे कारण से आलोचना नहीं की जानी चाहिये। पत्रकार हों या फिर कोई स्वयंसेवी संगठन। महंगाई भी एक ऐसा ही विषय है जो सत्ता को असहज करता है। विपक्ष को पूरा जोश से भर देता है भले वे कल तक सत्ता में रहें हों।

हम चांद पर पहुंच कर रिकार्ड बना रहें हैं, वे घिसा पिटा रिकार्ड बजा...

व्यंग्य

मनोज शर्मा

आज तक की श्वेता सिंह चांद पर अपने कैमरामैन के साथ करिया गोगल्स जींस और जैकेट में केस लहराते चहुंप चुकी हैं, स्पर्धा में एनडीटीवी के संकेत उपाध्याय, बाकी चैनलों से शीरीन, ऐश्वर्या वगैरह भी आज ही पहुंच कर विक्रम के लैंडिंग साइट पर कैमरा ,बूम , लाइट वगैरह सेट किये हैं।

चांद की सतह पर ये लोग बांस का फराठी गाड़ के उसमें हरा पर्दा भी टांग लिये हैं ताकि क्रोमा काटा जा सके।इधर रविश कुमार ने चांद पर जाने से मना कर दिया है। उनका कहना है कि देश में गरीबी है भूखमरी है, बेरोजगारी है ऐसे में हम चांद पर क्यों जायें ? बाकी को झाड़ा फिरने जाए दिजिये। हम सिर्फ महंगाई और मोदी विरोध पर बोलेंगे।

मायावती बोली हैं कि चांद पर बाबा साहेब की जो तस्वीर है उसे हटाने को ये रोवर उतारा जा रहा है।

अभी अभी एबीपी न्यूज में टपके चिपके संदीप चौधरी इतना जोर जोर से चिल्ला कर इस अभियान को भाजपाई अभियान बताये कि ऊपर चांद की सतह में एक और गड्ढा बन गया है जिसे दिखा कर चित्रा त्रिपाठी बोली हैं कि यहीं पर विक्रम को लैंड करना था, पर इस गड्ढे के चलते कहीं और प्लेन जगह देखना होगा।

इस खबर को देखकर मल्लिकार्जुन खड़गे ने गडकरी के कामकाज पर हमला किया और कहा कि ये गडकरी जहां तहां अच्छी सड़कें बनाने का दावा करते हैं, पर चांद पर अभी भी गड्ढा क्यों हैं, एक अच्छी सड़क लैंड करने लायक नहीं बना पाये।

सपा प्रवक्ता भदौरिया ने कहा है कि अगर अखिलेश यादव यूपी में सत्ता में होते तो ये धरती और चांद का इतना चक्कर ही नहीं काटना पड़ता, सपा के सुराज से ये विक्रम लैंडर सैफई से सीधे उड़ कर चांद के दक्षिण ध्रुव पर दो दिन में उतर जाता।

थरूर का कहना है कि चांद पर तो मैं सुनंदा पुष्कर संग पहले ही हो आया हूं और इस बार मेहर तरार संग जाउंगा?। ममता बनर्जी ने कहा है कि ये मोदी गोरमेंट चांद पर बिक्रम को उतार कर अच्छा नहीं किया। हमारा अल्पसंख्यक भाई लोग उसे देख कर ही एबआदत करता है, हाम कोर्ट में इसपर केस करेगा।

सुधीर चौधरी ने कहा है कि ये चांद बिल्कुल ब्लैक एंड ह्वाइट है और इसपर समय देना वक्त की बबार्दी है। नितिश बाबू कहे हैं कि हम तो पहिलहीं कहें थे कि 700 करोड़ रोपेया ये मोदी सरकार चंद्रयान पर फूंक डालेगी। इससे बेहतर होता कि सात सौ करोड़ से बिहार में एक पुल बनाया जाता जो आंधी पानी में बह जाता और लोगों को इसका वीडियो बनाने का मौका तो मिलता? केजरीवाल कहें हैं कि एक बार चांद पर विक्रम उतर जाये फिर मैं भी आता हूं, हम चांद पर रह रहे लोगों को मुफ्त में बिजली देंगें ।

देर से झारखंडी नेताओं और युवा आंदोलनकारियों का भी बयान आया है कि चांद पर सिर्फ बत्तीस के खतियानि लोगों को ही जाने देंगे। बिहारी और दिक्कू को मार भगायेंगे, वहां मूलवासी जतरा मेला आयोजित करेंगे।

हमारे देश की प्रकृति और प्रवृति पर यह लिखा गया मेरा आलेख जब तक छपेगा हम विश्व में इतिहास रच चुके होंगे। और इस इतिहास से सांप भिखारी और साधु के देश की छवि रचने वालो का छाती खुशी से फट जायेगा। यह नया भारत है आप सकरात्मक होकर सोच ले वैसे सभी को इस विश्व कीर्तिमान रचने पर बधाई हमारे वैज्ञानिकों को विशेष बधाई और शुभकामना, चलो शुक्र पर।

संस्थापक
स्व. डॉ अभय कुमार सिंह
वृन्दा मीडिया पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक, प्रकाशक
मंजू सिंह
द्वारा चिरौंदी, बोड़ेया रोड, रांची (झारखंड) से मुद्रित एवं प्रकाशित।
संपादक
अविनाश ठाकुर*
फोन : 94313-55233
पिनः -834006
e-mail
khabarmantra.city@gmail.com
R.N.I No.
JHAHIN/2013/51797
*पीआरबी एक्ट के अंतर्गत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी। प्रकाशित खबरों से संबंधित किसी भी विवाद का निपटारा रांची न्यायालय में ही होगा।

स्पीड न्यूज

गोला में हाइवा की चपेट में आने से कांग्रेसी नेता एतवा मरांडी की मौत

गोला। गोला कालीनाथ चौक के समीप मंगलवार शाम को हाइवा की चपेट में आकर बाईक सवार कांग्रेस नेता की मौत हो गई। कोनारडीह गांव निवासी एतवा मरांडी(64वर्ष) स्पलेंडर बाईक नंबर जेएच 01 एटी 5117 पर सवार होकर गोला से घर जा रहे थे। इसी क्रम में भारत माला परियोजना के तहत किये जा रहे सड़क निर्माण कार्य में डस्ट अनलोड कर गोला के बरवाटांड़ की ओर से लौट रहे हाईवा नंबर जेएच 10 सीएच 0115 ने अपने चपेट में ले लिया। जिससे वो गंभीर रूप से घायल हो गये। जिसके बाद स्थानीय लोगों ने 108 वाहन की मदद से सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र गोला में भर्ती कराया। जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

बनाहपा में अखंड कीर्तन आयोजित

हजारीबाग। सदर प्रखंड अंतर्गत हुटपा पंचायत के बनाहपा में 24 घंटे का श्री हरि अखंड कीर्तन का आयोजन किया गया। यह कीर्तन बुधवार दोपहर 2:00 बजे से शुरू हुआ वही गुरुवार दोपहर 2:00 बजे इसका समापन होगा। इस हरि कीर्तन में लोकेश सिंह और उनकी धर्मपत्नी मुख्य पुजारी बने वहीं सहयोगी पूजारी के रुप में बसंत वर्मा, रघु गोप, राजेंद्र गुप्ता इत्यादि शामिल हुए। इस कीर्तन में कई गांव जैसे बनाहपा, हुटपा, मेरु ,महेशरा, जिनगा, रामदेव खरिका, कवालु, सरौनी, डूमर, चुटियारो, चाया, तरवा, खरवा, लखैया इत्यादि गांव शामिल होंगे।

झामुमो ने लिये कई निर्णय

बड़कागांव। झामुमो की संयोजक मंडली की बैठक बड़कागांव में हुई। इसकी अध्यक्षता बड़कागांव मुख्य संयोजक संजय सिंह ने की कार्यक्रम के झामुमो केंद्रीय सचिव संजीव कुमार बेदिया एवं जिला संयोजक मंडली सदस्य नीलकंठ महतो उपस्थित हुए।श्री बेदिया ने कहा कि झारखंड में हेमंत सोरेन की सरकार के नेतृत्व में झारखंडी की हित और कल्याण के लिए झारखंड सरकार काम कर रही है। छात्र-छात्राओं एवं महिलाओं के लिए बिभिन्न योजनाएं चलाई जा रही है। मौके पर उपस्थित संयोजक मंडली सदस्य संजय सिंह, झमन प्रसाद, हेमंत भुईयां, समेत दर्जनों महिला पुरुष शामिल थे।

विधायक ने किया धोती-साड़ी का वितरण

बरही। केदारूत पंचायत के ग्राम देवचन्दा प्रगतिशील महिला मंडल जन वितरण प्रणाली दुकान में सोना सोबरन योजना के तहत धोती साड़ी का वितरण किया। वितरण समारोह में विधायक उमाशंकर अकेला मौजूद रहे। इस अवसर पर विधायक ने कहा कि हेमंत सरकार की यह एक महत्वकांक्षी योजना है। जिसमें हर कार्डधारी को धोती साड़ी अथवा लूंगी साड़ी मात्र 10 रुपया में उपलब्ध कराया जा रहा है। इसका लाभ ग्रामीणों को लगातार मिल रहा है। मुखिया सरिता देवी ने कही कि राज्य सरकार इस महत्वाकांक्षी योजना को गरीबों तक पहुंचाने का काम कर रही है। साथ ही सरकार गरीबों को सस्ते दाम पर राशन भी उपलब्ध करा रही है, जिसका लाभ गरीबों को मिल रहा है। मौके पर एमओ मुकेश कुमार सिंह, मुखिया सरिता देवी, कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष अब्दुल मनान वारसी, विधायक प्रतिनिधि सुनील साहू, मुखिया प्रतिनिधि विशेश्वर यादव, राजू राणा, पंचायत समिति सदस्य विकास सिंह सहित दर्जनों ग्रामीण मौजूद थे।

एनटीपीसी ने बाढ़ भेजा कोयला

केरेडारी। एनटीपीसी चट्टी बरियातु कोयला खनन परियोजना ने बुधवार को कटकमसांडी साइडिंग से 100वीं कोयला रेक को एनटीपीसी बाढ़ सुपर थर्मल पावर स्टेशन के लिए रवाना किया गया। परियोजना प्रमुख श्री अनिमेष जैन ने 100वीं कोयला रेक को हरी झंडी दिखाई एवं इस उपलब्धि के लिए सभी प्रेषण विभाग के अधिकारियों को बधाई दी। इस उपलब्धि का पूरा श्रेय एनटीपीसी की सीबी टीम एवं जिला प्रशासन को दिया। इस अवसर पर श्री जैन ने कहा कि टीम सीबीसीएमपी ने कड़े लक्ष्य निर्धारित करने और टीम भावना के साथ उन लक्ष्यों को हासिल करने की संस्कृति विकसित की है। इस अवसर पर परियोजना के अपर-महाप्रबंधक (प्रेषण) पी.के रावत, उप-महाप्रबंधक श्री प्रवीन अखौरी, मनोज बैहरा, एवं प्रेषण विभाग के सभी अधिकारियों एवं रेलवे के वरिष्ठ अधिकारीयों ने उपस्थित हो कर कार्यक्रम को सफल बनाया।

फसल राहत फॉर्म के लिए उमड़ी भीड़

भुरकुंडा (रामगढ़)। झारखंड फसल राहत फर्म भरने के लिए बुधवार को चिकोर पैक्स कार्यालय भुरकुंडा में किसानों की भारी भीड़ उमड़ी। मालूम हो कि झारखंड सरकार द्वारा अल्प बारिश से हो रहे फसलों के नुकसान के लिए किसानों से अनलाइन आवेदन भराया जा रहा है। जिसमें 30 प्रतिशत क्षति होने पर किसानों को प्रति एकड़ 3 हजार की राशि दी जायेगी। पतरातू प्रखंड के किसानों की सुविधा को ले चिकोर पैक्स कार्यालय भुरकुंडा में शिविर लगाकर किसानों से आवेदन प्राप्त कर अनलाइन फर्म भरा जा रहा है। पैक्स ने बताया कि अभी तक 100 किसानों का आवेदन लिया जा चुका है। जबकि 85 किसानों का झारखण्ड फसल राहत का ऑनलाइन फर्म भरा गया है।

कावंड़ियों का जत्था गया बाबानगरी

भुरकुंडा (रामगढ़)। पवित्र श्रावण माह के पावन अवसर पर भोले बाबा के दर्शन के लिए बुधवार को भुरकुंडा पटेल से कांवड़ियों का जत्था देवघर के लिए रवाना हुआ। इस दौरान क्षेत्रवासियों ने हर-हर महादेव सहित अन्य आराध्य देवी-देवताओं के जयकारों के साथ कांवड़ियों को रवाना किया। इससे पूर्व कांवड़ियों ने पटेलनगर स्थित शिव मंदिर में पूजा अर्चना कर यहां से देवघर के लिए रवाना हुए। बताया गया की सुलतान गंज से जल भरकर 105 किलो मीटर पैदल चलते हुए शनिवार को बाबा नगड़ी देवघर के मंदिर में जलाभिषेक करेंगे। साथ ही शनिवार को ही बासुकीनाथ मंदिर में भी जलाभिषेक करेगे। देवघर रवाना होने वालों में रवि कुमार, विनोद कुमार, दीपक कुमार, आनंद कुमार, छोटू कुमार, राजू कुमार, दीपक गोस्वामी आदि शामिल हैं।

सड़क हादसे में सीसीएल कर्मी की मौत

कुजू। माईल रजरप्पा के समीप अज्ञात वाहन बाइक को चपेट के आने के बाद मुरपा निवासी समाजसेवी सह सीसीएल कर्मी नरेश महतो (55वर्ष) का निधन मंगलवार की रात मेडिका,रांची में इलाज के दौरान हो गया। उनके निधन से कुजू में शोक की लहर है। निधन के बाद परिजननों का रो-रो कर बुरा हाल है। निधन की खबर पाकर उनके आवास पर शोक संवेदना प्रकट करने वालों की भीड़ लग गई। नरेश महतो कुजू पूर्वी पंचायत सदस्य ईश्वर महतो के पिता थे।

चंद्रयान-3 से जुड़ा है भुरकुंडा का आदित्य

कमलेश कुमार मेहता

- 2018 में इसरो में वैज्ञानिक एससी में किया था ज्वाइन
- सैटेलाइट के ट्रैकिंग एंड कमांडेशन में 14 जुलाई से बेंगलुरु में है कार्यरत

भुरकुंडा (रामगढ़)। बुधवार को देश के साथ-साथ रामगढ़ जिले के जवाहर नगर भुरकुंडा के लिए भी गौरव की बात है। जवाहर नगर भुरकुंडा निवासी सुबोध कुमार सिन्हा व उषा सिन्हा का मेधावी पुत्र आदित्य राज सिन्हा बचपन से ही वैज्ञानिक बनने का ख्वाब देख रखा था जो पूरा भी हुआ। अब आदित्य राज सिन्हा चंद्रयान-3 के मिशन से जुड़े वैज्ञानिकों की टीम का हिस्सा है। बुधवार को भारत का मून मिशन अर्थात् चंद्रयान-3 की लैंडिंग है। आदित्य राज सिन्हा द्रव नोदण प्रणाली केन्द्र बैंगलुरू में गुणवत्ता वैज्ञानिक है।

सुबोध कुमार सिन्हा व उषा सिन्हा का पुत्र आदित्य राज सिन्हा उर्फ सोनल ने कैथोलिक आश्रम स्कूल पटेलनगर भुरकुण्डा से 10वीं करने के बाद गॉसनर कॉलेज रांची से आईएसी की परीक्षा पास की। इसके बाद वाईसीसी नागपुर से इंजीनियरिंग की। वर्ष 2018 में इसरो में वैज्ञानिक एससी के रूप में ज्वाइन किया था।

वर्तमान में आदित्य प्रमोशन के साथ वैज्ञानिक एसडी के रूप में बैंगलुरू में कार्यरत है। आदित्य चंद्रयान-3 की लैंडिंग ऑपरेशन के लिए पिछले 14 जुलाई से ही बैंगलुरू में हैं। आदित्य ने जीएसएलभी-एम 3-4 के विभिन्न स्टेजो में फ्यूल एवं टैंक में लगे ट्रांसड्यूसर/सेंसर को सर्टिफाई एंड क्लियरेंस दिया है। जीएसएलभी-एम 3-4 रॉकेट के अलावा चंद्रयान-3 को मून ओरबीट में लेकर जाने वाले प्रोपुलशन मॉड्यूल में लगे सभी ट्रांसड्यूसर/सेंसर की गुणवत्ता का मूल्यांकन करके अंतिम प्रयोग के लिए सर्टिफाई एंड क्लियरेंस प्रदान किया है। आदित्य राज सिन्हा वर्ष 2018 से 2020 तक द्रव नोदण प्रणाली केंद्र तिरूवंतपुरम में कार्यरत थें। चंद्रयान-3 रॉकेट एवं सेटेलाइट में लगे सेंसर की स्थिति जानने के लिए समय-समय पर इंसट्रैक्ट (जहां से सेटेलाइट को ट्रैकिंग एंड कमांडेशन में) 14 जुलाई 2023 से 23 अगस्त तक कार्यरत हैं। चंद्रयान-3 के सफल लैंडिंग की कामना करते हुए भुरकुंडा कोयलांचलवासियों सहित कायस्थ महापरिवार ने आदित्य राज सिन्हा को इस मिशन से जुड़ने के लिए बधाई दी है।

आदित्य की पत्नी सिनोप्सिस कंपनी में एप्लीकेशन इंजीनियर : पिता सुबोध सिन्हा व माता उषा सिन्हा बिजनेश मैन, दो बहने ज्योति व अंजली हैं शिक्षिका, तीसरी बहन मंजूला गौरव उड़ीसा ग्रामीण बैंक में क्लर्क पद पर हैं कार्यरत, पूजा सिन्हा प्रतियोगी परीक्षा की कर रही तैयारी।

इसरो में टीम के साथ भुरकुंडा जवाहर नगर का लाल आदित्य राज सिन्हा।

पढ़े-लिखे परिवार से ताल्लुक रखने वाला वैज्ञानिक आदित्य राज सिन्हा अपने माता-पिता सहित चार बहनो का पूरा ख्याल रखने वाला भाई है।

वहीं आदित्य की पत्नी सुमन पंडित भी बैगलुरू में सिनोप्सिस कंपनी में एप्लीकेशन इंजीनियर है। जबकि आदित्य के पिता सुबोध कुमार सिन्हा व माता उषा सिन्हा बिजनश मैन हैं। वहीं आदित्य की बड़ी बहन ज्योति सिन्हा गया के टेकार स्थित उत्क्रमित मध्य विद्यालय में शिक्षिका व मंझली बहन मंजूला गौरव उर्फ निक्की उड़ीसा ग्रामीण बैंक में क्लर्क पद पर पदस्थापित हैं। जबकि संझली बहन पूजा सिन्हा प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में जुटी हैं। वहीं छोटी बहन अंजली सिन्हा उर्फ मोंटी ए ला एंगलाइलज सीनियर सेंकेडरी स्कूल बिरसा चौक भुरकुंडा में अंग्रेजी की शिक्षिका हैं।

चंद्रयान-3 के सफल लैंडिंग को ले भुरकुंडा में अखंड हरिकीर्तन

भुरकुंडा (रामगढ़)। इच्छा पुरण बालाजी हनुमान मंदिर सह खोपडिया बाबा धर्मशाला भुरकुंडा बाजार में बुधवार को चंद्रयान तीन के सफल लैंडिग को लेकर अखंड कीर्तन हुआ। हरिकीर्तन मे लोगो कें हरे राम-हरे कृष्ण, श्रीराम जय राम जय राम के भक्ति जयकारों से भुरकुंडा बाजार गूंजता रहा। इस दौरान लोगों ने अराध्य देवी देवताओं से चंद्रयान-3 के सफल लैंडिग की कामना की। हरिकीर्तन में सुनील साव, बृजनंदन दास, शम्भू ब्यास, अभिषेक मिश्रा, विकास सोनी, अशोक साव, नंदे राम, विक्कू रजक सहित दर्जनों लोग शामिल थे।

हजारीबाग प्रेस क्लब सदस्यों को करेगा आर्थिक सहायता

जल्द होगा सामूहिक स्वास्थ्य बीमा

बैठक में प्रेस क्लब के पदाधिकारी।

खबर मन्त्र संवाददाता

हजारीबाग। पत्रकारों के हित में कल्याणकारी योजनाओं के तहत प्रेस क्लब, हजारीबाग ने अपने सदस्यों को आर्थिक मदद करने का निर्णय लिया है। इस संबंध में प्रेस क्लब, हजारीबाग के अध्यक्ष उमेश प्रताप की अध्यक्षता में कार्यकारिणी की हुई बैठक में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि किसी बीमारी में निजी अस्पताल या नर्सिंग होम में कमसे कम 24 घंटे तक जो सदस्य भर्ती होंगे उन्हें तत्काल सहायतार्थ 5000 रुपए का मदद करेगा। दुर्घटना में घायल होने पर प्लास्टर कराने की स्थिति में तत्काल 2000 रुपए दिया जाएगा।

सचिव मिथिलेश मिश्र ने बताया कि गंभीर बीमारी से ग्रसित प्रेस क्लब के सदस्यों को सरकारी सहायता भी दिलाने का प्रयास किया जाएगा। कार्यकारिणी के निर्णय पर जरूरत के अनुसार क्लब की ओर से एक से पांच हजार रुपए की मदद दी जाएगी। इसके लिए प्रखंड कमेटी के अनुमोदन के उपरांत जिला कमेटी निर्णय लेगी। उस सदस्य को इससे संबंधित जारी आवेदन पत्र भरना अनिवार्य होगा। प्रेस क्लब के सभी सदस्यों का ग्रुप बीमा भी कराने पर सहमति बनी है।

प्रेस क्लब, की ओर से लिए गए इस महत्वपूर्ण निर्णय पर उपाध्यक्ष उमेश राणा, अभय सिंह, संयुक्त सचिव देव नारायण, नवीन सिन्हा, कोषाध्यक्ष अमरनाथ पाठक, कार्यसमिति सदस्य समीम अहमद, बबलू कुमार, अमूल्य चंद्र पांडेय, निरंजन कुमार, प्रमोद खंडेलवाल, अजय निराला, प्रकाश पांडेय, दीपक कुमार, प्रमोद उपाध्याय, अनवर फिदवी ने प्रसन्नता जहीर करते हुए पत्रकार हित में उठाया गया महत्त्व पूर्ण कदम बताया है।

सिकनी : शमशाद अंसारी की हत्या में पांच गिरफ्तार

खबर मन्त्र संवाददाता

रामगढ़। एसपी पीयूष पांडे ने बुधवार को बताया कि मंगलवार को 5:00 बजे पुलिस को सूचना मिली कि कुछ व्यक्तियों द्वारा रजरप्पा थाना के सिकनी में शमशाद अंसारी उम्र 50 वर्ष की कुछ लोगों द्वारा मारपीट कर जख्मी कर दिया गया। जिसकी सूचना कुछ लोगों ने रजरप्पा थाना को दी। जिसे पुलिस द्वारा इलाज के लिए सदर अस्पताल ले जाया गया। वहां इलाज के दौरान चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। एसपी ने बताया कि मामले को लेकर रजरप्पा थाना में कांड संख्या 135/2023 दिनांक 23,08,2023,धारा 302/34 भादवि के तहत मामला दर्ज कर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी रामगढ़ के नेतृत्व में टीम का गठन कर छानबीन शुरू की गई। बताया कि टीम ने मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए 5 लोगों को गिरफ्तार कर लिया। जिनके नाम हैं पुरन महतो, भुनेश्वर महतो, हीरालाल महतो,बालेश्वर महतो, अरविंद महतो सभी ग्राम सिकनी,थाना रजरप्पा, जिला रामगढ़ के रहनेवाले हैं। एसपी ने बताया कि कुछ समाचार पत्रों द्वारा इस घटना को मॉब लिंचिंग करार देने की कोशिश की गई। जो कि अनुचित है। क्योंकि इस घटना को कुछ अपराधिक किस्म के लोगों ने अंजाम दिया है। इसलिए यह मॉब लिंचिंग नही है। छापेमारी दल में अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी किशोर कुमार रजक, थाना प्रभारी हरिनंदन सिंह, पुनि गुलशन भेगरा, पुअनि जय प्रकाश शर्मा, पुअनि सोनू कुमार, मपुअनि जयश्री वर्मा आदि शामिल थे।

गिरफ्तार आरोपियों के साथ एसपी व अन्य।

तुलसी जयंती पर निबंध सुलेख और चित्रकला प्रतियोगिता

हजारीबाग। सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कुम्हारटोली में समारोहपूर्वक तुलसी जयंती मनाई गई। विद्यालय के सचिव संजय उपाध्याय व प्राचार्य दिनेश कुमार मिश्र ने संयुक्त रूप से गोस्वामी तुलसी दास की प्रतिमा पर दीप प्रज्वलन और पुष्पार्चन किया। सचिव संजय उपाध्याय ने गोस्वामी तुलसी दास के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए उनके चरित्र को आत्मसात करने का मंत्र भैया - बहनों को दिया। प्राचार्य दिनेश कुमार मिश्र ने भैया बहनों को संबोधित करते हुए कहा की गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस में अपने प्रभु श्रीराम के माध्यम से संपूर्ण विश्व में सामाजिक समरसता लाने का प्रयास किया है। रामचरित मानस को विश्वबन्धुत्व रखने वाली

कालजयी कृति बताया।इस अवसर पर विद्या विकास समिति , झारखंड के तत्वाधान में प्रांतीय सुलेख, चित्रकला और निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। साथ हीं भारत विकास परिषद में सामूहिक गीत प्रतियोगिता में चयनित बहनों को विद्यालय के सचिव के द्वारा प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिन्ह देकर पुरस्कृत किया गया। साथ हीं विद्यालय में चंद्रयान - 3 के सफल लैंडिंग के लिए भैया बहनों ने एटीएल सभागार में मंत्रोच्चारण के साथ हवन - पूजन किया।

चंद्रयान 3 की लैंडिंग को लेकर बच्चों ने की प्रार्थना

बरही। पंचमाधव स्थित आइलेक्स पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने चंद्रयान-तीन की लैंडिंग की ऐतिहासिक घटना का लाइव देखने के लिए अत्यंत ही उत्साहित है।बताते चलें कि सीबीएसई से मान्यता प्राप्त पंचमाधव स्थित आइलेक्स पब्लिक स्कूल के विभिन्न ब्रांचों में चंद्रयान-तीन की सफल लैंडिंग को लेकर बच्चों ने प्रार्थना सभा का आयोजन किया।भारत द्वारा विज्ञान के सफल प्रयोग के लिए भारत का नाम सिर्फ धरती पर नहीं बल्कि पूरे अंतरिक्ष जगत में गौरव का क्षण होगा।विद्यालय निदेशक शैलेश कुमार ने कहा कि चंद्रयान-3 अपने कक्ष पर सफलता पूर्वक लैंडिंग हो तथा विश्व में भारत का सर्वोचित स्थान होगा।इसके लिए बच्चों के साथ शिक्षक भगवान से प्रार्थना और पूजा पाठ किए। उन्होंने कहा आज सभी देशवासियों को प्रार्थना करना चाहिए। किसी तरह से चंद्रयान- 3 सफल हो जाए। कहा कि अगर चंद्रयान-3 की सॉफ्ट लैंडिंग सफल रहती है तो दक्षिणी ध्रुव पर लैंड करने के मामले में भारत यह उपलब्धि हासिल करने वाला पहला देश बन जाएगा।

सदर विधायक ने लाखे मंडप को दिया माइक सेट

खबर मन्त्र संवाददाता

हजारीबाग। सदर विधायक मनीष जायसवाल ने नगर निगम क्षेत्र के वार्ड संख्या 10 स्थित ग्राम लाखे स्थित लाखे मंडप के लिए स्थानीय लोगों के आग्रह पर बुधवार को माइक सेट भेंट किया। मंदिर परिसर में भजन- कीर्तन करने वाले दर्जनों महिला श्रद्धालुओं के साथ स्थानीय भाजपा कार्यकर्ता सह समाजसेवी रोहित राम विधायक सेवा कर्यालय पहुंचे और लाखे बगीचा स्थित मंदिर परिसर के जमीन को मुक्त कराने का आग्रह किया साथ ही मंदिर के लिए एक माइक सेट उपलब्ध कराने का आग्रह किया। विधायक मनीष जायसवाल के निर्देश पर तत्काल उनके मीडिया प्रतिनिधि रंजन चौधरी और भाजपा नगर पूर्वी मंडल अध्यक्ष सह पूर्व वार्ड पार्षद बबन गुप्ता

ने लाखे बगीचा स्थित मंडप पहुंचकर श्रद्धालुओं को माइक सेट सौंपा। विधायक मनीष जायसवाल की ओर से दिए गए माइक सेट में एम्प्लीफायर और चोंगा युक्त माइक सेट उपलब्ध है। लाखे वासियों ने विधायक मनीष जायसवाल के द्वारा त्वरित संज्ञान लेते हुए इस भेंट के लिए खुशी जताई और उनके प्रति आभार जताते हुए धन्यवाद दिया। मौके पर स्थानीय भाजपा कार्यकर्ता रोहित राम, सरिता देवी, सुनीता देवी, देवंती देवी, मालती देवी, उषा देवी, मनोरमा देवी, पार्वती देवी,सुमा देवी, सोना देवी,गुंजा देवी, अनीता देवी, शांति देवी, लालमनि देवी, सरिता देवी, अनीता देवी, प्रसाद राम, गणेश राम, राजकुमार साव, दीपक पासवान, बिंदिया देवी, मालती देवी, अनीता देवी, मालती देवी, सीता देवी सहित अन्य लोगों ने भगवत जयकारा के साथ विधायक जिंदाबाद के नारे- जयकारे भी लगाए।

कार्यपालक अभियंता सह राजमार्ग पदाधिकारी का कार्यालय
पथ निर्माण विभाग, पथ प्रमण्डल, कोडरमा

आवश्यक सूचना

सर्वसधारण को सूचित किया जाता है कि अद्यतन भू-अर्जन नक्शा के अनुसार निम्नलिखित पथों के Right of way (ROW) में बिना पूर्वानुमति के किसी भी प्रकार का निर्माण कार्य अवैद्य माना जायेगा एवं इसे अतिक्रमण मानते हुए अवैद्य निर्माण को हटाने हेतु झारखण्ड राजमार्ग अधिनियम 2005 के अनुसार नियमसम्मत कार्रवाई की जायेगी। ज्ञातव्य है कि पथ में जमीन भविष्य में पथ के विस्तार हेतु सुरक्षित है।

अतः इस सूचना के माध्यम से सभी लोगों को निदेशित किया जाता है कि सूचना प्रकाशन की तिथि से 15 दिनों के अन्दर अपना-अपना अवैद्य निर्माण पथ की जमीन से हटा लें अन्यथा बाध्य होकर विशेष मुहिम चलाकर अतिक्रमण हटाया जायेगा एवं इसमें आनेवाले व्यय की राशि संबंधित व्यक्ति से वसूल की जायेगी।

1. कोआर कोडरमा पथ(पथ की लम्बाई कि0मी0 38.00 से 79.00 कि0मी)
2. ढाब-पिहरा-सतगाँवा पथ(पथ की लम्बाई कि0मी0 0.00 से 21.325 कि0मी)
3. पातालडीह-देवरी-गाँवा-सतगाँवा पथ(पथ की लम्बाई कि0मी0 0.00 से 30.567 कि0मी)
4. डोरण्डा-शंख-भेन्ड्रो-पटना पथ(पथ की लम्बाई कि0मी0 0.00 से 22.40 कि0मी)

कार्यपालक अभियंता-सह-राजमार्ग पदाधिकारी
प0नि0वि0,पथ प्रमण्डल, कोडरमा।

PR.NO.305328 Road(3-24):D

झारखण्ड राज्य ग्रामीण पथ विकास प्राधिकरण (JSRRDA)
एफ०एफ०पी० भवन, तृतीय तल्ला, धूर्वा, राँची -834004, झारखण्ड

अल्पकालीन ई- पुनःनिविदा आमंत्रण सूचना (2nd Call)
PR No. - 303538 Dated : 25.07.2023

अल्पकालीन ई-पुनःनिविदा संख्या:- **54/2023-24** दिनांक :- 22.08.2023

मुख्य अभियंता, जे०एस०आर०आर०डी०ए०, राँची द्वारा निम्नविवरण के अनुसार e-procurement पद्धति से पुनःनिविदा आमंत्रित की जाती है।

क्र०सं०	आईडेन्टीफिकेशन संख्या / पैकेज संख्या		कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि		कार्य समाप्ति की अवधि
				अंक में (लाख में)	अक्षर में (रुपये में)	
1	2		3	4	5	6
1	JH-M-KOD-01 /2023-24	1	गोदवाडीह से गोलबाड़ाब तक पथ का विशेष मरम्मति कार्य (लं० - 4.200 कि०मी०)	1479.952	चौदह करोड़ उनासी लाख पंचानबे हजार दो सौ रू० मात्र	09 महीना
		2	मधुबन से रूपनडीह तक पथ का विशेष मरम्मति कार्य (लं० - 2.005 कि०मी०)			
		3	डुमरी से राजघट्टी पथ का विशेष मरम्मति कार्य (लं० - 2.025 कि०मी०)			
		4	बदाल बजरंगबली मंदिर मोड़ से आर०ई०ओ० रोड भाया मोहनरिया पथ का विशेष मरम्मति कार्य (लं० - 2.930 कि०मी०)			
		5	योगीडीह पुल से कैरी पथ का विशेष मरम्मति कार्य (लं० - 3.650 कि०मी०)			
		6	नावाडीह से जोड़ासीमर तक पथ का विशेष मरम्मति कार्य (लं० - 5.000 कि०मी०)			
		7	जोड़ासीमर से पतरिया पी०डब्ल्यू०डी० पथ का विशेष मरम्मति कार्य (लं० - 4.000 कि०मी०)			
		8	मसनोडीह पी०डब्ल्यू०डी० रोड से सहदेव मोदी के घर तक पथ का विशेष मरम्मति कार्य (लं० - 1.000 कि०मी०)			
		9	खुटा से अम्बाबाद भाया घुरमुरिया पथ का विशेष मरम्मति कार्य (लं० - 4.900 कि०मी०)			
		10	आर०ई०ओ० रोड U.M.H.S पथलडीहा से सोन्देडीह आर०सी०डी० रोड भाया सलैया अक्तो नदी तक पथ का विशेष मरम्मति कार्य (लं० - 2.780 कि०मी०)			
2	JH-M-KOD-02 /2023-24	1	कटहाडीह से कुशुमडीह तक पथ का विशेष मरम्मति कार्य (लं० - 4.920 कि०मी०)	1120.091	ग्यारह करोड़ बीस लाख नौ हजार एक सौ रू० मात्र	09 महीना
		2	आर०सी०डी० रोड जयनगर से इरगोबाद भाया जयनगर ब्लॉक ऑफिस तक पथ का विशेष मरम्मति कार्य (लं० - 2.700 कि०मी०)			
		3	बेको से नाईटाड़ पथ का विशेष मरम्मति कार्य (लं० - 5.700 कि०मी०)			
		4	तेतरौन से बदुलिया तक पथ का विशेष मरम्मति कार्य (लं० - 7.050 कि०मी०)			
3	JH-M-KOD-03 /2023-24	1	दरदाही मोड़ से पिपचो (चैनेज-0.00 कि०मी० से 4.550 कि०मी०) तक पथ का विशेष मरम्मति कार्य (लं० - 4.550 कि०मी०)	1066.837	दस करोड़ छियासठ लाख तिरासी हजार सात सौ रू० मात्र	09 महीना
		2	बरियारडीह पी०डब्ल्यू०डी० रोड से परसाबाद तक पथ का विशेष मरम्मति कार्य (लं० - 2.550 कि०मी०)			
		3	ग्राम कटाही से बांसडीह भाया नीमाडीह तक पथ का विशेष मरम्मति कार्य (लं० - 3.700 कि०मी०)			
		4	आर०डब्ल्यू०डी० रोड लालगढ़ से बमनडीह भाया बरवाडीह तक पथ का विशेष मरम्मति कार्य (लं० - 4.300 कि०मी०)			
		5	चैनपुर (रायडीह मोड़) से रायडीह तक पथ का विशेष मरम्मति कार्य (लं० - 3.900 कि०मी०)			
		6	आर०डब्ल्यू०डी० रोड बाराडीह से मरकच्चो प्रखण्ड भाया पपहरा, धुवाडीह तक पथ का विशेष मरम्मति कार्य (लं० - 4.200 कि०मी०)			

2. वेबसाईट में पुनःनिविदा प्रकाशन की तिथि:- **24.08.2023**
3. ई- पुनःनिविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समय:- **04.09.2023** अपराह्न 5.00 बजे तक।
4. **(क)** मुख्य अभियंता, जे०एस०आर०आर०डी०ए०, राँची, एफ०एफ०पी० भवन, तृतीय तल्ला, धूर्वा, राँची -834004, झारखण्ड **(ख)** जिला नियंत्रण कक्ष, **राँची** अथवा **(ग)** जिला नियंत्रण कक्ष, **कोडरमा** में से किसी भी कार्यालय में पुनःनिविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि जमा करने की अंतिम तिथि एवं समय:- **05.09.2023** अपराह्न 3.30 बजे तक।
5. पुनःनिविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि स्पीड पोस्ट के माध्यम से भी मुख्य अभियंता, जे०एस०आर०आर०डी०ए०, राँची, एफ०एफ०पी० भवन, तृतीय तल्ला, धूर्वा, राँची -834004, झारखण्ड को भेजा जा सकता है। यह निविदाकार की जिम्मेवारी होगी कि स्पीडपोस्ट के माध्यम से भेजा जाने वाला पुनःनिविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि निर्धारित तिथि एवं समय (**05.09.2023** अपराह्न 3.30 बजे तक) से पूर्व प्राप्त हो जाय। अंतिम तिथि एवं समय से पूर्व प्राप्त पुनःनिविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि पर ही विचार किया जायेगा।
6. पुनःनिविदा खोलने की तिथि एवं समय:- **06.09.2023** अपराह्न 3.30 बजे।
7. पुनःनिविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का नाम एवं पता:- मुख्य अभियंता का कार्यालय, जे०एस०आर०आर०डी०ए०, राँची, एफ०एफ०पी० भवन, तृतीय तल्ला, धूर्वा, राँची -834004, झारखण्ड।
8. ई- पुनःनिविदा प्रकोष्ठ का दूरभाष सं०- .....
9. पुनःनिविदा शुल्क झारखण्ड राज्य में अवस्थित भारतीय स्टेटबैंक/राष्ट्रीयकृत बैंक/अनुसूचित बैंक द्वारा निर्गत बैंकड्राफ्ट के रूप में जो कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमण्डल, **कोडरमा** के पक्ष में एवं **कोडरमा** में भुगतेय जमा करना होगा जो लौटाया नही जायेगा।

विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाईट **jharkhandtenders.gov.in** में देखा जा सकता है।

मुख्य अभियंता
जे०एस०आर०आर०डी०ए०, राँची

PR305332 (Rural Work Department)23-24*D

कृषक उवि के शिक्षकों पर तीन बच्चियों की बेरहमी से पिटाई करने का लगा आरोप

एक छात्रा ने खायी कीट नाशक की दवा, रिंची अस्पताल में

खबर मन्त्र संवाददाता

रातू। कृषक उच्च विद्यालय गड़री गुड्डू प्रबंध समिति के सचिव अशोक महतो, प्राचार्या सीमा कुमारी, उप प्राचार्या नेलसा स्वेता तिर्की व निरंजन महतो के द्वारा बगैर बताये घर से स्कूल जाने के बहाने पिकनिक मनाने गये तीन छात्रा समेत नौ छात्रों को उनके अभिभावकों की मौजूदगी में छड़ी से पिटाई के बाद एक छात्रा ने बुधवार की सुबह कीट नाशक दवा पी ली। रिंची हॉस्पिटल के आईसीयू में भर्ती 13 वषीर्या साक्षी कुमारी जिंदगी और मौत से जूझ रही है। वह हिंसरी निवासी धनसु महतो की पुत्री है। जबकि, तिगरा बुचीडाड़ी के मंगरा उरांव की पुत्री 15 साल की असिता और 11 की रिया कुमारी को सीएचसी में इलाज के बाद चिकित्सकों ने छुट्टी दे दी। घटना 22 अगस्त की है। मामले को लेकर साक्षी की मां सुमन देवी और मंगरा की पत्नी कमला उराईन ने आरोपियों के खिलाफ रातू थाने में लिखित शिकायत की है। पुलिस इसकी जांच कर रही है।

साक्षी

असिता

रिया कुमारी

फोन रिसीव नहीं किया

प्राचार्या सीमा कुमारी ने असिता और साक्षी को फोन कर स्कूल नहीं आने की वजह जाननी चाही। लेकिन, दोनों ने कोई जवाब नहीं दिया। दिन के ढाई बजे छह छात्र और तीनों छात्रायें स्कूल पहुंचे। सभी के माता-पिता को स्कूल बुलाया गया। कुछ आये और कई नहीं भी आ सके। जो आये उनकी मौजूदगी में ही बच्चे-बच्चियों को छड़ी से पिटाई की गयी।

पिकनिक गये थे लापुंग

स्कूल के बहाने घर से ड्रेस पहनकर निकले छात्र-छात्राओं ने पूछताछ के दौरान बताया कि वह पिकनिक मनाने लापुंग के घघारी गये थे। स्कूल से जब फोन गया, तो घबराकर लौट आये। विद्यालय प्रबंधन ने चेतावनी देकर अभिभावकों के साथ उन्हें घर भेज दिया। रात में घर वालों ने साक्षी को फटकार लगायी। सुबह उसे स्कूल आना था।शिक्षकों के समक्ष मुंह कैसे दिखायेगी, यह सोच उसने घास मारने की दवा पीकर आत्महत्या करने की कोशिश की।

जानें क्या है मामला

असिता व साक्षी दसवीं और रिया कुमारी छठवीं की छात्रा हैं। मंगलवार की सुबह साढ़े आठ बजे असिता को स्कूल में देखा गया था। वह ड्रेस पहनी हुयी थी। शिक्षक ने हाजिरी ली, तो वह अनुपस्थित पायी गयी। साक्षी और रिया के अलावा स्कूल के छह छात्र भी क्लास से नदारत थे। प्रबंधन ने उनके गार्जियन से संपर्क किया। परिजनों ने बताया कि बच्चे स्कूल गये हैं। उन्हें बच्चों के स्कूल में न होने की जानकारी दी गयी।

स्पीड न्यूज

रातू : पुलिस ने अपहरण के आरोपी को भेजा जेल

रातू। पुलिस ने थाना कांड संख्या 328/23 के नामजद अभियुक्त सुरज महतो को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। वह तिगरा टिकराटोली निवासी रामजय महतो का पुत्र है। उस पर 10 अगस्त को पाली में रहने वाले अमित महतो की पत्नी को प्रेम जाल में फंसा शादी का झांसा देकर अपहरण कर लिये जाने का आरोप है। उसकी गिरफ्तारी हरमू से की गयी। महिला दो बच्चे की मां है। उसे भी सकुशल बरामद कर लिया गया है।

करेंट की चपेट में आने से सीसीएल कर्मी की मौत

खलारी। खलारी थाना क्षेत्र के सुभाष नगर आवासीय कॉलोनी में रहने वाले एक सीसीएल कर्मी की करेंट लगने से मौत हो गयी। मृतक की पहचान सीसीएल एनके एरिया के चुरी परियोजना में कार्यरत मुरली महतो 55 वर्ष की रूप में की गयी है। मृतक दोपहर में घर के हीटर को अपने से बना रहे थे तभी करेंट की चपेट में आ गये। पड़ोसियों द्वारा आवाज आने पर देखा कि मुरली गिरे पड़े थे। मृतक की पत्नी अपने गांव कसमार पेटरवार बोकारो रोपा रोप कर गुरुवार को आने वाली थी। मृतक के तीन बेटा है जो रांची में रहकर पढ़ाई करता है पड़ोसियों द्वारा इसकी जानकारी खलारी पुलिस को दी गयी। घटना के बाद खलारी पुलिस घटना स्थल पर पहुच कर जांच पड़ताल कर रही है।

नि:शुल्क पशु चिकित्सा शिविर का आयोजन

तमाड़। सशस्त्र सीमा बल 26 वीं वाहिनी रांची के कमांडेंट एसडी शेरखाने के निर्देश पर मार्ग सेवा सुरक्षा बंधुत्व उद्देश्य पर जी समवाय सशस्त्र सीमा बल तमाड़ के कम्पनी कमांडर निरीक्षक सामान्य जगन्नाथ उरांव की अगुवाई में कमांडेंट पशु चिकित्सक जेके शर्मा के द्वारा मुरलीडीह, नवाडीह गांव में नागरिक जन कल्याण कार्यक्रम के तहत पशु चिकित्सा शिविर लगाया गया। शिविर में ग्रामीणों को पशुओं की दवा मुफ्त में दी गयी। इसके पश्चात झारगांव में कमांडेंट चिकित्सा एएफ खान के द्वारा जरूरतमंद ग्रामीणों के चिकत्सा एवं साथ ही मुफ्त में दवाई बांटी गयी।

डोजर ऑपरेटर की हृदयाघात से मौत

खलारी। एनके एरिया के डकरा परियोजना में डोजर ऑपरेटर के पद पर कार्यरत बिरसा लोहार की हृदय गति रुक जाने के कारण बुधवार को मौत हो गयी। हार्ट अटैक आने पर उन्हें 15 दिन पूर्व रांची के मेडिका अस्पताल में भर्ती कराया गया था। इलाज के क्रम में डाक्टरों ने उन्हें पेसमेकर लगाया था। कुछ ठीक होने के बाद से वह अपने आवास पर ही स्वास्थ्य लाभ में थे। इसी बीच दुबार गंभीर रूप से अटैक आया। परिजन उन्हें ले कर अस्पताल जाने लगे। अस्पताल पहुंचने के पहले ही उनकी मौत हो गयी। घटना के बाद परियोजना कर्मियों ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

स्वच्छ भारत मिशन फेज टू को ले समीक्षा बैठक

तमाड़। प्रखंड सभागार में बुधवार को बीडीओ गिरिजा शंकर महतो की अध्यक्षता में स्वच्छ भारत मिशन फेज टू का समीक्षा बैठक किया गया। बैठक में शौचालय सें वंचित घरो पर चर्चा किया गया। प्रखंड में चल रहे स्वच्छ भारत मिशन संबंधित योजनाओ की समीक्षा की गयी। मौके पर मुखिया, जल सहिया, पीएचडी सहायक अभियंता तेलेस्फोर मिंज, कनीय अभियंता श्रीराम उरांव, जिला समन्वयक, प्रखंड समन्वयक सहित कई अधिकारी शामिल थे।

सीएचसी प्रभारी बनी डॉ सावित्री कुजूर का स्वागत

तमाड़। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र तमाड़ की प्रभारी बनीं डॉ सावित्री कुजूर का गुलदस्ता एवं केक काट के स्वागत किया गया। प्रभारी का दायित्व लेते ही डॉ सावित्री कुजूर ने कहा की लोगो को बेहतर चिकित्सा सुविधा देना मेरा सर्वप्रथम प्रयास होगा। इस मौके पर डॉ अकमल रजा, डॉ. जफर इकबाल, बीएएम विश्वनाथ तिवारी, शंकर तिर्की, एएम ललित स्वांसी, एमटीएस हरेंद्र कटियार, एमपीडब्ल्यू जयकुमार महतो, एएनएम मनोरमा कुमारी, जया बांडो, फार्मासिस्ट रेणु मुंडा, सभी एएनएम और सभी स्वास्थ कर्मी ने नयी प्रभारी का स्वागत किया।

लड़की ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

खबर मन्त्र संवाददाता

अनगड़ा। थाना क्षेत्र अर्न्तगत महेशपुर ग्राम निवासी मोबीन अन्सारी की पुत्री नौशीन परवीन ,17 वर्ष ने बुधवार की सुबह अपने घर पर दुपट्टा से फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। बताया गया कि किसी लड़का से मोबाईल पर बात करने पर उसकी मां के द्वारा मना करने पर उसने यह कडा कदम उठाया। बताया गया कि उसकी मां कुछ समय के लिए बाहर गयी थी इसी बीच उसकी पुत्री घर के अन्दर घूस कर अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया और अस्बेसटस के पाईप पर दुपट्टा बांध कर फांसी में झूल गयी। अन्दर से दरवाजा बन्द देखकर जब अवाज लगाया तो दरवाजा नही खोला गया तब दरवाजा तोड़ कर अन्दर प्रवेष करने पर उसे फांसी पर झूलता पाया। तत्काल उसे उतारकर हास्पीटल ले जाया गया जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया । पुलिस को सूचना मिलने शव को पुलिस ने पंचनामा कर पोस्टमार्टम हेतु रिम्स रांची भेज दिया।

एक नजर में

जामुदाग गांव में किया गया पौध वितरण

सोनाहातू। प्रखंड के जामुदाग गांव में बुधवार को पंचायत समिति सदस्य रूप कुमार साहू समारोह आयोजित कर ग्रामीणों के बीच 150 फलदार ओर छायादार पौधे का वितरण किया। इस दौरान गांव के राधा रानी मंदिर परिसर और हाई स्कूल जामुदाग परिसर में पौधरोपण किया। ग्रामीणों को पौधा देकर पेड़ तैयार होने तक सुरक्षा करने की जिम्मेवारी भी दिया गया। मौके पर बुधेश्वर कोईरी, रणविजय मंडल, आदित्य कोईरी, शैलन्द्र, पप्पू, निवारन आदि मौजूद थे ।

विधायक ने किया योजनाओं का शिलान्यास

ओरमांझी। प्रखंड क्षेत्र के मंडा टाड़ डहू में मंडा खुंटा व हैदर नगर इरबा कोयलारी में पीसीसी पथ व आरसीसी ड्रेन फेवर ब्लॉक निर्माण का निर्माण होगा। बुधवार को खिजरी विधायक राजेश कच्छप द्वारा सभी योजनाओं का शिलान्यास किया गया। विधायक ने कहा मंडा खुटा आस्था से जुड़ा है। योजनओं का शिलान्यास कर काफी दिनों से स्थानीय ग्रामीणों की मांग को पूरा करने का प्रयास किया गया है। आगे भी जनहित में जो भी विकास कार्य होगा उसे हरसंभव पूर्ण किया जाएगा। मौके पर जिप सदस्य कमिश्नर मुंडा, उपप्रमुख रिजवान अंसारी प्रखंड अध्यक्ष तुलसी खरवार, सुरेश प्रसाद साहू, इम्तियाज ओहदार, रमेश उरांव, सुनील उरांव, शिवप्रसाद साहू रहीम अंसारी, दिनेश महतो, मुबारक अंसारी, सोनाराम महतो, बलराम महतो, देवेंद्र ठाकुर, किशोर नायक, रशीद अंसारी, बाबूलाल महली प्रदीप मुंडा, सहाबीर महतो, सुखराम उरांव आदि उपस्थित थें।

सड़क दुर्घटना में तीन युवक घायल, दो की हालत नाजुक

तमाड़। थाना क्षेत्र सलगाडीह के समीप बुधवार की सुबह आठ बजे अज्ञात पिकअप वाहन ने अपाची बाईक पर सवार तीन युवको को धक्का मार दिया। जानकारी के अनुसार एक बाईक पर सवार तीन युवक बुंडू सें तमाड़ की और जा रहे थे। तभी अज्ञात पिकअप ने बाईक को पीछे सें जोरदार टक्कर मार दिया। टक्कर सें बाईक में सवार निरंजन स्वांसी मायपा, अड़की थानाक्षेत्र निवासी, लखन स्वांसी तुलसीडीह, तमाड़ थानाक्षेत्र निवासी बिच सड़क पर गिर पड़े। वही सचिदानन्द स्वांसी ग्राम हूमता, बुंडू थानाक्षेत्र को पिकअप ने घसीटकर कई फीट तक लें गयी। टक्कर के बाद पिकअप चालक वाहन लेकर भागने में सफल रहा। घायलों को 1033 एंबुलेंस सें बेहतर ईलाज के लिए रिम्स लें जाया गया। रिम्स में डॉक्टरों ने बताया लखन स्वांसी और सचिदानन्द स्वांसी को गंभीर चोटें आयी। इनकी हालत बेहद नाजुक है। वही निरंजन स्वांसी को मामूली चोटें आयी।

चंद्रयान की लैंडिंग- ओरमांझी में युवा समेत वृद्ध भी तिरंगा ले सड़क पर निकले

ओरमांझी। चंद्रयान-3 के सफल लैंडिंग होने पर ओरमांझी में युवा वृद्ध सभी एक साथ तिरंगा लेकर सड़कों पर निकले और भारत माता की जयकारा लगाने लगे। इसके अलावे भाजपा कार्यकताओं ने भी तिरंगा लेकर सड़कों पर उतरे और एक मिठाई खिलाकर दूसरे को बधाई दी। मौके पर उपस्थित ग्रामीण जिला उपाध्यक्ष मानकी राजेंद्र साही ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व भारत के इसरो वैज्ञानिकों के प्रति अभार जताया और कहा आज इन्ही के प्रयास से देश को गर्वानिवत होने का अवसर मिला है।

खेल दिवस पर लांदुपडीह में होगा खेल कूद प्रतियोगिता

सोनाहातू। प्रखंड के लांदुपडीह स्कूल मैदान में मेजर ध्यानचंद के जन्मदिन के अवसर पर 29 अगस्त को खेल दिवस मनाया जाएगा। इस अवसर पर प्रखंड स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा। प्रतियोगिता में स्कूली बच्चों के बीच दौड़, लोंग जंप,हाई जंप, गोला फेंक, वॉलीबॉल तथा फुटबॉल मैच किया जाएगा। इसकी जानकारी शारीरिक शिक्षा शिक्षक बिंदेश्वर महतो के द्वारा दी गयी है।

ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट एंड रिसर्च फाऊंडेशन ट्रस्ट के सदस्यों ने विद्यालय का किया सर्वेक्षण

पिपरवार। ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट एण्ड रिसर्च फाऊंडेशन ट्रस्ट के सदस्यों ने बहेरा पंचायत के राजधर गांव में स्थित नवसृजित प्राथमिक विद्यालय का किया सर्वेक्षण। इस सर्वे के दौरान विद्यालय में लगभग डेढ़ सौ पढ़ाई करते हैं जिसमें सिर्फ एक शिक्षक द्वारा ही बच्चे को शिक्षा दिया जाता है। साथ ही विद्यालय की जर्जर स्थिति के बारे में जायेजा लिया गया। ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट एण्ड रिसर्च फाऊंडेशन ट्रस्ट के सदस्यों ने विद्यालय के शिक्षक को आश्वासन दिया कि जल्द ही सीसीएल से जाकर हमारा एक प्रतिनिधित्व मंडल मुलाकात करेगा और विद्यालय की जर्जर स्थिति के बारे में बताएगा और जल्द ही सीसीएल द्वारा विद्यालय की मरम्मती कराई जाएगी। हमारे ट्रस्ट के सदस्यों द्वारा शिक्षा विभाग के अधिकारियों से मुलाकात कर विद्यालय में शिक्षक की संख्या बढ़ने पर जोर दिया जाएगा।

सांसद ने कुटे में उपस्वास्थ्य केंद्र की रखी आधारशिला

सिकिदिरी। सांसद संजय सेठ ने बुधवार को कुटे गांव में आयुष्मान भारत योजना के तहत जिला परिषद मद से बनने वाले प्राथमिक उपस्वास्थ्य केंद्र की आधारशिला रखी। बताया जाता है कि भवन के अभाव में गांव का प्राथमिक उपस्वास्थ्य केंद्र पंचायत सचिवालय के एक कमरे में ही किसी प्रकार संचालित हो रहा है। मौके पर सांसद ने कहा कि उपस्वास्थ्य केंद्र के बन जाने से ग्रामीणों को प्राथमिक उपचार कराने में आसानी होगी। इस मौके पर पूर्व विधायक रामकुमार पाहन,सांसद प्रतिनिधि राजेश गुप्ता,पंसस अमीर हमजा अंसारी, प्रभारी मुखिया नाजरीन परवीन, संतोष गुप्ता, रितेश उरांव, शेख अनवर, आबिद अंसारी, अली इमाम अंसारी, समाउद्दीन खान सहित कई लोग उपस्थित थे।

दिवंगत मुखिया के परिजनों से मिले सांसद

शिलान्यास के बाद सांसद संजय सेठ कुटे पंचायत की दिवंगत मुखिया बालमती देवी का आवास जाकर उनके परिजनों से मिले। उन्होने दिवंगत मुखिया के परिजनों को सांत्वना देते हुए हर संभव सहायता करने का भरोसा दिलाया। मालूम ही कि कुटे पंचायत की मुखिया बालमती देवी का निधन गत 15 अगस्त को हो गया था।

ब्रह्माकुमारी बहनो ने बीडीओ सहित कर्मचारियों को रक्षा सूत्र बांधकर भेंट दी ईश्वरीय सौगात

खबर मन्त्र संवाददाता

खलारी। दुनिया में बंधन कोई पसंद नहीं करता किन्तु रक्षाबंधन का पर्व एक दिव्य एवं अलौकिक संदेश लेकर आता है, जिस रक्षा सूत्र को बांधना प्रत्येक व्यक्ति पसंद करता है, क्योंकि यह रक्षासूत्र सर्व आत्माओं के रक्षक परमपिता परमात्मा स्वयं भू शिव की और से निमित्त शिवशक्ति ब्रह्माकुमारी बहनें सर्व मंगल की कामना से अपने-अपने क्षेत्र के सभी भाई-बहनों की कलाई पर बांधती है। उपरोक्त विचार प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय डकरा सुभाष नगर गीता पाठशाला की नियमित ब्रह्माकुमारी प्रीति बहन ने व्यक्त किये। रक्षा बंधन कार्यक्रम में प्रखंड के सभागार में प्रखंड विकास पदाधिकारी, अंचल अधिकारी सहित पदाधिकारियों व कर्मचारियों को माथे पर तिलक लगाकर रक्षा सूत्र बांधते हुए मुहं मीठा कराकर दिव्य अलौकिक रक्षा बंधन सभी के साथ मनाया। वही प्रीति बहन ने रक्षाबंधन का अर्थ बताते हुए कहा कि यह मयार्दा का बंधन है, सद्गुणों का बंधन है। जो संदेश देता है कि अंदर की सभी बुराइयों को परमपिता परमात्मा को अर्पित कर अच्छाइयों को अपनाना ही त्यौहार का सच्चा उपहार है। मौके पर ब्रह्मकुमारी बहनों द्वारा ईश्वरीय सौगात भेंट की गई।

त्योहारों से नवचेतना का संचार : लेखराज नाग

अलौकिक रक्षाबंधन कार्यक्रम में प्रखंड विकास पदाधिकारी लेखराज नाग ने बताया कि त्योहारों से नवचेतना का संचार होता है और सुषुप्त शक्तियां जागृत होती हैं। त्योहारों में जब संगठन में सत्संग करते, ईश्वरीय परिवार से मिलते हैं तो हमारे अंदर नवचेतना का संचार होता है। हमारा संपूर्ण जीवन इस धरती पर ईश्वर का दिया हुआ तपस्वी शोभायमान है। अपनी अन्तरात्मा की आवाज के अनुरूप अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना हैं। इस कार्यक्रम में ममता बहन, पिंकी बहन, छाया बहन, भूमि बहन, संजय भाई, कमल भाई, खलारी सीओ शिशुपाल आर्य, बीपीओ बिनय कुमार गुप्ता, सभी कनीय अभियंता, पंचायत सेवक, रोजगार सेवक सहित अंचलकर्मी शामिल थे।

मुआवजा महंगा है तो जमीन खरिद कर दें किसान सहयोग को तैयार

खबर मन्त्र संवाददाता

ओरमांझी। भू-अर्जन के पदाधिकरयों ने लगातार दूसरे दिन बुधवार को पंचायत सचिवाल पांचा में भारत माला सड़क मार्ग परियोजना को लेकर प्रभावित किसानों के साथ बैठक किया। ग्रामप्रधान धर्मनाथ पाहन की अध्यक्षता में हुई बैठक में रोला गांव के प्रभावित किसानों को मुआवजा लेने के लिए आवेदन जमा करने के लिए कहा गया। वहीं बैठक में रोला गांव के अलावे प्रभावित अन्य गांव के किसान भी उपस्थित थें। जिन्होने कहा भारत सरकार की योजना का विरोध नही है। मुआवजा मिले तो सहयोग के लिए सभी किसान तैयार है। लेकिन एसी द्वारा निर्धारित दर पर मुआवजा राशि नही मिला तो किसी भी हाल में निर्माण कार्य होने नही दिया जाएगा। वहीं उपस्थित पूर्व विधायक ने उपस्थित भू-अर्जन के अधिकारियों को भोले-भाले किसानों के प्रति संवेदनशिल होने को कहा, किसानों को बरगलाना बंद कें। जब डीसी एसी व अन्य अधिकारियों के द्वारा राशि निर्धारण हो गई है, तो कम राशि लेने के लिए दबाव नही बनाए। कहा वर्तमान समय में जमीन की दर लगभग 1.50 लाख है। बावजूद एसी से समझौता अनुसार किसान 50.674 रूपया प्रति डीस्मिल लेने को तैयार हैं। मुआवजा दें और योजना का कार्य शुरू करें। भू-अर्जन विभाग के कानूनगो कमलकांत वर्मा ने कहा 16 में 13 गांव के किसानों ने आपती के साथ मुआवजा ले चूकें है। रोला गुड्डू व पांचा के किसान भी आपती के साथ मुआवजा ले लें। राशि बढ़ने पर आपती के साथ मुआवजा लेने वाले सभी को राशि दे दी जाएगी। लेकिन किसान तैयार नही हुए, कहा मुआवजा अधिक लग रहा है तो जमीन के बदले जमीन खरिद कर दें। सभी किसान लेने व सहयोग करने का तैयार है। साथ ही किसानों ने एक स्वर में कहा समझौता अनुरूप राशि का भुगतान करें। अन्याथा परियोजना का विरोध होगा। बैठक में जिप सदस्य सरिता देवी, नारायण साहू, नविन साहू, विरेंद्र साहू, अनिरूद्ध साहू सहित कई किसानों ने संबोधित किया।

बैठक में पूर्व विधायक रामकुमार

मौके पर उपस्थित लोग

मौके पर अतिरिक्त कानूनगो फिरनाथ सिंह, वरीय लिपिक विमल मुंडा, अमीन सिद्धेष्वर कुमार महतो, बालेष्वर महतो, कर्मचारी मनीलाल महतो, लोकेश महतो, अजय साहू, बिरसा मुंडा, प्रदीप कुमार महतो, रमेश महतो, दीपक मुंडा, मनेष्वर महतो, नरेश मुंडा, प्रदीप साहू, विष्णचरण गुप्ता, फुलेंद्र महतो सहित काफी संख्या में किसान व महिलाएं उपस्थित थें।

फ्यूल और लुब्रिकेंट के रखरखाव व प्रयोग की जानकरी सीसीएल कर्मचारियों को दी

खबर मन्त्र संवाददाता

खलारी। सीसीएल एनके एरिया भीआईपी डकरा में इंडियन ऑइल कॉपरेशन लिमिटेड जमशेदपुर मंडल के द्वारा फ्यूल (ईंधन) व लुब्रिकेंट का कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता एनके जीएम संजय कुमार ने किया। कार्यक्रम में एनके एरिया परियोजना अंतर्गत के परियोजना पदाधिकारी में पुरनाडीह नरेश सिंह, केडीएच अनिल कुमार सिंह,रोहणी जितेंद्र कुमार सिंह, अथवा राजहरा के परियोजना पदाधिकारी मौजूद थे। कार्यक्रम में डीजल व लुब्रिकेंट का सही रखरखाव, देखभाल सहित अन्य का जानकरी इंडिया ऑइल के मुख्य प्रबंधक सुनील कुमार सिंह ने सीसीएल के उपस्थित पदाधिकारियों दी। मौके पर वरिष्ठ प्रधान फ्यूल्स राँची राजीव रंजन प्रसाद, सीसीएल हेड क्वाटर राँची ओमप्रकाश गुप्ता सहित अन्य मौजूद थे।

पद्मश्री डॉ. रामदयाल मुंडा का मनाया गया जन्म दिवस

तमाड़। पद्मश्री डॉ रामदयाल मुंडा की जन्म दिवस पर बुधवार को उनके पैतृक निवास स्थान दिउड़ी तमाड़ में मनाया गया. समाजसेवी और लोगो द्वारा उनके आदमकद प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की गई. मौके पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए बिरसा उलगुलान मोर्चा के अध्यक्ष दमयंती मुंडा ने कहा डॉ मुंडा के विशेषताओं का व्याख्या कर पाना इतना आसान नहीं है व एक समुद्र की भांति थे. फिर इस खास मौके पर उनके कुछ पहलुओं का बाखान करना आवश्यक हो जाता है। देश आजादी की लड़ाई में आदिवासी एक कंधे पर मांदर और दूसरे पर तीर धनुष के साथ क्रांतिकारी गीत प्रतिरोध की ये संस्कृति मानव इतिहास में अत्यंत ही विलक्षण है। आदिवासियों के इस संस्कृति से दुनियाभर को परिचित कराने वाले महान विद्वान, सांस्कृतिक कर्मी, रंगकर्मी डाक्टर रामदयाल मुंडा थे। मौके पर दमयंती , संरक्षक, सचिव भगीरथ, विष्णु , जानकी मुंडा आदि लोग शामिल थे।

शिलान्यास होते ही उखाड़ा शिलापट, भाजपा-कांग्रेस समर्थक आपस में उलझे

खबर मन्त्र संवाददाता

ओरमांझी। आयुष्यमान भारत योजना के तहत 55.50 लाख की लागत से प्रखंड क्षेत्र के कुरूम में उपस्वास्थ्य केंद्र निर्माण का शिलान्यास मंगलवार को हुआ। शिलान्यास होते ही शिलापट उखाड़ दिया गया। शिलान्याय कार्यक्रम में भाजपा व कांग्रेस समर्थक आपस में उलझ गए। काफी हो हंगामा के बीच सांसद संजय सेठ द्वारा शिलान्यास किया गया। लेकिन शिलान्यास करते ही शिलापट उखाड़ दिया गया। वहीं जैसे ही शिलापट उखड़ा अंदर से एक और शिलापट निकला। शिलान्यास को लेकर भाजपा व कांगेस कार्यकर्ता अलग-अलग तैयारी की थी। कांग्रेस की ओर से विधायक राजेश कच्छप को तो भाजपा की ओर से सांसद संजय सेठ को शिलान्यास करना था। निर्धारित संमय पर दोनो कार्यक्रम स्थल पर नही पहुंचे थें। थोड़ी देर बाद सांसद तो पहुंचे लेकिन विधायक नही पहुंचे थें। जब सांसद संजय सेठ शिलान्यास करने पहुंचे तो विधायक समर्थकों द्वारा विरोध किया गया। सांसद व भाजपा कार्यकताओं की उपस्थित में विधायक समर्थक कार्यकताओं द्वारा सांसद व भाजपा के खिलाफ नारेबाजी की गई। जिसके बाद दोनो के समर्थक आपस में उलझ गए। बाद में सांसद संजय सेठ की ओर से विधायक को बुलाने के लिए बोला गया। जब विधायक नही पहुंचे तो सांसद संजय सेठ द्वारा शिलान्यास किया गया। मौके पर पूर्व विधायक रामकुमार पाहन, प्रमुख अनुपमा देवी, जिप सदस्य सरिता देवी, सांसद प्रतिनिधि प्रमोद सिंह, भाजपा मंडल अध्यक्ष दिलीप मेहता, राजेश गुप्ता, रोहित साहू, अलखनाथ महतो, आफताब आलम, बालक पाहन, रवि सिंह, सुरेंद्र प्रजापति, रामकिशोर महतो, चंद्रमोहन महतो, सुनील महतो, खिलेष्वर महतो, संजय करमाली सहित सांसद व विधायक के कई समर्थक व ग्रामीण उपस्थित थें।

शिलापट में सिर्फ नाम ऊपर-नीचे था

एक योजना का शिलान्यस में दो शिलापट निकला। दोनो शिलापट एक साथ आगे-पिछे लगा था। उपर लगे शिलापट में सांसद संजय सेठ का नाम उपर था। शिलान्यास होने के बाद जब शिलापट उखाड़ा तो एक और शिलापट निकाला। जिसमें विधायक राजेश कच्छप का नाम उपर था। बादे में सांसद द्वारा शिलान्यास किए गए शिलापट को उखाड़ कर ले गए। वहीं शिलान्यास पटल पर विधायक राजेश कच्छप का उपर नाम वाला शिलापट लगा रहा।

वनडे रैंकिंग में चौथे स्थान पर पहुंचे गिल

दुबई। भारत के युवा प्रतिभावान बल्लेबाज शुभमन गिल बुधवार को बल्लेबाजों की वनडे रैंकिंग में एक स्थान ऊपर चढ़कर चौथे स्थान पर पहुंच गये, जबकि तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने भी मैदान पर लौटने के बाद अपनी टी20 रैंकिंग में सुधार किया। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आइसीसी) द्वारा जारी नवीनतम वनडे रैंकिंग में, गिल 743 रेटिंग अंक के साथ इस प्रारूप में भारत के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज हैं। गिल के बाद विराट कोहली (नौंवा स्थान) शीर्ष 10 रैंकिंग में भारत के एकमात्र बल्लेबाज हैं। पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम 880 रेटिंग पॉइंट के साथ शीर्ष पर बने हुए हैं।

विश्व बैडमिंटन चैंपियनशिप

त्रिसा-गायत्री की जोड़ी प्री-क्वार्टरफाइनल में

कोपेनगेहन। भारतीय खिलाड़ी त्रिसा जॉली और गायत्री गोपीचंद की महिला युगल जोड़ी ने बुधवार को यहां मजबूत प्रदर्शन करते हुए चीनी ताइपे की चांग चिंग हुई और यांग चिन टुन की जोड़ी पर सीधे गेम में जीत दर्ज कर विश्व बैडमिंटन चैम्पियनशिप के प्री क्वार्टरफाइनल में प्रवेश किया। गायत्री और त्रिसा की दुनिया की 19वें नंबर की जोड़ी को पहले दौर में बाई मिली थी, उन्होंने 37वीं रैंकिंग पर काबिज चांग और यांग की जोड़ी को 38 मिनट में 21-18 21-10 में हराया। यह भारतीय जोड़ी आल इंग्लैंड चैम्पियनशिप के पिछले दो चरण के सेमीफाइनल में पहुंची थी और अब उनका सामना अगले दौर में चीन की चेन किंग चेन और जिया यि फान की शीर्ष वरीय जोड़ी से होगा। त्रिसा और गायत्री पहले 2-5 से पिछड़ रही थी लेकिन जल्द ही उन्होंने रैली के जरिये अपने प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ गलतियां कम करते हुए 8-6 से बढ़त बना ली। चांग और यांग हालांकि 8-8 की बराबरी पर आ गयी लेकिन भारतीय जोड़ी ताइवान की जोड़ी के नेट पर शॉट लगाने से ब्रेक तक 11-9 से आगे हो गई। ब्रेक के बाद त्रिसा और गायत्री 14-11 से बढ़त बनाये थीं। तभी त्रिसा ने कुछ गलतियां कर दी लेकिन भारतीय जोड़ी चांग और यांग की सर्विस गलती से चार गेम प्वाइंट हासिल करने में सफल रहीं।

भारत-आयरलैंड के बीच तीसरा टी20 बारिश के कारण रद्द

टीम इंडिया सीरीज को 2-0 से जीती

एजेंसी

डबलिन। भारत और आयरलैंड के बीच तीसरा टी20 मुकाबला बारिश में धुलने के बाद मेहमान टीम ने श्रृंखला 2-0 से जीत ली। मालाहाइड में लगातार बारिश होते रहने के कारण न ही टॉस हो सका और न ही एक भी गेंद फेंकी जा सकी। मैच शुरू होने के निर्धारित समय के करीब तीन घंटे बाद बादलों ने बरसना बंद किया, हालांकि इस समय तक मैदान अत्यधिक गीला हो चुका था। अंपायरों ने इसे ध्यान में रखते हुए स्थानीय समयानुसार शाम पांच बजकर 58 मिनट पर मैच रद्द करने का फैसला लिया। भारत ने पहले वषार्बाधित टी20 में डकवर्थ लुइस पद्धति से दो रन से जीत हासिल की थी, जबकि दूसरे मुकाबले में आयरलैंड को 33 रन से हराया था। इस टीम के कई युवा खिलाड़ी अब चीन के हांग्झोउ में होने वाले एशियाई खेलों में रवाना होंगे, जबकि जसप्रीत बुमराह, प्रसिद्ध कृष्णा, तिलक वर्मा और संजू सैमसन एशिया कप खेलने वाली टीम के साथ श्रीलंका जायेंगे।

आयरलैंड में टीम इंडिया यूं बनी ऐतिहासिक पल की गवाह

एजेंसी

नयी दिल्ली। एक ओर जहां चंद्रयान-3 अपने मिशन को पूरा करने से कुछ ही पल दूर था। यहां भारत में हर कोई सफलता के जश्न में डूबने को बेसब्र था। हर किसी को इंतजार था चंद्रयान-3 के चांद की सतह पर सॉफ्ट लैंडिंग की। ऐसे समय में टीम इंडिया आयरलैंड के डबलिन स्टेडियम पहुंच चुकी थी। मैच से पहले खिलाड़ी वॉर्म अप करते हैं। बॉडी को खोलते हैं, लेकिन

ऐसा नहीं हुआ। जसप्रीत बुमराह की कप्तानी में टीम इंडिया के हर खिलाड़ी की निगाहें टीवी पर टिकी हुई थीं, जो मैदान के अंदर ही लगी थी। कप्तान जसप्रीत बुमराह, रिंकू सिंह, यशस्वी जायसवाल की निगाहें इस तरह से टीवी टिकी हुई थीं, मानों उनका कोई साथी इतिहास रचने को करीब हो। जैसे ही चंद्रयान-3 की सॉफ्ट लैंडिंग होती है टीम इंडिया जश्न में डूब जाती है। सभी खिलाड़ी तालियां बजाते हुए नजर आते हैं। इस ऐतिहासिक मोमेंट का वीडियो भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने अपने ऑफिशलX.com अकाउंट पर शेयर किया है। वीडियो में सभी खिलाड़ी पूरे जोश के साथ भारत से लगभग 8 हजार किलोमीटर दूर से इतिहास रचने वाली इसरो की महान वैज्ञानिकों की टीम का उत्साह बढ़ाते दिखाई दे रहे हैं।

हॉकी 5एस विश्व कप क्वालीफायर के लिए रवाना हुई महिला टीम

एजेंसी

बेंगलुरु। भारतीय महिला हॉकी टीम महिला एशियाई हॉकी 5एस विश्व कप क्वालीफायर में हिस्सा लेने के लिये बुधवार को ओमान के सलालाह रवाना हुई। यह टूनार्मेंट 25 से 28 अगस्त के बीच होगा जिसके लिये भारतीय टीम को जापान, मलेशिया और थाईलैंड के साथ एलीट पूल में रखा गया है। हॉन्ग कॉन्ग, चीनी ताइपे, बंगलादेश, ईरान और ओमान चैलेंजर्स पूल का हिस्सा हैं। सलालाह जाने वाली भारतीय टीम की कप्तानी नवजोत कौर करेंगी जबकि ज्योति उपकप्तान होंगी। टीम में गोलकीपर बंसारी सोलंकी शामिल हैं। डिफेंस क्षेत्र में अक्षता अबासो ढेकाले, महिमा चौधरी और सोनिया देवी क्षेत्रिमायुम होंगी। कप्तान कौर और अजमीना कुजूर मिडफील्ड संभालेंगी, जबकि मारियाना

कुजूर, ज्योति और दीपी मोनिका टोप्पो फॉरवर्ड के रूप में खेलेंगी। भारत अपने पूल में शीर्ष दो स्थानों पर रहने और सेमीफाइनल में क्वालीफाई करने के लिये अपने एलीट समकक्षों के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करेगा। भारत का पहला मुकाबला 25 अगस्त को मलेशिया से होगा, जबकि 26 अगस्त को भारतीय महिलाएं जापान का सामना करेंगी। भारत का आखिरी पूल चरण मुकाबला 27 अगस्त को थाईलैंड से होगा। भारतीय महिला हॉकी टीम की कोच सौंदर्या येंदाला ने टूनार्मेंट से पहले अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, हम टूनार्मेंट में उतरने के लिये बेताब हैं। महिला एशियाई हॉकी 5एस विश्व कप क्वालीफायर की तैयारी के लिये बहुत प्रयास किये गये हैं। हमारा लक्ष्य पूरे टूनार्मेंट में अच्छा खेलना है और उम्मीद है कि टूनार्मेंट में जीत के साथ हमारी कड़ी मेहनत का लाभ मिलेगा।' इस बीच, कप्तान कौर भी महिला एशियाई हॉकी 5एस विश्व कप क्वालीफायर में भारत के जीतने की संभावना को लेकर आशान्वित थीं। कौर ने कहा, हमें अपने पूल में कुछ मजबूत टीमों का सामना करना है, लेकिन इस टूनार्मेंट के लिये तैयार होने के लिये हमने जितना काम किया है उससे मुझे विश्वास है कि हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे और हाथ में पदक लेकर घर लौटेंगे।

क्रिकेट विश्व कप : भारत का वार्मअप मैच तय

नयी दिल्ली। क्रिकेट विश्व कप 2023 की राह में भारतीय टीम अपने 2 अभ्यास मैच इंग्लैंड और नीदरलैंड के खिलाफ खेलेगी। आइसीसी ने कार्यक्रमों की घोषणा कर दी है जिसमें 10 वार्मअप मैचों की घोषणा है। टीम इंडिया 30 सितंबर को बारसापारा क्रिकेट स्टेडियम, गुवाहाटी में इंग्लैंड के आमने सामने होगी। इसके बाद 3 अक्टूबर को तिरुवनंतपुरम में नीदरलैंड से मुकाबला होगा। सभी मैच भारतीय समयानुसार दोपहर 2 बजे शुरू होंगे और टीमों को अपनी टीम के सभी 15 सदस्यों को मैदान में उतारने की अनुमति होगी। टूनार्मेंट की बात की जाए तो भारत का पहला मुकाबला 8 अक्टूबर, 2023 को 5 बार के विश्व कप विजेता ऑस्ट्रेलिया से होगा। यह बहुप्रतीक्षित मैच चेन्नई के एमए चिदंबरम स्टेडियम में होगा।

विश्व चैंपियनशिप के शीर्ष-16 में सात्विक-चिराग

कोपनहेगन। चिराग शेट्टी और सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी की शीर्ष भारतीय पुरुष युगल जोड़ी ने बुधवार को बैडमिंटन विश्व चैंपियनशिप में ऑस्ट्रेलिया के झे हूई चू और मिंग चुएन लिम को करारी शिकस्त देकर प्री-क्वार्टरफाइनल में प्रवेश कर लिया। विश्व रैंकिंग में दूसरे पायदान पर काबिज सात्विक-चिराग की जोड़ी ने अपने ऑस्ट्रेलियाई प्रतिद्वंदियों को 21-16, 21-9 से हराने के लिये सिर्फ 30 मिनट का समय लिया।

कार्लसन-प्रज्ञानंद के बीच दूसरा मुकाबला भी ड्रॉ

बाकू। भारत के 18 वर्षीय ग्रैंडमास्टर रमेशबाबू प्रज्ञानंद और नॉर्वे के पांच बार के विश्व चैंपियन मैग्नस कार्लसन के बीच खेला गया फिडे विश्व कप फाइनल का दूसरा राउंड बुधवार को ड्रॉ पर समाप्त हुआ। टॉप सीड कार्लसन ने सफेद मोहरों से खेलते हुए मुकाबले की जिस तरह शुरूआत की उससे स्पष्ट हो गया कि वह ड्रॉ का प्रयास कर रहे हैं। मोहरों के लगातार आदान-प्रदान के साथ दोनों खिलाड़ियों ने 30 चालों के बाद ड्रॉ पर सहमति जताई। इससे पूर्व, प्रज्ञानंद ने मंगलवार को सफेद मोहरों से ड्रॉ खेला था।

एल्ड्रिन लंबी कूद के फाइनल में, श्रीशंकर बाहर

बुडापेस्ट। भारत के शीर्ष लंबी कूद एथलीट जेस्विन एल्ड्रिन ने बुधवार को पहली बार विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप के फाइनल के लिये क्वालीफाई कर लिया, हालांकि उनके हमवतन मुरली श्रीशंकर क्वालीफिकेशन राउंड में ही बाहर हो गये। लंबी कूद में राष्ट्रीय रिकॉर्ड धारक एल्ड्रिन ने पहले प्रयास में 8.0 मीटर की छलांग लगायी। उनके अगले दो प्रयास रद्द कर दिये गये, लेकिन पहला प्रयास उन्हें 12 एथलीटों के फाइनल में पहुंचाने के लिये काफी रहा।

मास्टरकार्ड और आइसीसी की वैश्विक साझेदारी

नयी दिल्ली। मास्टरकार्ड ने इस वर्ष भारत में हो रहे आइसीसी पुरूष क्रिकेट विश्व कप 2023 के लिए वैश्विक साझेदारी करने की आज घोषणा की। इस वर्ष 05 अक्टूबर से 19 नवंबर के बीच भारत में यह विश्व कप का आयोजन होगा। इसके लिए मास्टरकार्ड ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आइसीसी) के साथ यह साझेदारी की है। मास्टरकार्ड ग्राहकों और कार्डधारकों को बेहतर अनुभव प्रदान करने के लिए खेल प्रायोजन/स्पोर्ट्स स्पॉन्सरशिप की अपनी विरासत को जारी रखने के उद्देश्य से करार किया है। भारत, दक्षिण एशिया और दुनिया के कई देशों में क्रिकेट लोकप्रिय खेलों में से एक है और विश्व कप श्रृंखला प्रशंसकों को रोमांच के केंद्र में रखता है और उन्हें खेल का अभूतपूर्व अनुभव लेने का अवसर प्रदान करता है।

भारतीय महिला हॉकी टीम ने इंग्लैंड को 6-2 से हराया

डसेलडोर्फ (जर्मनी)। भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम ने बुधवार को यहां इंग्लैंड को 6-2 से हराकर चार देशों के टूनार्मेंट-डसेलडोर्फ 2023 में तीसरा स्थान हासिल किया। भारत की ओर से नीलम (25वें मिनट), अनु (26वें और 43वें मिनट), सुनेलिता टोप्पो (35वें मिनट), हिना बानो (38वें मिनट) और मुमताज (40वें मिनट) ने गोल दागे। इंग्लैंड की तरफ से क्लॉडिया स्वेन (16वें मिनट) और चार्लोट बिनगैम (54वें मिनट) ने गोल किए। पहले क्वार्टर में दोनों टीम ने तेज शुरूआत की लेकिन दोनों ही टीम पहले क्वार्टर में गोल करने में नाकाम रहीं। दोनों टीम का डिफेंस भी पहले क्वार्टर में काफी मजबूत रहा। भारत ने दूसरे क्वार्टर में भी अच्छी शुरूआत की लेकिन मैच का पहला गोल इंग्लैंड की ओर से स्वेन ने दागा। भारत ने इसके बाद हमले तेज किए। टीम को पेनल्टी कॉर्नर मिला जिसे नीलम ने गोल में बदलकर स्कोर 1-1 कर दिया। बढ़त बनाने के बाद आत्मविश्वास से भरे भारत ने तीसरे क्वार्टर में लगातार हमले किए। सुनेलिता ने पेनल्टी कॉर्नर पर गोल दागकर स्कोर 3-1 किया। हिना ने स्कोर 4-1 जबकि मुमताज और अनु ने भी भारत की बढ़त को 6-1 तक पहुंचाया। इंग्लैंड ने बिनगैम के गोल से हार के अंतर को कम किया।

बुक माय शो पर उपलब्ध होंगे विश्व कप टिकट

मुंबई। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआइ) ने बुधवार को 2023 क्रिकेट विश्व कप के लिये बुक माय शो को टिकट बिक्री का आधिकारिक साझेदार घोषित किया। इस टूनार्मेंट में 10 अभ्यास मैचों सहित कुल 58 मुकाबले देश के 12 आयोजन स्थलों पर खेले जायेंगे।

मामूली विवाद में महिला ने की आत्महत्या

छपरा। बिहार में सारण जिले के कोपा थाना क्षेत्र में फोन पर पति से बातचीत के क्रम में हुये विवाद में एक महिला ने गले में रस्सी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली है। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, थाना क्षेत्र के दुबललिया गांव निवासी ललन राम की पुत्री बबीता की शादी दो वर्ष पूर्व पड़ोसी जिला सिवान के असांव थाना क्षेत्र के ससरांव गांव निवासी रंजीत राम से हुई थीं। रंजीत राम गुजरात में रहकर काम करता है जबकि उसकी पत्नी बबीता अपने मायके में रह रही थी। मोबाइल फोन पर बातचीत करने के बाद अचानक पति-पत्नी में विवाद हो गया। जिसके बाद बबीता ने अपने गले में रस्सी का फंदा लगा लिया।

जदयू की राष्ट्रीय कार्यकारिणी का गठन

पटना। बिहार में सत्तारूढ़ जनता दल यूनाइटेड (जदयू) ने 98 सदस्यों वाली नई राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सूची आज जारी की। जदयू के राष्ट्रीय महासचिव अफाक अहमद खान ने बुधवार को पार्टी की नई राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सूची जारी करते हुए बताया कि जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अनुमति से राष्ट्रीय कार्यकारिणी का गठन किया। इसमें श्री के. सी. त्यागी को विशेष सलाहकार एवं मुख्य प्रवक्ता तथा डॉ. आलोक कुमार सुमन को कोषाध्यक्ष बनाया गया है।

भागलपुर में ट्रेन से 51 कछुए बरामद

भागलपुर। पूर्व रेलवे के मालदह मंडल के न्यू फरक्का स्टेशन पर रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने बुधवार को 13414 डाउन फरक्का एक्सप्रेस ट्रेन से प्रतिबंधित 51 जिंदा कछुआ को बरामद किया। मालदह मंडल के आरपीएफ कमांडेंट ए के कुल्लू ने आज यहां बताया कि दिल्ली से मालदह जा रही 13414 न्यू फरक्का एक्सप्रेस ट्रेन के एक बोगी में कुछ लावारिस बैग के रहने की सूचना पर रेलवे सुरक्षा बल के टीई पार्टी और सीपीडीएस टीम ने बुधवार को न्यू फरक्का स्टेशन पर उक्त ट्रेन के पहुंचते ही तलाशी अभियान चलाकर एक शयनयान बोगी (एस-6) से छह बैगों मे छिपाए हुए 51 जिंदा कछुआ को जब्त किया। सभी बड़े आकार का कछुआ है। उन्होंने बताया कि मामले में किसी की गिरफ्तारी नहीं हो पाई है। संभवतः उक्त कछुआ बिहार से तस्करी के लिए पश्चिम बंगाल ले जा रहा था। जब्त कछुओं के वन्य जीव संरक्षण के तहत आने के बाबत स्थानीय वन विभाग को इसकी सूचना दे दी गई है।

दुर्घटना में एक कांवरिया की मौत, नौ घायल

जमुई। बिहार में जमुई जिले के खैरा थाना क्षेत्र में बुधवार की सुबह सड़क दुर्घटना में एक कांवरिया की मौत हो गयी तथा नौ अन्य घायल हो गये। पुलिस सूत्रों ने यहां बताया कि झारखंड के देवघर से पूजा करने के बाद कार से लोग समस्तीपुर लौट रहे थे। इस दौरान मवेशी को बचाने के दौरान हरदीमोर के समीप कार अनियंत्रित होकर पेड़ से टकरा गयी। इस घटना में कार पर सवार एक कांवरिया की मौत हो गयी जबकि नौ अन्य घायल हो गये।

सड़क हादसे में मोटरसाइकिल सवार की मौत

छपरा, 23 अगस्त (वार्ता) बिहार में सारण जिले के खैरा थाना क्षेत्र के नगरा ओपी क्षेत्र के नगरा बाजार पर सड़क हादसे में एक मोटरसाइकिल सवार की मौत हो गयी। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, मीरा मुसेहरी गांव निवासी सकलदेव महतो (40) अपने घर से आधार कार्ड में सुधार कराने के लिए नगरा बाजार मोटरसाइकिल से आ रहा था। इसी दौरान छपरा से दिल्ली जाने वाली एक निजी बस ने उसके मोटरसाइकिल को अपनी चपेट में ले लिया इस घटना में उक्त व्यक्ति की मौत घटनास्थल पर ही हो गई। घटना की सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया है। बस चालक गाड़ी छोड़कर भाग निकला है। पुलिस बस को जब्त कर थाना ले आयी है।

सीएम ने देश के सबसे बड़े बापू परीक्षा परिसर का किया उद्घाटन

एजेंसी

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बुधवार को पटना के कुंहरार में नवनिर्मित देश के सबसे बड़े परीक्षा केंद्र बापू परीक्षा परिसर का उद्घाटन किया। साथ ही उन्होंने रिमोट से बिहार विद्यालय परीक्षा समिति की विभिन्न योजनाओं का भी शुभारंभ किया। बापू परीक्षा परिसर के उद्घाटन करने के पश्चात मुख्यमंत्री ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि हमलोग बहुत पहले से कोशिश कर रहे थे कि पटना में एक बड़ा परीक्षा भवन बने, जहां बैठकर बड़ी संख्या में परीक्षार्थी परीक्षा दे सकें। पटना में परीक्षा भवन का निर्माण कार्य पूरा हो गया है। बाकी जगहों पर भी इसका निर्माण करवा रहे हैं। इस भवन में हर दिन परीक्षा हो सकती है। हमारी इच्छा के अनुसार यहां पर भवन बन गया है, इससे मुझे खुशी है। हमने ही कहा था कि इस भवन का नामकरण बापू के नाम पर कीजिए सीएम नीतीश ने कहा कि बापू के नाम पर ही इसका नामकरण बापू परीक्षा परिसर किया गया है, यह बहुत खुशी की बात है। आप लोग देख रहे हैं कि हमलोग कितना काम कर रहे हैं। आज चंद्रयान-3 की होनेवाली लैंडिंग को लेकर पत्रकारों के सवाल पर मुख्यमंत्री ने कहा कि यह अच्छी बात है।

यह खुशी की बात है। सीएम ने कहा कि बापू परीक्षा परिसर का निर्माण परीक्षा व्यवस्था को और उत्कृष्ट बनाने के लिए किया गया है। 261.11 करोड़ रुपये की लागत से लगभग 6 एकड़ में फैले बापू परीक्षा परिसर का निर्माण कराया गया है। आधुनिक सुविधाओं से युक्त इस परीक्षा केंद्र में ऐसी व्यवस्था की गई है कि विभिन्न परीक्षाओं के संचालन में किसी प्रकार की दिक्कत नहीं हो। मुख्यमंत्री ने बुधवार को बिहार विद्यालय परीक्षा समिति के द्वितीय चरण के सुधारों की कार्ययोजना का शुभारंभ किया। साथ ही उन्होंने बिहार बोर्ड के मेधावी विद्यार्थियों के लिए इंजीनियरिंग एवं मेडिकल वेश परीक्षाओं की तैयारी के लिए पटना प्रमंडल में निःशुल्क आवासीय अनुशिक्षण (कोचिंग) तथा शेष 8 प्रमंडलीय मुख्यालयों में निःशुल्क गैर आवासीय अनुशिक्षण (कोचिंग) कार्यक्रम का भी शुभारंभ किया। द्वितीय चरण के सुधारों की कार्ययोजना के तहत राज्य के शेष सभी 29 जिलों में परीक्षा भवनों की स्थापना तथा राज्य के सभी 38 जिलों में वज्रगृहों की स्थापना की जाएगी। राज्य के सभी 9 प्रमंडलों में कंप्यूटर आधारित परीक्षा के लिए ऑनलाइन परीक्षा केंद्रों-सह- कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना, राज्य के सभी मैट्रिक एवं इंटर शिक्षण संस्थानों में प्रति माह एसेसमेंट सिस्टम की शुरूआत तथा राज्य के सभी इंटर एवं मैट्रिक शिक्षण संस्थानों में लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम का भी अधिष्ठापन किया जाएगा। बिहार विद्यालय परीक्षा समिति की सभी प्रकार की सेवाओं के लिए सिंगल विंडो सिस्टम की व्यवस्था, नये इंटर एवं मैट्रिक स्तरीय शिक्षण संस्थानों के लिए जीआईएस बेस्ड ऑनलाइन एफलिएशन एंड इंस्पेक्शन सिस्टम की व्यवस्था तथा बिहार विद्यालय परीक्षा समिति की सभी परीक्षाओं में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस आधारित फॉर्म भरने की प्रक्रिया एवं आर्टिफिशियल बेस्ड डेटा सैनिटाइजेशन की व्यवस्था होगी। बिहार विद्यालय परीक्षा समिति की सभी परीक्षाओं में आरएफआईडी बेस्ड सिक्यूरिटी एवं ट्रैकिंग सिस्टम की व्यवस्था होगी। इससे पहले मुख्यमंत्री ने उद्घाटन के पश्चात पांच तल्ल वाले परीक्षा केंद्र के भवन का निरीक्षण किया। मुख्य भवन को ए और बी ब्लॉक में बांटा गया है, जहां 20 हजार से 25 हजार विद्यार्थियों के ऑनलाइन और ऑफलाइन परीक्षा देने की व्यवस्था की गई है। मुख्यमंत्री ने पहले एवं पांचवें तल्ले पर जाकर परीक्षा हॉल एवं विभिन्न कमरों का निरीक्षण किया और वहां की व्यवस्थाओं के संबंध में विस्तृत जानकारी ली। मुख्यमंत्री ने भवन की छत पर लगे सोलर प्लेट को भी देखा तथा वहां और अधिक सोलर प्लेट लगाने का अधिकारियों को निर्देश दिया।

सड़क हादसे में भाजपा नेता की मौत

बेगूसराय। बेगूसराय में तेज रफ्तार का कहर लगातार जारी है। बुधवार की सुबह भी राष्ट्रीय उच्च पथ (एनएच)-31 फोरलेन पर सड़क हादसे में एक भाजपा नेता की मौत हो गई। मृतक डंडारी थाना क्षेत्र के कटरमाला निवासी रामभज्जू प्रसाद सिंह हैं। घटना के संबंध में परिजनों ने बताया कि किसान मोर्चा के मंडल अध्यक्ष रामभज्जू सिंह बेगूसराय स्टेशन रोड में अपने पुत्र के यहां रहते थे। बुधवार की सुबह वह साइकिल से चाणक्य नगर जा रहे थे। जेल से आगे एनएच पार करने के दौरान खगड़िया की ओर से काफी तेज गति से आ रहे एक चार चक्का वाहन ने कुचल दिया। घटना के बाद आसपास के लोग जब तक मौके पर पहुंचते, वाहन चालक गाड़ी लेकर भाग निकला। घटना के तुरंत बाद पहुंची नगर थाना की गश्ती टीम ने उन्हें सदर अस्पताल लाया। जहां डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया।

चंद्रयान 3 की लैंडिंग पर पूर्व विधायक ने हवन-पूजन कर इसरो वैज्ञानिकों को दी बधाई

एजेंसी

सहरसा। अंतरिक्ष की दुनिया में भारत इतिहास रचने को तैयार है।इसरो के वैज्ञानिक तीसरे चंद्र मिशन के तहत चंद्रयान-3 का लैंडर मॉड्यूल एलएम आज शाम चंद्रमा की सतह पर उतरेगा। इसकी सफलता के लिए बुधवार को शंकर चौक पर नव निर्माण मंच के तत्वाधान में पूजा, हवन के बाद प्रसाद वितरण किया गया।इस अवसर पर मंच के संस्थापक पूर्व विधायक किशोर कुमार ने प्रसन्नता व्यक्त कर कहा कि आज चंद्रयान 3 की सफलतापूर्वक चांद पर लैंडिंग को लेकर पूरा देश उत्सुक है। इसरो के कई वैज्ञानिक इस पूरे कार्य में लगे हैं। भारत के मून मिशन चंद्रयान चंद्रमा के साउथ पोलर हिस्से में लैंडिंग की उम्मीद है। पूरा देश इस पल को देखने के लिए

रोमांचित है। चंद्रयान 3 पूरे देश के लिए गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि करफ्ड की टीम पूरे भारत की है।उसकी कड़ी मेहनत देश की प्रगति का प्रमाण है जो लोगों, वैज्ञानिकों और अन्य क्षेत्र से आयी है, न किसी राजनीति दल से। इस टीम में बिहार के गया जिले के इसरो वैज्ञानिक सुधांशु कुमार, समस्तीपुर के अमिताभ कुमार और सीतामढ़ी के रवि कुमार, सहरसा कहरा के आयुष झा भी शामिल है। यह बिहार के साथ सहरसा जिले के लिए भी गौरव एवं प्रसन्नता की बात है। चंद्रयान 3 की सफल लैंडिंग के लिए नव निर्माण मंच के लोग शंकर चौक पर भगवान से प्रार्थना कर वैज्ञानिकों को शुभकामनाएं दी। पंडित दीनानाथ चौबे ने पूजा, हवन करवाया।

खड़े ट्रक में तेज स्कॉर्पियो ने पीछे से मारी टक्कर, एक दर्जन सवार घायल

अररिया। अररिया फारबिसगंज मुख्य मार्ग एनएच 57 फोरलेन सड़क पर बुधवार को स्कॉर्पियो गाड़ी ने सड़क के किनारे खड़े ट्रक में टक्कर मार दी। जिसमे स्कॉर्पियो पर सवार ड्राइवर सहित कुल बारह लोग गंभीर रूप से जख्मी हो गये। घायलों में तीन की हालत काफी नाजुक है, जिसे सदर अस्पताल में प्राथमिक इलाज के बाद हायर सेंटर पूर्णिया रेफर कर दिया गया है। घटना की सूचना के बाद अररिया आरएस ओपी थाना पुलिस मौके पर पहुंचकर सभी घायलों को सदर अस्पताल पहुंचाया। सभी घायल सुपौल जिला के रहने वाले हैं। सुपौल जिला के प्रतापगंज थाना क्षेत्र के गोविंदपुर से स्कॉर्पियो गाड़ी पर सवार महिलाएं गंगा स्नान करने के लिए मनिहारी घाट जा रही थी। इसी क्रम में हरियाबाड़ा के समीप सड़क के किनारे खड़े ट्रक में स्कॉर्पियो गाड़ी ने पीछे से ठोकर मार दी। टक्कर को जोरदार आवाज के बाद स्थानीय लोग मौके पर पहुंचकर अररिया आरएस ओपी थाना पुलिस को घटना की सूचना दी। जिसके बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने सभी घायलों को सदर अस्पताल भिजवाया। घायलों में 25 वषीर्या हिना देवी पति-अशोक यादव, 35 वर्षीय दिना देवी पति-उमेश मंडल, 30 वषीर्या सरिता देवी पति -बिरेन मंडल, 26 वषीर्या रीता देवी पति-महेश यादव, 45 वषीर्या प्रमिला देवी पति-भोला मंडल, 15 वषीर्या पवन कुमारी पिता-भोला मंडल, 14 वषीर्या रेखा खुमारी पिता-गौसानंद मंडल, 45 वषीर्या सुभद्रा देवी पति-रामू मंडल, 22 वर्षीय रामचंद्र कुमार पिता-राम प्रसाद यादव, 49 वषीर्या उर्मिला देवी, 11 साल की झिंगू मंडल, 45 साल की कमिया देवी,12 साल का तारानंद मंडल, 37 वषीर्या विमला देवी पति-जुगेश्वर मंडल शामिल है।

वज्रपात से दंपति की मौत

हाजीपुर। बिहार में वैशाली जिले के महुआ थाना क्षेत्र में बुधवार को वज्रपात से दंपति की मौत हो गयी। पुलिस सूत्रों ने यहां बताया कि तारा चौक में वज्रपात हुआ। इस घटना में राज नारायण पासवान (54) और उसकी पत्नी सुमित्रा देवी (45) की झुलसकर मौत हो गयी।

हाइकोर्ट ने याचिका खारिज की

पटना। पटना हाईकोर्ट ने टीईटी उत्तीर्ण शिक्षकों को (9300-34800) का नियमित वेतनमान दिये जाने से संबंधी याचिकाओं को खारिज कर दिया। हाई कोर्ट की खंडपीठ ने समीर सारस्वत एवं अन्य द्वारा दायर याचिकाओं पर सुनवाई की. राज्य सरकार की दलील को स्वीकार करते हुए पटना कोर्ट ने नियमित शिक्षकों के बराबर वेतन की मांग करने वाली टीईटी शिक्षकों की याचिका खारिज कर दिया।

स्पीड न्यूज

हर्षोल्लास के साथ मनाई गई गोस्वामी तुलसीदास जयंती

बारियातू। प्रखंड मुख्यालय स्थित सरस्वती शिशु विद्या मंदिर बारियातू में बुधवार को धूम-धाम व हर्षोउल्लास के साथ गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्म जयंती मनाया गया। जयंती के मौके पर प्रधानाचार्य जितेन्द्र राम वरिष्ठ आचार्य राजकिशोर मिश्र ने मां शारदे ओउम भारत माता एवं गोस्वामी तुलसीदास जी के तस्वीर पर दीप प्रज्वलन एवं पुष्प अर्पित कर किया। प्रधानाचार्य जितेन्द्र राम ने छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि यह विद्या भारती की योजना है इसके तहत यह कार्यक्रम मनाया जा रहा है। इस जन्म जयंती कार्यक्रम से छात्राओं के अंदर अपने संत महात्माओं के प्रति आदर एवं सम्मान का भाव जगेगा। कार्यक्रम का संचालन आचार्य लक्ष्मण राम एवं धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ आचार्या वीणा देवी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में आचार्य शशि कुमार सिंह नीतीश कुमार बसंत कुमार आचार्या किरण देवी, खुशबू कुमारी, विनीता कुमारी, मधुबाला कुमारी सहित विद्या मंदिर के छात्र छात्रा मौजूद थे।

शिक्षक मुनेश्वर की शहादत पर शिक्षकों ने की श्रद्धांजलि अर्पित

महुआडांड़। महुआडाड़ प्रखंड कार्यालय परिसर स्थित गोलघर में पारा शिक्षकों ने पारा शिक्षक मुनेश्वर जी की शहादत को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर शहादत दिवस मनाया। पारा शिक्षक संघ के जिला कोषाध्यक्ष प्रखंड उपाध्यक्ष सुभाष कुमार गुप्ता ने कहा कि शिक्षक मुनेश्वर जी की शहादत व्यर्थ नहीं जाएगी, झारखंड की वर्तमान सरकार इसी मिट्टी की सरकार है, और जिन संघर्षों के बाद झारखंड की स्थापना हुई है, वह इस मिट्टी के संघर्ष को अच्छी तरह से जानते हैं, वे जरूर हमारे संघर्षों को समझेंगे और हमें वेतनमान दिया जाएगा। इस शहादत दिवस के मौके पर पारा शिक्षक संघ के जिला कोषाध्यक्ष व प्रखंड उपाध्यक्ष सुभाष कुमार गुप्ता, प्रखंड अध्यक्ष महेंद्र खलखो, प्रखंड कोषाध्यक्ष निर्मल उरांव, पारा शिक्षक विजय तिर्की, रेणुका कुजूर, कैरोलिन खलखो, फिरतु बड़ाईक, उमेश कुमार समेत अन्य पारा शिक्षक उपस्थित थे।

ब्याज माफी योजना के तहत शिविर आज

लातेहार। जिला मुख्यालय के विद्युत विभाग कार्यालय लातेहार में आगामी 24 अगस्त से बिजली बिल में सरकार के द्वारा लायी गई ब्याज माफी योजना के तहत शिविर का आयोजन किया जाएगा। जिसकी जानकारी लातेहार के कनीय विद्युत अभियंता अंकित कुमार ने दी। उन्होंने बताया कि वैसे उपभोक्ता जिनका बिजली कनेक्शन पूर्व में कट चुका है या बहुत दिनों से उन्हें बिजली बिल प्राप्त नहीं हो रहा है। वे अपना बकाया बिजली बिल का भुगतान कर ब्याज माफी योजना का लाभ उठा सकते हैं। साथ ही अपनी बिजली सेवा पुनः चालू करा सकते हैं। उन्होंने कहा कि बकाया बिजली बिल का भुगतान नहीं करने पर सर्टिफिकेट केस व कुर्की जब्ती की कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने बिजली उपभोक्ताओं से लाभ उठाने की अपील की है।

नेतरहाट: लेवी को लेकर नक्सली संगठन टीपीसी ने पानी टंकी निर्माण कार्य पर लगाई रोक

पिछले दो महीने से निर्माण कार्य पुरी तरह है ठप

खबर मन्त्र संवाददाता

महुआडांड़। नक्सली संगठन टीपीसी के भय से पिछले दो महीने से पीएचईडी विभाग से प्रर्यटन नगरी नेतरहाट मे बन रहे पानी टांकी, इटकवेल, वाटर ट्रीटमेंट प्लांट, के स्टाफ क्वार्टर का निर्माण कार्य बंद पड़ा है। इस संबंध मे मिली जानकारी के अनुसार पीएचईडी विभाग के पेयजल आपूर्ति योजना के तहत नेतरहाट तालाब के समीप बन रहे उक्त योजना को गत 13 जून 2023 को निर्माण कार्य स्थल के पास टीपीसी संगठन ने पोस्टर लगा कार्य बंद करने के निर्देश दिया था। तब से लेकर अभी तक निर्माण का कार्य संवेदक के द्वारा बंद कर रखा गया है। उक्त कार्य सेप्टरा पीओ और जेवी शिवा कांत मिश्रा नामक दो कंपनी मिलकर कर रहे हैं। कार्य 2024 तक पूर्ण करना था लेकिन संवेदक द्वारा अब तक 50% भी कार्य नहीं किया जा सका है। चिपकाये गये पोस्टर मे ठेकेदारों को चेतावनी जारी करते हुए

पानी टंकी निर्माण कार्य पर लगाई रोक।

लिखा गया है कि क्षेत्र मे हो रहे कार्य बिना संगठन को माईनेज किये न करें अन्यथा फौजी कार्रवाई की जायेगी। पोस्टर मे चोर, दलाल को भी होशियार करते हुए लिखा गया है कि संगठन का नाम बेचकर कार्य न करें अन्यथा गोली खाने को तैयार रहें। इस संबंध में पूछे जाने पर नेतरहाट थाना प्रभारी बंधन भगत ने बताया कि उन्हें मामले की जानकारी नहीं है, लेकिन फिर भी वह अपने स्तर से मामले की जांच कर रहे है। बता दें कि साल 2022 से ही नेतरहाट क्षेत्र में नक्सली धीरे-धीरे एक बार फिर दहशत फैलाने में जुट गए हैं। लंबे अरसे तक शांत रहने के बाद इस वर्ष नक्सली जिले में विकास कार्यों में लगे मुंशी के साथ मारपीट की घटना को अंजाम दे चुके हैं साथ ही एक व्यक्ति की जान भी ले चुके है। वहीं इस संबंध में ठिकेदार एवं पीएचईडी विभाग के जेई से संपर्क स्थापित करने के लिए फोन भी किया गया पर फोन रिसीव नही किये जाने के कारण बात नही हो पाई।

टोरी स्टेशन अधीक्षक ने पेश की मानवता की मिशाल

देर रात्रि स्टेशन परिसर में प्रसव पीड़ा से जूझ रही महिला की मदद की

➲ महिला यात्रियों की मदद से स्टेशन परिसर में हुआ महिला का प्रसव

खबर मन्त्र संवाददाता

चंदवा। स्थानीय टोरी स्टेशन जंक्शन में पदस्थापित स्टेशन अधीक्षक रंजीत कुमार ने मानवता का मिशाल पेश करते हुए प्रसव पीड़ा से जूझ रही महिला बसंती देवी पति जितवाहन मलार (कांटा टोली रांची) की मदद की व समय पर मेडिकल सुविधा नही मिलने पर स्टेशन परिसर में सो रही महिला यात्रियों की मदद से महिला का सफल प्रसव भी कराया। एसएस रंजीत कुमार ने बताया कि वे मंगलवार मध्यरात्रि बाद लगभग ढाई बजे स्टेशन के निरीक्षण के लिए निकले थे, इसी क्रम में स्टेशन परिसर में एक महिला लगभग 3 साल की बेटी के साथ स्टेशन पड़ी कराह रही थी। महिला की गंभीर स्थिति को देखते हुए उन्होंने तत्काल दो और रेल कर्मियों को बुलाया। स्थिति देखते से पता चला कि महिला को प्रसव पीड़ा हो रही है। जिसके बाद एसएस ने 108 एम्बुलेंस को कॉल कर मेडिकल हेल्प मांगी। 108 की टीम के द्वारा पूरा डिटेल्स लिया गया लेकिन एम्बुलेंस काफी देर तक नही आई, जिसके बाद एसएस ने चंदवा सीएचसी के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी को फोन किया तो उन्होंने 108 को फोन करने या फिर अपने स्तर से प्रसूति को किसी प्रकार अस्पताल भेजने की बात कही। लेकिन जंक्शन परिसर में मरीज को ले जाने की कोई सुविधा नहीं थी और लगातार प्रसूति की प्रसव पीड़ा बढ़ती जा रही थी। इसके बाद स्टेशन अधीक्षक ने सूझबूझ का परिचय देते हुए स्टेशन परिसर में सो रही महिला यात्रियों को जगाया और प्रसव पीड़ा से जूझ रही महिला की मदद करने की अपील की। जिसके बाद कुछ महिला यात्री मदद के लिए आगे आयी व स्टेशन में ही महिला का प्रसव हो गया।

रांची से गढ़वा जा रही थी महिला

प्राप्त जानकारी के अनुसार बसंती देवी पति जितवाहन मलार (कांटा टोली रांची) रांची से गढ़वा जाने के लिए अपनी तीन साल की बेटी के साथ ट्रेन में बैठी थी। इसी दौरान उसका प्रसव पीड़ा शुरू हो गया। पीड़ा बढ़ता देख बसंती देवी टोरी स्टेशन में ही उतर गई। अकेली होने के कारण उसने इसकी जानकारी न ही रेल के अधिकारियों को दी और न ही आसपास के यात्रियों को। अगर स्टेशन अधीक्षक रात्रि निरीक्षण में नही निकलते तो प्रसूति व बच्चे की जान भी जा सकती थी।

क्या कहती है सीएचसी प्रभारी

इस संबंध में पूछे जाने पर सीएचसी प्रभारी डॉ. नीलिमा कुमारी ने बताया कि एसएस के सूचना दिए जाने के तुरंत बाद उन्होंने 108 एम्बुलेंस व सीएचसी की दो महिला कर्मी के साथ मेडिकल टीम को भेज दी थी। जिनके द्वारा स्वस्थ्य कर्मी के द्वारा बच्चे का नाल काटकर प्रारंभिक उपचार किया व जच्चा बच्चा को अस्पताल लाया गया। दोनो जच्चा बच्चा स्वस्थ्य है।

सुबह लगभग 4 बजे प्रसूति महिला को लाया गया अस्पताल

महिला का प्रसव होने के बाद लगभग पौने चार बजे एम्बुलेंस स्टेशन परिसर पहुंची व प्रसूति को अस्पताल लाया गया। खबर लिखे दोनो जच्चा-बच्चा लोग अस्पताल में इलाजरत थे।

खबर का असर : गुरुवे गांव के प्रवासी मजदूर के मौत की खबर छपते ही शिविर का हुआ आयोजन

बारियातू। प्रखंड क्षेत्र के बालूभांग पंचायत अंतर्गत गुरुवे गांव का हैदराबाद मे काम करने गए प्रवासी मजदूर की मौत की खबर खबर मन्त्र हिंदी दैनिक मे प्रमुखता से प्रकाशित होते ही स्वास्थ्य विभाग ने संज्ञान मे लेते हुए गुरुवे विद्यालय परिसर मे स्वास्थ्य शिविर लगाकर कई लोगों को स्वास्थ्य जाँच किया। स्वास्थ्य विभाग के एमपीडब्लू संदीप कुमार, अनिल कुमार व एएनएम सोनी कुमारी ने जानकारी देते हुए बताया की गाँव मे डायरिया का प्रकोप है। उक्त प्रकोप को देखते हुए चकित्सा प्रभारी के निर्देशानुसार शिविर लगाकर स्वास्थ्य जाँच की गई साथ ही आवश्यकता अनुसार निःशुल्क दवा भी दी गई। स्वास्थ्य कर्मियों ने ग्रामीणों को बताया की घर के आसपास साफ- सफाई रखे, गर्म भोजन का उपयोग करें, गाँव की सहिया से ओआरएस घोल लें, पानी को उबाल कर पिएं, जंगली पुटका, खुखड़ी कम मात्रा मे खाने सहित अन्य कई महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। मौके पर मुखिया केदार गँझू, पंसस राजेश मोची, वार्ड सदस्य मनोज मोची, गुजर गंझु सहित कई अन्य लोग मौजूद थे।

शिविर मे जांच करते स्वास्थ्य कर्मी।

खबर मन्त्र असर

पुलिस ने फरार चल रहे दो अलग-अलग कांड के तीन अभियुक्त को किया गिरफ्तार

खबर मन्त्र संवाददाता

बारियातू। एसडीपीओ अजीत कुमार सिंह को मिली गुप्त सूचना के आधार पर थाना प्रभारी मुकेश कुमार चौधरी के नेतृत्व में छापामारी अभियान चला कर फरार चल रहे दो अलग अलग स्थानों से तीन अभियुक्त छोटु उरांव पिता रामधनी उरांव, अमित उरांव पिता लाला उरांव व कैलाश उरांव पिता बासुदेव उरांव को गिरफ्तार कर बुधवार को लातेहार जेल भेज दिया। जानकारी देते हुए थाना प्रभारी मुकेश कुमार चौधरी ने बताया कि बालूमाथ एसडीपीओ अजीत कुमार सिंह को गुप्त सुचना मिली थी की बारियातू थाना कांड संख्या 51/23 धारा 302/34 के प्राथमिक अभियुक्त छोटु उरांव पिता रामधनी उरांव,अमित उरांव पिता लाला उरांव दोनों ग्राम बिश्रामपूर व महिला थाना रांची के कांड संख्या 30/23 धारा 376 एवं 4/6 पोक्सो एक्ट के अभियुक्त कैलाश उरांव पिता बासुदेव उरांव ग्राम मकरा थाना बारियातू जिला लातेहार निवासी घर आया हुआ है। गुप्त सूचना के आधार पर थाना स्तरीय टीम गठित किया गया और छापामारी अभियान चला कर तीनों आरोपियों को अपने अपने घर से गिरफ्तार कर लातेहार जेल भेज दिया गया। छापामारी अभियान में थाना प्रभारी मुकेश चौधरी, पुलिस अवर निरिक्षक बिंन्देश्वर महतो, धर्मेश कुमार लेंबु सहायक अवर निरिक्षक मिथलेश सिंह के अलावा थाना के कई सशस्त्र बल के जवान शामिल थे।

गिरफ्तार अभियुक्त।

हाथियों के झुंड ने चार घरों को किया ध्वस्त, बेघर हुए लोग

खबर मन्त्र संवाददाता

बालूमाथ। बालूमाथ प्रखंड क्षेत्र के बसिया ग्राम के बिसोदाड़ी टोला में मंगलवार की देर रात करीब 11:00 बजे हाथियों के झुंड में उत्पात मचाते हुए चार घरों को ध्वस्त कर दिया और घर मे रखा अनाज चावल, आलू, गेंहूं, महुआ, मक्का खा गये। वहीं दो मवेशी एक बैल, एक सुवर को पटक कर मार डाला। ग्रामीणों के अनुसार आठ की संख्या में आये हाथियो के झुंड ने सिलवंती मसोमात पति स्व. बिमल गंझु, चन्द्र तुरी पिता सिदर तुरी, राजदेव गंझु पिता प्रभु गंझु, रामजीत गंझु पिता सहजदेव गंझु के घर को ध्वस्त कर दिया। उपरोक्त घर के लोगो ने भागकर किसी तरह अपनी जान बचाई।

ध्वस्त घर।

सिलवंती मसोमात ने बताया कि पति की मौत के बाद किसी तरह मजदूरी कर अपने परिवार का पेट पालती है। घर टूट जाने से वह बेघर हो गयी है। इसके अलावा हाथियों द्वारा तोड़े गए सभी घरों के लोग मजदूरी कर अपने परिवार का पेट पालते है। घर टूट जाने से सभी बेघर हो गए है। वहीं घटना की सूचना पाकर बालूमाथ के प्रभारी फोरेस्टर विजय शंकर, हेरहंज प्रभारी फोरेस्टर विश्वदेव पांडे ने घटनास्थल पहुंचकर मामले की जानकारी ली और उचित मुआवजा देने की बात कही। मौके पर पूर्वी जिप सदस्य प्रियंका कुमारी, पहड़ा राजा प्रभुदयाल उरांव, भाजपा मंडल अध्यक्ष लक्ष्मण कुशवाहा, एससी मोर्चा उपाध्यक्ष अमित कुमार ने वन विभाग से वार्ता करते हुए पीड़ितों को उचित मुआवजा और हाथियो के झुंड को भगाने के लिए टॉर्च, लाइट देने की मांग किया। प्रभारी फॉरेस्टर ने बताया की वन विभाग द्वारा बाहर की टीम मंगाकर हाथियों के झुंड को खदेड़ने का प्रयास किया गया है। लेकिन उसमें भी सफलता हाथ नहीं लग रही है।

एक नजर में

झूलते तार की चपेट में आने से युवक की मौत

बालूमाथ। बालूमाथ थाना क्षेत्र के सेरेगड़ा ग्राम में बुधवार को झूलते तार की चपेट में आने से मोहम्मद गुफरान 35 वर्ष पिता मोहम्मद मिनहाज की मौत हो गई। मिली जानकारी के अनुसार मोहम्मद गुफरान घर के समीप कुछ कार्य कर रहा था। इसी बीच बिजली के झूलते तार की चपेट में वह आ गया और गंभीर रूप से झुलस गया। परिजनों द्वारा घायल अवस्था में मोहम्मद गुफरान को बालूमाथ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया। जहां चिकित्सक डॉक्टर सुरेंद्र कुमार द्वारा मृत घोषित कर दिया गया। घटना के बाद परिजनों को का रो-रो कर बुरा हाल है। मृतक अपने पीछे दो बच्चे को छोड़कर गए। घटना के बाद बालूमाथ पुलिस शव को कब्जे में कर पोस्टमार्टम हेतु लातेहार भेज दिया है।

नियम को ताख पर रखकर बनाया गया बालूमाथ सीएचसी का प्रभारी

बालूमाथ। स्वास्थ्य विभाग इन दिनों सारे नियम को ताक पर रखकर चलाया जा रहा है। लातेहार सिविल सर्जन अशोक कुमार ने नियम को ताख पर रखकर बालूमाथ में दो सरकारी चिकित्सक डॉ संजय कुमार सिद्धार्थ एवं डॉ अमरनाथ प्रसाद एवं हेरहंज स्वास्थ्य केंद्र के एक सरकारी चिकित्सक ध्रुव कुमार एवं दो आयुष चिकित्सक एक डेंटल चिकित्सक रहने के बावजूद भी चंदवा के चिकित्सक डॉ प्रकाश बड़ाइक को सीएचसी का प्रभारी बना दिया गया है जो चर्चा का विषय है। बालूमाथ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र तीन प्रखंड बालूमाथ, हेरहंज एवं बारियातू के मरीज यहां ईलाज कराने आते हैं। लगभग दो लाख की आबादी संभालने वाले सीएससी में चंदवा के चिकित्सक को प्रभारी बनाए जाने से यहां के कई कार्य प्रभावित होंगे। कुछ जानकार लोगों ने कहा कि आज तक के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ है कि यहा सरकारी चिकित्सक रहने के बावजूद दूसरे प्रखंड के चिकित्सक को प्रभार दिया गया है। इस संबंध में सिविल सर्जन डॉक्टर अशोक कुमार ने कहा कि यहां के चिकित्सकों का भार कम करने के लिए चंदवा के चिकित्सक को प्रभारी बनाया गया है।

लातेहार सिविल सर्जन ने बालूमाथ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का किया निरीक्षण दियें कई दिशा निर्देश

बालूमाथ। लातेहार सिविल सर्जन अशोक कुमार ने बुधवार को बालूमाथ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का अचौक निरीक्षण किया। वहीं अस्पताल में हो रहे समस्याओं से अवगत हुए। सिविल सर्जन डॉक्टर अशोक कुमार ने कहा कि निरीक्षण के दौरान यह पाया गया कि बालूमाथ में चिकित्सकों की कमी को देखते हुए चंदवा के चिकित्सक को बालूमाथ का प्रभारी बना दिया गया है। बालूमाथ में दो एंबुलेंस रहने के बावजूद चालक के अभाव में एक ही एंबुलेंस संचालित है। जिसको लेकर एक एंबुलेंस चालक उपलब्ध कराया जाएगा। यहां कमरे के अभाव को देखते हुए बगल में अतिरिक्त कमरा बनाया जाएगा। बालूमाथ सीएससी पर तीन प्रखंड निर्भर है। प्रत्येक दिन यहां 250 से 300 ओपीडी मरीज एवं 20 से 25 इमरजेंसी मरीज देखा जाता है। दवा उपलब्ध है फिर भी जो दवाइयां आवश्यक है उसे शीघ्र ही उपलब्ध करा दिया जाएगा। उन्होंने लातेहार से महिला चिकित्सक का प्रतिनिधि करने पर कहा कि अगर महिला चिकित्सक का बालूमाथ में प्रतिनिधि कर दी जाएगी तो सदर अस्पताल बंद हो जाएगा। उन्होंने कहा कि बालूमाथ अस्पताल में ईलाज करने वाले प्रत्येक मरीज से 5 सेवा शुल्क लागू करने पर विचार किया जा रहा है। ताकि इस शुल्क से कई संसाधन को जुटाने में सहयोग मिल सकेगा। वही सभी स्वास्थ्य कर्मियों को ड्रेस कोड में रहने का निर्देश दिया। इस मौके पर डॉक्टर अमरनाथ प्रसाद, डॉक्टर संजय सिद्धार्थ, डॉक्टर सुरेंद्र कुमार,महिला दंत चिकित्सक अलीशा समेत कई स्वास्थ्य कर्मी उपस्थित थे।

निरीक्षण करते सीएस।

सुकन्या ट्रस्ट ने बालिकाओं के बीच किया पठन पाठन सामग्री का वितरण

लातेहार। सुकन्या सामाजिक जन सहयोग फाउंडेशन ट्रस्ट कमिटी के तत्वाधान में सासंग पंचायत में 45 बालिकाओ के बीच प्रखण्ड प्रभारी राजवर्धन सिंह के माध्यम से पठन-पाठन सामग्री वितरण किया गया। आगे जिला प्रभारी राजु सिंह ने बताया कि ट्रस्ट लगातार चार साल से गरीब एवं असहाय लोगो को विशेष सहयोग करती आ रही है। ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य महिलाओ को रोजगार से जोड़ने हेतु अगरबत्ती, मोमबती, पापड़, सिलाई कढ़ाई, ब्यूटीशियन का प्रशिक्षण देना, बालिकाओ के बीच पठन पाठन समाग्री का वितरण करना, शादी के समय आर्थिक एवं समाजिक सहयोग करना वहीं उन्होने ग्रामीणो को बताया कि सभी बालिकाओ को प्रेरित करें। एक रोटी कम खाए लेकिन स्कूल जरूर भेजे, अगर एक घर महिला शिक्षित होती है तो उस घर मे सभी परिवार शिक्षित हो जाती है। इस मौके पर पंचायत प्रभारी गुलबसा बीबी सहित कई लोग उपस्थित थे।

पठन-पाठन सामग्री वितरण करते राजु सिंह।

चार दिनों से युवक लापता परिजन परेशान

चंदवा। शहर से सटे डेमटोला निवासी भुवनेश्वर चौधरी उम्र 23 वर्ष पिता कुलेश्वर चौधरी पिछले रविवार पूर्वाह्न 10:00 बजे से लापता है। इस संबंध में उनके पिता कुलेश्वर चौधरी बताते हैं कि बायपास रोड में मटन शॉप है रविवार को जब मैं 10:00 बजे दुकान पहुंचा तो अपने पुत्र से कहा कि घर जाकर खाना खा लो वह घर भी गया, लेकिन घर के अंदर नहीं गया और वहीं से कहीं निकल गया। वहा हाफ पैंट व गंजी पहने हुए हैं। रविवार के बाद से उसका कोई पता नहीं चल रहा है। काफी खोजबीन करने के बाद पिता ने इसकी सूचना चंदवा थाना को दिए जाने की बात कही है। आवेदन में प्रशासन से लापता पुत्र को खोजने की गुहार लगाई है।

हॉकी प्रतियोगिता के लिए बालक बालिका टीम राज्य स्तर प्रतियोगिता में भाग लेने खुंटी रवाना

महुआडांड़। महुआडांड़ प्रखंड के संत मिखाइल साले विद्यालय से बालक व बालिका हॉकी टीम के साथ संत जोसेफ पल्स टू विद्यालय की हॉकी टीम खेलो झारखंड जवाहरलाल नेहरू हॉकी प्रतियोगिता के राज्य स्तर प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए रवाना हुई। इन तीनों टीमों को खुशीद खान, महताब आलम व संत जोसेफ पल्स टू विद्यालय के खेल पदाधिकारी सुशांत द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। यह प्रतियोगिता खुंटी में आयोजित हो रही है। जो 24 अगस्त से लेकर 27 अगस्त तक चलेगी।

टेट पास पारा शिक्षकों के साथ अन्याय कर रही है सरकार

सरकार का यह निर्णय प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था को विनाश की ओर ले जाएगा

खबर मन्त्र संवाददाता

बरवाडीह। विगत बीस वर्षों से लगातार झारखंड के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में शिक्षा का अलख जगाते हुए सरकारी शिक्षक बनने की (शिक्षक प्रशिक्षण, सेवा कालीन प्रशिक्षण, शिक्षक पात्रता परीक्षा) सभी आहताओं को पारा शिक्षकों ने पूरा करने का काम किया। लेकिन अब झारखंड सरकार इनके साथ अन्याय करने जा रही है। टेट पास सहायक शिक्षकों ने बताया कि नयी शिक्षा नीति (2010) लागु होने के उपरांत अब तक झारखंड सरकार, झारखंड शिक्षक नियुक्ति नियमावली 2012 के अनुसार सिर्फ दो बार शिक्षक पात्रता परीक्षा 2013 एवं 2016 में आयोजित कर सकी है। अब नयी शिक्षक नियुक्ति नियमावली- 2021 के अनुसार 2023 में पे स्केल घटाकर (चतुर्थ श्रेणी के वेतनमान पर) सहायक आचार्य के पदनाम से शिक्षकों की नियुक्ति करना चाह रही है। वह भी तब जब कि उस शिक्षक पात्रता परीक्षा को उत्तीर्ण करने के पश्चात जो प्रमाण पत्र प्रदान किया गया है, उसमें यह स्पष्ट उल्लेख है कि प्रमाण पत्र धारक सहायक शिक्षक (4200-4600 ग्रेड पे) बनने के योग्य हैं। ना की सहायक आचार्य (2400 - 2800) देखा जाए तो झारखंड सरकार का यह कदम तकनीकी रूप से भी त्रुटिपूर्ण है। इसी झारखंड सरकार के एक अंग जैक ने झारखंड के बेरोजगार युवाओं को सहायक शिक्षक बनने की योग्यता का प्रमाण पत्र दिया है, और अब झारखंड सरकार उसी प्रमाण पत्र के आधार पर झारखंडी युवाओं को 9 घंटे की परीक्षा से गुजार कर सहायक आचार्य बनाने पर तुली हुई है। और सबसे हास्यास्पद तो यह है कि नयी नियुक्ति नियमावली में यह प्रावधान किया गया है कि अब नियुक्त होने वाले अभ्यर्थी सहायक आचार्य के रूप में 10 वर्षों के कार्यकाल के पश्चात सहायक शिक्षक में प्रोणत्त होंगे। कोई भी पढ़ें लिखे व्यक्ति यह सोचकर देखें कि शिक्षा विभाग में कार्यरत पारा शिक्षक 18-20 वर्षों से सेवा दे रहे 45 से 50 वर्ष की आयु सीमा को पार कर चुके हैं। क्या यह न्यायसंगत है कि 20 वर्षों की सेवा देने के बाद भी पारा शिक्षकों को सहायक आचार्य बनकर, फिर 10 वर्षों के बाद सहायक शिक्षक बनने का अवसर दिया जाएं। सोच कर देखा जाए कि 45-50 आयु वर्ग के कार्यरत पारा शिक्षकों को (कार्य अवधि-न्यूनतम 9 से 3) कब समय मिलेगा कि वह 9 घंटे वाली परीक्षा की तैयारी भी कर पाएंगे। अपना सर्वस्व झोंक देने वाले विशुद्ध झारखंडी पारा शिक्षकों के साथ झारखंड सरकार कैसे इतना भद्दा मजाक कर सकती है। झारखंड के हर बुद्धिजीवी वर्ग को इस बात पर कम से कम एक बार जरूर विचार करना चाहिए। क्योंकि झारखंड सरकार का यह ऐतिहासिक कदम झारखंड की प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था को विकास की ओर नहीं, बल्कि विनाश की ओर ले जाएगा।

टेट पास पारा शिक्षक संघ।

चंद्रयान-3 के सफल लैंडिंग के बाद हर्ष का माहौल, लोगों ने दी इसरो को बधाई

➲ विश्व में भारत पहला देश जो: चांद के साउथ पोल में उतारा

➲ वैश्विक स्तर में हमारी स्थिति मजबूत होगी

चंदवा। बहुप्रतीक्षित चंद्रयान 3 के सफल लैंडिंग के बाद से ही देश में जश्न का माहौल बन गया। लोगों ने जैसे ही टीवी में इसरो के द्वारा घोषणा की सूचना देखी और सभी के चेहरे में चमक आ गयी। चंदवा के वरीय भाजपा नेता महेंद्र साहू ने कहा कि यह देश के लिए गौरव का क्षण है। वैश्विक स्तर में हमारी स्थिति मजबूत होगी। चंद्रमा पर चंद्रयान-3 की सफल सॉफ्ट लैंडिंग ऐतिहासिक है। ये पल भारत का है, इसके लोगों का है। वही राजकुमार साहू ने इसरो के वैज्ञानिकों को इस कार्य हेतु साधुवाद दिया। कहा कि इसरो के वैज्ञानिकों ने बता दिया कि हम किसी भी मामले में किसी भी देश से पीछे नहीं है। अब चांद में भारत का झंडा गर्व से लहरेगा। राजकुमार पाठक व दीपक निषाद ने देश के वैज्ञानिकों की प्रशंसा करते हुए कहा कि अब चांद दूर नहीं, भारत के वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया कि आज का भारत किसी से पीछे नही। भाजपा मंडल अध्यक्ष अमित कुमार गुप्ता ने कहा कि दो बार मिशन फेल होने के बाबजूद भारत के वैज्ञानिकों में जिस तन्मयता से इस मुहिम से जुड़े रहे उनकी सफलता से आज पूरा देश झूम रहा है। भारत विश्व गुरु बनने की राह में एक कदम और बढ़ गया है।

चांद पर लहरा तिरंगा, झूम उठी लौहनगरी

चंद्रयान को अंतरिक्ष में ले जाने वाला रॉकेट का क्रेन टाटा में बना

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। चांद पर भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी इसरों का चंद्रायन-3 अंतरिक्ष यान की सफल लैंडिंग होते ही लौहनगरी जमशेदपुर के लोग झूम उठे हैं। आधी-बारिश के बीच लोगों की नजरें टीवी और मोबाइल पर इसरो के लाइव प्रसारण पर टिकी रहीं। अंततः हमारा अंतरिक्ष यान चांद के सबसे दुर्गम माने जाने वाले दक्षिण छोर पर सफलतापूर्वक लैंड कर गया। शहर के आम से लेकर खास लोग अपनी खुशियां छुपा नहीं पा रहे। सभी राजनीतिक दलों और सामाजिक दलों ने देश के वैज्ञानिकों की इस बहुप्रतीक्षित उपलब्धि पर खुशी व्यक्त की है। खुशी में लोग सड़कों पर उतर आये और जम कर तिरंगा लहराया, मिठाइयां बांटी। टाटा समूह के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन और टाटा स्टील लिमिटेड ने भी इसरो के वैज्ञानिकों, देशवासियों और पीएम को बधाई दी है। जमशेदपुर में जश्न का माहौल है। आतिशबाजी कर 51 किलो लड्डू वितरण किया गया।

हर भारतीय को गर्व : एन चंद्रशेखरन

जमशेदपुर। देश की सबसे बड़ी इस्पात उत्पादक कंपनी टाटा स्टील ने इसरो के अंतरिक्ष अभियान चंद्रायन-3 में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। कंपनी के प्रवक्ता ने यहां जारी संदेश में कहा कि टाटा स्टील परिवार आज चंद्रमा पर सफल लैंडिंग के लिए चंद्रयान-3 चंद्र अन्वेषण मिशन के पीछे भारत सरकार और पूरी इसरो टीम को बधाई देता है। प्रवक्ता सर्वेश कुमार ने अपने बयान में आगे कहा कि टाटा स्टील को भारत के चंद्र अन्वेषण मिशन चंद्रयान-3 का हिस्सा होने पर गर्व है, क्योंकि कंपनी की अत्याधुनिक क्रेन तकनीक ने मिशन के फैट बॉय - एलवीएम3-एम4 रॉकेट के संयोजन को सक्षम बनाया। उन्नत क्रेन का निर्माण जमशेदपुर में टाटा ग्रोथ शॉप में किया गया था। कंपनी की अत्याधुनिक क्रेन तकनीक ने ऐतिहासिक चंद्र मिशन में उपयोग किए गए लॉन्च वाहन की निर्बाध असेंबली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। टाटा स्टील ने उल्लेखनीय इलेक्ट्रिक ओवरहेड ट्रैवलिंग (ईओटी) क्रेन की आपूर्ति की, जिसे सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र - श्रीहरिकोटा इसरो में स्थापित किया गया था। चंद्रयान-3 के प्रक्षेपण में अपने योगदान के माध्यम से, टाटा स्टील ने भारत की तकनीकी उन्नति और विकास को बढ़ावा देने के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की है।" दूसरी ओर टाटा समूह के अध्यक्ष एम चंद्रशेखर ने चंद्रयान 3 के सफलतापूर्वक चांद पर उतरने को लेकर प्रधानमंत्री एवं इसरो परिवार को धर्म जोशी भारत बधाई संदेश भेजा है।

ऐतिहासिक दिन : प्रो गौतम सूत्रधार

जमशेदपुर। चंद्रयान-3 चंद्र मिशन की सफलता पर निदेशक एनआईटी जमशेदपुर की ओर से बधाई संदेश जारी किया गया है। निदेशक प्रो डा गौतम सूत्रधार ने अपने संदेश में कहा कि भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र के लिए आज ऐतिहासिक दिन है। चंद्रमा पर चंद्रयान 3 की पहली बार सुरक्षित, सफलतापूर्वक और सॉफ्ट लैंडिंग के लिए सभी भारतीयों, विशेष रूप से इसरो अध्यक्ष, वैज्ञानिक और इस गोल के अधिकारियों को बधाई। यह प्रत्येक भारतीय के लिए एक बड़ी उपलब्धि और भारतीयों का महान प्रयास है।

पूर्व सीएम रघुवर दास ने जताया हर्ष

जमशेदपुर। झारखंड के पूर्व सीएम रघुवर दास ने चंद्रयान 3 मिशन की अभूतपूर्व सफलता और सफल लैंडिंग पर झारखंड समेत देशवासियों को बधाई दी है। उन्होंने मिशन की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि 21वीं सदी के आधुनिक भारत में मोदी जी के दूरदर्शिता और मजबूत इक्षाशक्ति के कारण भारत ने इतिहास रचा है। यह क्षण गौरवान्वित करने वाला है। यह ऐतिहासिक उपलब्धि देश के महान वैज्ञानिकों के अथक परिश्रम का प्रतीक है। श्री दास ने इसरो के वैज्ञानिकों के सफल प्रयासों की सराहना की और उनकी प्रतिभा को नमन किया।

अवैध कोयला ले जा रहे तीन ट्रक जब्त

झरिया/ अलकडीहा। अलकडीहा ओपी क्षेत्र में कोयला तस्करी रुकने का नाम नहीं ले रहा है। बीती रात गुप्त सूचना के आधार पर लोदना सीआईएस एफ पारबाद शिव मंदिर के समीप छापामारी की। जहां से अवैध कोयला लदा तीन ट्रक पकड़ा गया है। जब्त ट्रकों को सीआईएसएफ टीम अलकडीहा पुलिस को सौपा। सीआईएसएफ द्वारा लिखित शिकायत नहीं की थी।इधर छापामारी होने से कोयला चोरो मे हड़कंप मचा हुआ है। अलकडीहा पुलिस अभी कुछ भी बोलने से कतरा रही है। जानकारी के अनुसार लोदना क्षेत्र के सीआईएसएफ को गुप्त सूचना मिली थी की पारबाद के जंगल में अवैध रूप से ट्रकों पर कोयला लोड किया जा रहा है सीआईएसएफ ने जाल बिछाया और ट्रक संख्या जेएच 10 बी यू 6362 जेएच10 सीपी 6277 व जे एच 12 डी 2927 को जब्त किया गया। जबकि कोयला तस्कर और चालक भागने में सफल रहे।

गोस्वामी तुलसीदास की जयंती का आयोजन

कतरास। बुधवार को अपने विद्यालय सरस्वती विद्या मंदिर, सिनीडीह में भारतीय संस्कृति के महानायक गोस्वामी तुलसीदास की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम का प्रारंभ दीप प्रज्वलन से हुआ ,तत्पश्चात विद्यालय के प्राचार्य सुनील कुमार सिंह, उप प्राचार्य दुर्गेश नंदन सिन्हा एवं विद्यालय के संस्कृत आचार्य अजय कुमार पांडे ने गोस्वामी तुलसीदास की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया। अपने उद्बोधन में विद्यालय के प्राचार्य सुनील कुमार सिंह ने कहा कि संकल्प से ही सिद्धि प्राप्त होती है। इस अवसर पर विद्यालय में विद्या भारती द्वारा निर्धारित विषयों पर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गई। कक्षा द्वितीय एवं तृतीय में सुलेख, कक्षा चतुर्थ एवं पंचम में चित्रकला एवं कक्षा षष्ठ से द्वादश तक के लिए निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

26 अगस्त को सिंदरी पहुंचेंगे केंद्रीय रसायन उर्वरक मंत्री मनसुख मांडविया

खबर मन्त्र संवाददाता

सिंदरी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हर्ल सिंदरी खाद कारखाना के विधिवत उद्घाटन को लेकर आगामी 25 अगस्त को केन्द्रीय रसायन उर्वरक मंत्री मनसुख मांडविया धनबाद आएँगे। वह हर्ल खाद कारखाने के उत्पादन संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए 26 अगस्त को सिंदरी का दौरा करेंगे। इसकी जानकारी देते हुए हर्ल सिंदरी एच आर विक्रांत कुमार ने बताया कि देर रात मंत्री महोदय धनबाद आएँगे और अगली सुबह सिंदरी खाद कारखाने का दौरा तय किया गया है।

बताते चलें कि इसको लेकर संयुक्त मोर्चा, संयुक्त संघर्ष मोर्चा और जनता श्रमिक संघ संयुक्त महामंत्री लक्की सिंह का प्रतिनिधिमंडल इसको लेकर तैयारी कर रहा है। जनता श्रमिक संघ संयुक्त महामंत्री लक्की सिंह का स्वागत तालियों की गड़गड़ाहट के बीच कोआपरेटिव मोड़ सिंदरी के व्यवसायियों द्वारा किया गया। इस मौके पर महामंत्री ने कहा कि बाजार में जलजमाव की समस्या जल्द दूर कराई जाएगी। सूर्यदेव सिंह चौक की तरह कोआपरेटिव मोड़ पर भी हाइमास्ट लाइट लगाया जाएगा। महिलाओं के शौचालय की व्यवस्था बाजार में नहीं होने पर उन्होंने वादा किया कि जल्द ही इसे पूरा कर लिया जाएगा। इसकी राशि भी महामंत्री स्वयं वहन करेंगे।

उन्होंने कहा कि मंत्री के आगमन पर प्रतिनिधिमंडल उनसे मिलकर सिंदरी को सुंदरी बनाने के उद्देश्य से ज्ञापन सौंपेगा। संयुक्त मोर्चा ने रोहड़ाबांध में प्रेसवार्ता कर जानकारी दी कि मंत्री के आगमन के कारण दिल्ली यात्रा रद्द की गयी है। धनबाद सांसद के माध्यम से मोर्चा पांच सूत्री ज्ञापन सौंपेगा।

डीपीएस चास में कौशल पाठ योजना विषय पर कार्यशाला

खबर मन्त्र संवाददाता

बोकारो/चास। डीपीएस चास में 21वीं सदी के कौशल पाठ योजना तैयार करने के विषय पर शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया। इसमें रिसोर्स पर्सन क्रिसेंट पब्लिक स्कूल गोविंदपुर, धनबाद के प्राचार्य डॉ अनिल कुमार ने शिक्षकों को कई टॉपिक पर ध्यान आकृष्ट कराया। उन्होंने कहा कि हम विद्यार्थियों का भविष्य तैयार करने के लिए अपनी कक्षाओं में क्या सकारात्मक बदलाव कर सकते हैं। इस पर हमें विचार करने की जरूरत है। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्ज्वलन और गणेश वंदना से की गई। मौके पर डीपीएस चास की कार्यवाहक प्राचार्या दीपाली भुस्कुटे ने कहा कि बच्चों को पढ़ाने से पहले हमें पढ़ाई के तरीके के बारे में सीखने की जरूरत है। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य भी यही है कि हम वैश्विक स्तर के नागरिक तैयार करें जो दुनिया में कहीं भी जाकर अपने कौशल के अनुरुप काम कर सकें।

3.70 करोड़ की योजना का शिलान्यास

झरिया। झरिया विधायक पूर्णिमा नीरज सिंह ने धनबाद नगर निगम क्षेत्र के वार्ड संख्या 47 अंतर्गत लोदना में 3 करोड 70 लाख रुपये की लागत से पथ व नाली निर्माण कार्य का किया शिलान्यास। लोदना बाजार में अंबेडकर चौक के समीप धनबाद नगर निगम क्षेत्र के वार्ड संख्या 47 अंतर्गत लगभग 3 करोड 70 लाख रुपये की लागत से बनने वाले विभिन्न पथों तथा नाली के निर्माण कार्य का शिलान्यास सचेतक सत्तारूढ़ दल सह झरिया विधायक श्रीमती पूर्णिमा नीरज सिंह ने सर्वप्रथम बाबा साहेब भीम राव अंबेडकर जी की मूर्ति पर माल्यार्पण और विधिवत पूजन कर किया। मौके पर विधायक प्रतिनिधि के डी पांडेय, सूरज सिंह, निवर्तमान पार्षद संजय यादव, सोहन महतो, भोला यादव, पुतुल देवी, अजय पासवान, असलम खान, दीपक सिंह, रत्नेश यादव, डब्बू अंसारी व अन्य मौजूद थे।

बीएसएल में नेटवर्किंग कोर्स पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

खबर मन्त्र संवाददाता

बोकारो। बोकारो इस्पात संयंत्र के एचआरडी में संयंत्र के विभिन्न विभागों के लिए मेसर्स सीमेंस लिमिटेड के संकाय पीयूष राज के सहयोग से नेटवर्किंग कोर्स ऑन प्रोफिबस व प्रोफिनेट पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन सीजीएम (विद्युत) देवाशीष सरकार ने किया। उन्होंने इस कार्यक्रम की उपयोगिता पर प्रकाश डाला तथा सभी प्रतिभागियों से इससे अधिकतम ज्ञान हासिल करने की अपील की। जीएम (मार्सवि) देवा श्री रानी टोप्पो ने भी इस कार्यक्रम को अन्तः क्रियात्मक बनाकर अधिकतम ज्ञान अर्जित करने तथा अपने अर्जित ज्ञान को विभाग के लोगों के साथ साझा करने का अनुरोध किया। वरीय प्रबंधक जीके सिंह ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। उक्त आयोजन में वरीय ऑपरेटिव राकेश कुमार का सराहनीय योगदान रहा।

कोलियरी क्षेत्र में छापेमारी, लगभग आठ टन अवैध कोयला, बाइक व साइकिल जप्त

खबर मन्त्र संवाददाता

बेरमो /कथारा। बोकारो जिला के सीसीएल कथारा क्षेत्रीय सुरक्षा पदाधिकारी द्वारा ताबड़तोड़ छापेमारी के बाद भी अवैध धंधेबाजो की करस्तानी बदस्तूर जारी है। छापेमारी में आयेदिन बरामद हो रहे लोहा, कोयला, मशीनरी के बाद भी आखिर अवैध धंधेबाजो पर लगाम क्यों नहीं लग पा रहा है? बड़ा सवाल है। इसपर कारगर रूप से अंकुश लगाने के लिए शायद कोई एक पक्ष में इच्छा शक्ति की कमी है। जिसे दूर करने की जरूरत है। प्राप्त जानकारी के अनुसार कथारा क्षेत्र के सुरक्षा गश्ती दल ने 22 अगस्त को कोलियरी क्षेत्र में छापा मार कर लगभग 8 टन अवैध कोयला सहित दस बाइक व सोलह साइकिल बरामद किया।

गश्ती दल को देखकर कोयला चोर कोयला छोड़कर फरार हो गए। छापेमारी कथारा क्षेत्र के स्वांग तथा जारंगडीह में चलाया गया। इस संबंध में जानकारी देते हुए क्षेत्रीय सुरक्षा पदाधिकारी सुनील कुमार गुप्ता ने बताया कि 22 अगस्त के अहले सुबह कथारा क्षेत्र के महाप्रबंधक डीके गुप्ता के निर्देश पर छापेमारी की गई। छापेमारी के क्रम में सुरक्षा टीम ने स्वांग कोलियरी क्षेत्र से बाइक व साइकिल से ले जा रहे लगभग 6 टन अवैध कोयला को जब्त किया गया, जबकि इस क्रम में 8 बाइक (स्कूटर व मोटरसाइकिल) तथा 10 साइकिल बरामद किया गया।उन्होंने बताया कि बरामद बाईक को स्थानीय थाना के सुपुर्द कर दिया गया, वही साइकल को महाप्रबंधक कार्यालय परिसर में रखा गया है। जबकि बरामद कोयले को स्वांग कोलियरी प्रबंधन के सुपुर्द कर दिया गया है।क्षेत्रीय सुरक्षा पदाधिकारी गुप्ता ने बताया कि यहां कोयला ले जा रहे चोरों का दल सुरक्षाकर्मियों की टीम को देखकर मौके से कोयला सहित बाइक व साइकिल छोड़कर फरार हो गए।गुप्ता के अनुसार क्षेत्र के जारंगडीह कोलियरी में की गई छापामारी में 2 टन अवैध कोयला सहित दो बाइक तथा छह साइकिल बरामद किया गया। बाइक व साइकिल को क्षतिग्रस्त कर महाप्रबंधक कार्यालय ले जाया गया, जबकि बरामद कोयले को जारंगडीह कोलियरी के सुपुर्द कर दिया गया।

इस छापामारी दल में क्षेत्रीय सुरक्षा पदाधिकारी गुप्ता के अलावा क्षेत्रीय सुरक्षा प्रभारी एएसएसआई इबरार हुसैन, एएसएसआई नागेश्वर नोनिया, हेड सिक्योरिटी गार्ड संजय कुमार दास, एचएसजी राजकुमार, झारखंड गृह रक्षा वाहिनी के सशस्त्र बल के जवान आदि शामिल थे।

स्पीड न्यूज

डीपीएस बोकारो का अनमोल झारखंड में अव्वल

बोकारो। सीबीएसई द्वारा आयोजित साइंस चैलेंज 2023-24 में डीपीएस बोकारो की दसवीं कक्षा के छात्र कुमार अनमोल ने पूरे झारखंड में अव्वल स्थान प्राप्त किया है। अनमोल पूरे झारखंड से इस चैलेंज को क्वालीफाई करने वाला एकमात्र विद्यार्थी है। विद्यालय के प्राचार्य डॉ एएस गंगवार ने अनमोल की कामयाबी को विद्यालय के साथ-साथ पूरे राज्य के लिए अनमोल उपलब्धि बताते हुए उसे बधाई दी और उसके उज्जवल भविष्य की कामना की। उन्होंने इसे अन्य विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बताया। कुमार अनमोल ने इसके पूर्व भी विभिन्न राष्ट्र स्तरीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में शानदार सफलता अर्जित की है।

महिलाओं ने निकाली जागरूकता रैली

बोकारो/कसमार। कसमार प्रखंड अंतर्गत नावाडीह आजीविका महिला ग्राम संगठन की ओर से डायन कुप्रथा के विरुद्ध जागरूकता रैली निकाली गई। नावाडीह सामुदायिक भवन से लेकर नावाडीह हरि मंदिर तक निकाली रैली में काफी संख्या में महिलाएं शामिल हुई। जेंडर सीआरपी शबनम परवीन ने कहा कि डायन कुप्रथा प्रतिषेध अधिनियम 2001 में बने कानून के तहत किसी को भी डायन कहने या डायन के नाम पर प्रताड़ित करने से 6 माह तक जेल और 2000 का जुमार्ना हो सकता है। आज हम संकल्प लें कि हम किसी को ना तो डायन कहेंगे ना कहने देंगें।

शशिभूषण ने स्व हरेंद्र प्र. जायसवाल को दी श्रद्धांजलि

बोकारो। बोकारो के प्रसिद्ध समाजसेवी कसमार प्रखंड अंतर्गत खैराचातर ग्राम निवासी स्व हरेंद्र प्रसाद जायसवाल के निधनोपरांत उनके ग्राम में आयोजित श्राद्ध कार्यक्रम में उपस्थित होकर स्वच्छ भारत अभियान, भारतीय जनता पार्टी झारखंड प्रदेश के प्रदेश संयोजक सह स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संरक्षण संस्थान के महासचिव शशि भूषण ओझा मुकुल ने श्रद्धासुमन अर्पित किया और श्रद्धांजलि देकर उनकी पुण्य स्मृति में आम का एक पौधा उनके पुत्र राजीव रंजन जायसवाल को अर्पित किया । इस अवसर पर मुकुल ने कहा कि स्व हरेंद्र प्रसाद जायसवाल जी उनके अभिभावक के रूप में थे तथा क्षेत्र के विकास और सामाजिक कार्यों में उनका अविस्मरणीय योगदान है। इनके विचारों और अधूरे सपनों को पूरा करने हेतु सकारात्मक प्रयास ही इनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

अत्याधुनिक वाटर फाउंटेन का शुभारम्भ

बोकारो। बोकारो संयंत्र के सीआरएम 3 कॉम्प्लेक्स में सीईडी विभाग द्वारा नवीकृत मोटराइज्ड वाटर फाउंटेन का शुभारंभ ईडी (संकार्य) बीके तिवारी द्वारा किया गयो इस नवीकृत वाटर फाउंटेन में अत्याधुनिक सबमर्सिबल पंप के साथ साथ सबमर्सिबल लाईट्स भी लगाई गई है जो कि संध्याकाल में विशेष आकर्षण का केंद्र है। सीजीएम शालिग्राम सिंह ने मौके पर कहा कि पूरे प्लांट में इस तरह के 07 वाटर फाउंटेन का निर्माण तथा जीर्णोद्धार किया जा रहा है जो कि प्लांट के सौंदर्यीकरण को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाएगा। सीजीएम दीपक रॉय ने इस कार्य के लिये सीईडी विभाग के पूरी टीम की सराहना की तथा सभी को धन्यवाद दिया। मौके पर सीजीएम आर धवन, पीके वैसाखिया, शरद गुप्ता, विभाग के जीएम आर के पात्रो, ए जीएम बीभी चंद्रा, पी मिंज, मो काशिफ, राहुल रंजन व सीआरएम 3 विभाग के वरीय अधिशासी तथा कर्मचारी गण उपस्थित थे।

डुमरी विस क्षेत्र में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम

बोकारो। 33 डुमरी विधानसभा उप चुनाव को लेकर जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त कुलदीप चौधरी के निर्देश पर स्वीप कोषांग द्वारा मतदान प्रतिशत बढ़ाने के उद्देश्य से लगातार मतदाता जागरूकता के विभिन्न गतिविधियों/कार्यक्रमों को आयोजित किया जा रहा है। इसी क्रम में जिले के डुमरी विधानसभा अंतर्गत आने वाले चंद्रपुरा प्रखंड में महिला मतदाताओं को जागरूक करने हेतु मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

एक नजर में

नियोजन की मांग को लेकर कांग्रेस ने दिया महा धरना

कतरास। बुधवार को छतबाद कैलूडीह में संचालित एसटीजी जेभी डेको आउटसोर्सिंग परियोजना में नियोजन की मांग को लेकर कांग्रेस पार्टी वार्ड संख्या 2 के अध्यक्ष मोहम्मद जिया उल हक के नेतृत्व में चरणबद्ध आंदोलन के तहत महा धरना का आयोजन किया गया। पत्रकारों को संबोधित करते हुए वार्ड संख्या दो कांग्रेस के अध्यक्ष मोहम्मद जिया उल हक ने बताया कि स्थानीय लोगों की नियोजन से संबंध में कंपनी के साथ वार्ता हुई थी जिसमें 40 लोगों की कमेटी बनाकर स्थानीय प्रभावित लोगों को चिन्हित कर अधिक से अधिक लोगों को नियोजन देने पर सहमति बनी थी, और कमेटी के 40 लोगों को प्रबंधन के द्वारा दायित्व दिया गया था कि आप लोग स्थानीय प्रभावित लोगों को चिन्हित कर कंपनी को सूची उपलब्ध कारण कंपनी उन्हें लोगों को नियोजन देगी।

रोटी बैंक यूथ क्लब के छठे वर्षगांठ समारोह पर सहयोगी हुए सम्मानित

धनबाद। रोटी बैंक यूथ क्लब के स्थापना दिवस पर रोटी बैंक टीम ने हीरक रोड, नवागढ़ में छठे वर्षगांठ समारोह आयोजित कर अपने सभी सहयोगियों को सम्मानित किया जिनके वजह से संस्था लगातार जरूरतमंद लोगों के बीच भोजन वितरण कर रहे हैं। समारोह में धनबाद के प्रसिद्ध समाजसेवी उदय प्रताप सिंह जीवन सेवा ट्रस्ट के राजीव शर्मा सचिन और रोटी बैंक के निरंतर सहयोगी मनोज मालाकार ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। साथ ही कार्यक्रम में संजय सिकरिया, निशांत सिंह पाटलिपुत्र हॉस्पिटल के डॉक्टर अमित कुमार गुप्ता के द्वारा सभी सहयोगियों को मोमेंटो और सर्टिफिकेट देखकर सम्मानित किया गया। समाजसेवी उदय प्रताप सिंह ने कहा रोटी बैंक यूथ क्लब धनबाद की एक शान है जो अनवरत प्रतिदिन असहाय लोगों को सबसे महत्वपूर्ण जरूरत रोटी की व्यवस्था अपने प्रयासों एवं निस्वार्थ रूप से करता है।

छात्रा उषा कुमारी की आत्महत्या की न्यायिक जांच की मांग

धनबाद। बुधवार 23 अगस्त को धनबाद के रणधीर वर्मा चौक पर दलित शोषण मुक्ति मंच तथा सामाजिक संगठनों द्वारा छात्रा उषा कुमारी की आत्महत्या की न्यायिक जांच की मांग को लेकर एक दिवसीय धरना दिया गया।धरना में मौजूद दलित शोषण मुक्ति मंच के झारखण्ड प्रदेश अध्यक्ष शिवबालक पासवान और महामंत्री दिनेश रविदास ने कहा कि 10 जुलाई 2023 को धनबाद के तेतुलमारी स्थित संत जेवियर्स स्कूल की छात्रा उषा कुमारी को स्कूल की शिक्षिका ओर प्रचार्य के द्वारा सार्वजनिक रूप से अपमानित किया गया था जिसके बाद छात्रा ने आत्महत्या कर ली थी।

पेज 3 का शेष

इडी छापामारी ...

कहां- कहां हुई छापेमारी : देवघर :- आरती राय चौधरी पत्नी स्वर्गीय शरत चंद्र राय, निवासी राय बंगला, कास्टर टाउन, अजय केसरीः 14, राम मंदिर रोड, पीओ/थाना-देवघर, विवेक मिश्रा : नित्यानंद मिश्रा, राय बंगला, आशाराम केसन रोड, देवघर टाउन, अभिषेक झा : स्वर्गीय गोरेलाल झा, बी एन झा पथ, देवघर टाउन, मुन्नम संजय :चंद्र नारायण बाजपेयी, मकान नंबर 21, वार्ड नंबर 7, परमेश्वर दयाल रोड बरमसिया, देवघर, योगेंद्र तिवारी : रामेश्वर तिवारी, जोगेंद्र तिवारी का गोदाम, होटल सिद्धार्थ के सामने, देवघर। जोगेंद्र तिवारी : रामेश्वर तिवारी, बम्पास टाउन, डॉ. राजीव पांडे हॉस्पिटल के पास, देवघर। **गिरिडीह :-** वैभव शाहाबादीः निर्भय शाहाबादी और निर्भय शाहाबादी , विश्वनाथ शाहाबादी, शाहाबादी हाउस, डॉक्टर लेन मकतपुर, गिरिडीह, अमरनाथ टेकरीवालः सीताराम टेकरीवाल मकान नं. 169, जमुआ थाना नं. 516, गोड्डा, थाना गोड्डा शहर, गोड्डा। **पश्चिम बंगाल:-** बरनाली राय : अरुण कुमार राय, सुकांत पल्ली बोराल, राजपुर, सोनारपुर (एम) बोराल, दक्षिण, 24 परगना, बंगाल, मनीष डालमिया और विजय डालमिया : (मैसर्स मनीष कंपनी प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक) डालमिया हाउस, 392, ब्लॉक - जी, न्यू अलीपुर, कोलकाता, हरि कृष्ण चौधरी , हनुमान दास चौधरी और अनिल चौधरी, हरि कृष्ण चौधरी (मैसर्स विक्रम फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड के निदेशक) 6बी, श्रीराम गार्डन, 15 बेल्वेडियर रोड, अलीपुर, कोलकाता, बंगाल। **रांची :-** मेसर्स मैहर डेवलपर्स वसुंधरा गार्डन, फ्लैट नंबर 902 ए, बरियातू, मोरहाबादी, रांची। रोहित उरांवः रामेश्वर उरांव, रागिनी विला, सरहुल नगर, बरियातू, सीएन होंडा सर्विस स्टेशन, रांची। बिनय कुमार सिंहः साधुशरण सिंह बी1/सी, बेलेयर अपार्टमेंट, मेन रोड, रांची जीपीओ। श्रवण कुमार जालान : केदार नाथ जालान, जालान रोड, अपर बाजार, रांची, उमा शंकर सिंह : राजेंद्र सिंह, चांदनी चौक, ओबरिया रोड, हटिया, रांची। जोगेंद्र तिवारी और मेसर्स संथाल परगना बिल्डर्स प्राइवेट लिमिटेड, डी-2, हरमू हाउसिंग कॉलोनी, रांची। **हजारीबाग :-** विकास कुमार अग्रवाल : सोहन लाल अग्रवाल 95, के.बी. मार्ग, खजांची तालाब के पास, बोड़म बाजार, हजारीबाग। **धनबाद :-** रीतेश कुमार शर्मा : नत्थूमल शर्मा (मैसर्स आलोकिक हाइट्स एलएलपी का भागीदार), नत्थूमल शर्मा, ग्रेवाल अपार्टमेंट, फ्लैट नंबर ई-5, 5वीं मंजिल, ग्रेवाल कॉलोनी, बेकारबांध, धनबाद। **अमरेन्द्र तिवारी :-** रामेश्वर तिवारी फ्लैट नंबर 402, कोशिकी राधिका रीजेंसी अपार्टमेंट झारूडीह, बेकार बांध, धनबाद। **जामताड़ा :-** अमरेंद्र तिवारी और जोगेंद्र तिवारी : रामेश्वर तिवारी एसबीआई बिल्डिंग, दूसरी मंजिल, स्टेशन रोड, मिहिजाम, जामताड़ा, अमरेन्द्र तिवारी एवं जोगेन्द्र तिवारी : रामेश्वर तिवारी स्टेशन रोड, मिहिजाम, जामताड़ा। **दुमका :-** तनिष्क शोरूम टाटा चौक, भागलपुर रोड, दुमका। प्राणतोष मिश्रा : भवानी प्रसाद मिश्रा, डंगाल पाड़ा, हिजला रोड, सोनवाडंगाल, छोटूलाल मंदिर के पास, दुमका, पप्पू शर्माः कुम्हार पाड़ा, दुमका, मेसर्स मैहर डेवलपर्स कुम्राबाद, बिजयपुर, दुमका, मेसर्स सरन अल्कोहल प्राइवेट लिमिटेड, डिस्टिलरी रोड, गिलानपारा, दुमका, शराब गोदाम खाता नंबर-91, प्लॉट नंबर-1053, मौजा- लखीकुंडी, थाना-दुमका (मुफस्सिल), मेसर्स तिवारी ऑटोमोबाइल्स प्राइवेट लिमिटेड एयरपोर्ट रोड, लखीकुंडी, दुमका, अनिल कुमार सिंह : शालीग्राम सिंह, कुम्हार पाड़ा दुमका। **पलामू :-** वित्त मंत्री रामेश्वर उरांव के पैतृक आवास चियांकी में छापा। **गोड्डा :-** शराब कारोबारी के यहां छापेमारी।

सड़क निर्माण में लापरवाही...

15 हजार किलोमीटर बननी हैं ग्रामीण सड़कें : सीएम ने कहा कि राज्य में 15 हजार किलोमीटर लंबी ग्रामीण सड़कों का निर्माण कराया जाना है। ऐसे में तेजी लाने की जरूरत है। ग्रामीण सड़कों की क्वालिटी और मजबूतीकरण से किसी प्रकार का समझौता नहीं होगा। कई बार शिकायतें मिलती है कि एक तरफ सड़कें बन रहीं हैं और दूसरी तरफ से उखड़ भी रही हैं। इसे बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। इसमें जो भी दोषी होंगे, उनके खिलाफ सरकार एक्शन लेगी। सीएम को अधिकारियों ने बताया कि 15 हजार किलोमीटर लंबी ग्रामीण सड़कों में 6 हजार किलोमीटर सड़कों का डीपीआर तैयार हो चुका है और 3 हजार किलोमीटर सड़क निर्माण को स्वीकृति दी जा चुकी है। सीएम ने कहा कि राज्य में बन रही सड़कों की मॉनिटरिंग होनी चाहिये। इस सिलसिले में एक पोर्टल पर सड़कों के निर्माण की लाइव वीडियो अपलोड की जाये ताकि उसकी क्वालिटी और निर्माण की गति की पल-पल जानकारी मिलती रहे। सड़कों के किनारे हेलीपैड निर्माण को लेकर कार्य योजना बनायें। आपातकालीन परिस्थितियों में घायलों को तत्काल एयरलिफ्ट कराकर अस्पताल पहुंचाया जा सके। बैठक में मुख्य सचिव सुखदेव सिंह, अपर मुख्य सचिव अविनाश कुमार, अपर मुख्य सचिव एल खियांगते, पुलिस महानिदेशक अजय कुमार सिंह, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव वंदना दादेल, प्रधान सचिव अजय कुमार सिंह, मुख्यमंत्री के सचिव विनय कुमार चौबे, सचिव सुनील कुमार, आईजी एवी होमकर, पीसीसीएफ संजय कुमार और पीसीसीएफ शशिकर सामंता मौजूद थे।

स्पीड न्यूज

नेपाल : खाई में गिरी बस, आठ की मौत

काठमांडू। नेपाल के बागमती प्रांत में बुधवार को एक यात्री बस मुख्य राजमार्ग से फिसलकर नदी में जा गिरी, जिससे कम से कम आठ लोगों की मौत हो गई तथा 15 अन्य लोग घायल हो गये। एक मीडिया रिपोर्ट में यह जानकारी सामने आई। यह हादसा उस वक्त हुआ, जब काठमांडू से पोखरा जा रही बस बागमती प्रांत के धाडिंग जिले के चालीसे इलाके में अनियंत्रित होकर त्रिशुली नदी में गिर गई।

मॉस्को पर फिर यूक्रेन ने ड्रोन से किया हमला

मॉस्को। रूस और यूक्रेन के बीच डेढ़ साल से चल रहा युद्ध थमने का नाम नहीं ले रहा है। अब रूस ने बुधवार को यूक्रेन के तीन ड्रोन मार गिराने का दावा किया है, जो मॉस्को पर हमला करने आए थे। रूस के रक्षा मंत्रालय की तरफ से कहा गया है कि बुधवार तड़के यूक्रेन ने मॉस्को पर हमला करने की कोशिश की, जिसे विफल कर दिया गया। हमलों में तीन ड्रोन शामिल थे। दो ड्रोन मोजाहिस्की और खिमकिंस्की जिलों में हवाई सुरक्षा द्वारा नष्ट कर दिए गए, जबकि तीसरा ड्रोन नियंत्रण खो बैठा। बाद में, ड्रोन मॉस्को सिटी परिसर में निमार्णाधीन इमारत से टकरा गया। रूसी रक्षा मंत्रालय के अनुसार हमले में कोई हताहत नहीं हुआ है।

नासिक में आज से फिर होगी प्याज की नीलामी

नासिक। प्याज उत्पादन के लिए देश भर में मशहूर महाराष्ट्र के नासिक जिले में सभी कृषि उपज विपणन समितियों (एपीएमसी) में तीन दिन के बाद गुरुवार से एक बार फिर प्याज की नीलामी शुरू होगी। प्याज कारोबारियों ने अब अपना विरोध प्रदर्शन वापस लेने का फैसला किया है। कारोबारी प्याज के निर्यात पर 40 प्रतिशत शुल्क लगाने का विरोध कर रहे थे। इसी वजह से प्याज उत्पादक जिले की मंडियों में थोक बिक्री के लिए नीलामी नहीं हो पा रही थी।

गेल 30,000 करोड़ रुपये करेगी निवेश

नयी दिल्ली। भारत की सबसे बड़ी गैस कंपनी गेल (इंडिया) लिमिटेड की अगले तीन साल में 30,000 करोड़ रुपये का निवेश करने की योजना है। कंपनी के चेयरमैन संदीप कुमार गुप्ता ने बुधवार को यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि कंपनी अपनी पेट्रोरसायन क्षमता का विस्तार कर रही है और वैश्विक स्तर पर एलएनजी आपूर्ति की संभावनाएं तलाश कर रही है।

दिल्ली हवाई अड्डे पर 17 करोड़ का कोकीन जब्त

नयी दिल्ली। राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) ने दिल्ली हवाई अड्डे से करीब 17 करोड़ रुपये का 1.698 किलोग्राम कोकीन जब्त किया और भारत में मादक पदार्थ की तस्करी करने के आरोप में केन्या की दो महिलाओं को गिरफ्तार किया है। वित्त मंत्रालय के बुधवार को जारी बयान के अनुसार, डीआरआई ने केन्या की एक नागरिक को इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से मंगलवार को गिरफ्तार किया। वह नैरोबी से यहां पहुंची थी।

नवाजुद्दीन की फिल्म हड्डी का ट्रेलर रिलीज

मुंबई। बॉलीवुड अभिनेता नवाजुद्दीन सिद्दीकी की आने वाली फिल्म हड्डी का ट्रेलर रिलीज हो गया है नवाजुद्दीन सिद्दीकी फिल्म हड्डी में एक ट्रांसजेंडर का किरदार निभा रहे हैं।फिल्म, 'हड्डी' का ट्रेलर रिलीज हो गया है। अक्षय अजय शर्मा के निर्देशन में बनी फिल्म हड्डी क्राइम ड्रामा है, जो दिल्ली एनसीआर, गुड़गांव और नोएडा में एक्टिव आपराधिक गिरोह के इर्द-गिर्द घूमती है। ट्रेलर में दिखाया गया है कि कैसे हड्डी नाम का ट्रांसजेंडर अपराधी बन जाता है। नवाज ट्रेलर में पता है लोग हमसे क्यों डरते हैं? हमारा आशीर्वाद बहुत शक्तिशाली होता है और हमारा आशीर्वाद बहुत मजबूत होता है। और उससे भी भयावह जानते हो क्या होता है? हमारा बदला।

एलसीए तेजस से पहली बार दागी गयी स्वदेशी मिसाइल

देश के पश्चिमी तट पर एस्ट्रा एमके-1 का परीक्षण, सटीक लक्ष्य पर साधा निशाना

एजेंसी

नयी दिल्ली। भारत ने बुधवार को मेड इन इंडिया जेट के साथ मेड इन इंडिया मिसाइल दागकर एयरोस्पेस की दुनिया में एक और मुकाम हासिल किया। लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एलसीए) तेजस से पहली बार हवा से हवा में मार (बीवीआर) करने वाली स्वदेशी मिसाइल एस्ट्रा एमके-1 का परीक्षण पश्चिमी तट पर हुआ। भारत में बनी बीवीआर मिसाइल को एलएसपी-07 तेजस से दागा गया, जिसने लक्ष्य पर सीधा निशाना लगाया। भारतीय वायु सेना को चीन सीमा पर तनाव के बीच स्वदेशी

एस्ट्रा एमके-1 बियॉन्ड विजुअल रेंज एयर-टू-एयर 50 मिसाइलों की पहली खेप अक्टूबर 2020 में मिली थी। करीब 100 किलोमीटर की लंबी दूरी तक हमले करने में सक्षम इस मिसाइल को सुखोई-30 में लैस किया गया था। एस्ट्रा एमके-1 मिसाइलों को लड़ाकू सुखोई से अधिकतम 66 हजार फीट की ऊंचाई पर 4.5 मैक स्पीड के साथ लांच लिया जा सकेगा। लद्दाख सीमा पर तनाव बढ़ने के बाद भारतीय वायुसेना और नौसेना के लिए 248 मिसाइल खरीदने का ऑर्डर किया गया था। भारतीय वायु सेना अब लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एलसीए) तेजस को हवा से हवा में मार करने वाली स्वदेशी मिसाइल एस्ट्रा एमके-1 से लैस करना चाहती है, इसलिए पहली बार मेड इन इंडिया जेट के साथ मेड इन इंडिया मिसाइल दागकर परीक्षण किया गया है। देश के परीक्षण पश्चिमी तट पर बीवीआर मिसाइल को एलएसपी-07 तेजस से दागा गया, जिसने लक्ष्य पर सीधा निशाना लगाया। इस मिसाइल में नव विकसित ठोस ईंधन डक्टेड रैमजेट तकनीक का उपयोग किया जाएगा। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के मुताबिक एस्ट्रा मिसाइल 3.6 मीटर (12 फीट) लंबी है, जिसका व्यास 178 मिमी (7.0 इंच) है और इसका वजन 154 किलोग्राम (340 पाउंड) है। एस्ट्रा इलेक्ट्रॉनिक काउंटर-काउंटरमेशर्स से लैस है, इसलिए दुश्मन के प्रयासों को नाकाम करके अपने ऑपरेशन को अंजाम देती है। एस्ट्रा मिसाइल 4.5 मैक की गति तक पहुंचा सकती है और अधिकतम 20 किमी. (66 हजार फीट) की ऊंचाई से संचालित हो सकती है। एस्ट्रा की अधिकतम सीमा हेड-ऑन चेस मोड में 110 किमी. (68 मील) और टेल चेस मोड में 20 किमी. (12 मील) है।

दो नए वेरिएंट जल्द

एस्ट्रा मार्क-1 के बाद भविष्य के लिए दो नए वेरिएंट की योजना बनाई गई है। एस्ट्रा मार्क-2 की मारक क्षमता 160 किमी. होगी, जबकि एस्ट्रा मार्क-3 की अधिकतम रेंज फ्रांस की मिटयोर मिसाइल के बराबर 340 किमी (210 मील) होगी।

वायु सेना को फरवरी से मिलेंगे एमके-1ए के ट्विन-सीटर विमान

नयी दिल्ली। वायु सेना प्रमुख (सीएएस) एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी ने वायु भवन में हल्के लड़ाकू विमान (एलसीए) कार्यक्रम की समीक्षा की। उन्होंने बताया कि एलसीए प्रोजेक्ट भारतीय वायु सेना के विमान बेड़े को स्वदेशीकरण बना रहा है। बैठक में एचएएल के प्रतिनिधियों ने वायु सेना प्रमुख को फरवरी, 2024 से एलसीए एमके-1ए के ट्विन-सीटर विमानों की डिलीवरी करने का आश्वासन दिया। सीएएस ने कहा कि राष्ट्रीय महत्व का यह प्रोग्राम देश की आत्मनिर्भर भारत' और मेक इन इंडिया' पहल का अग्रदूत रहा है।

अब साल में दो बार होंगी बोर्ड परीक्षाएं

11वीं और 12वीं के छात्रों को पसंद के विषय चुनने की होगी आजादी

एजेंसी

नयी दिल्ली। सीबीएसई व सीआईएससीई आईसीएसई समेत विभिन्न बोर्ड परीक्षाएं अब साल में दो बार होंगी। नई शिक्षा नीति को लागू करने के लिए केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने स्कूल एजुकेशन का नया नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क (एनसीएफ) तैयार किया है जिसके मुताबिक अब बोर्ड परीक्षाएं साल में दो बार होंगी। एनसीएफ की गाइडलाइंस के मुताबिक छात्र-छात्राओं को अपना बेस्ट स्कोर बरकरार रखने की इजाजत होगी। दोनों बोर्ड परीक्षाएं टर्म वाइज नहीं होंगी।

जिस परीक्षा में स्टूडेंट के अच्छे मार्क्स आएंगे, वही स्कोर आगे मान्य होगा। विद्यार्थियों को परीक्षा पास करने के लिए दो मौके मिलेंगे। शिक्षा मंत्रालय के अधिकारियों ने कहा कि नई शिक्षा नीति (एनईपी) के अनुसार नेशनल फ्रेमवर्क करिकुलम तैयार हो चुका है। इसी के मुताबिक 2024 के शैक्षणिक सत्र के लिए पाठ्य पुस्तकें तैयार की जाएंगी। शिक्षा मंत्रालय के एनसीएफ के तहत कक्षा 11 और 12 के छात्र-छात्राओं को दो भाषाएं पढ़नी होंगी, इनमें से कम से कम एक भाषा भारतीय होनी चाहिए।

शिक्षा मंत्रालय के नये करिकुलम फ्रेमवर्क के तहत बोर्ड परीक्षाएं महीनों की कोचिंग और रट्टा लगाने की क्षमता के मुकाबले छात्र-छात्राओं की समझ और दक्षता के स्तर का मूल्यांकन करेंगी। बोर्ड परीक्षा का हौव्वा बनाने की बजाय इसे आसान बनाने पर जोर दिया जाएगा। नई व्यवस्था के तहत कक्षा 11 और 12 में विषयों का चयन आर्ट्स, साइंस या कॉमर्स स्ट्रीम तक सीमित नहीं रहेगा, छात्र-छात्राओं को पसंद का विषय चुनने की आजादी मिलेगी। कक्षाओं में पाठ्य पुस्तकों को कवर करने की मौजूदा प्रथा से बचा जाएगा। इसके अलावा पाठ्य पुस्तकों की कीमतों में कमी लाई जाएगी। नये करिकुलम फ्रेमवर्क के अनुसार स्कूल बोर्ड उचित समय में मांग के अनुसार परीक्षा की पेशकश करने की क्षमता विकसित करेंगे। एनसीएफ के मुताबिक बोर्ड परीक्षाओं की मौजूदा व्यवस्था में कोई छात्र अगर परीक्षा देने से चूक जाता है जो उसे दूसरा मौका नहीं मिलता। बोर्ड परीक्षाओं की चुनौतियों के बारे में एनसीएफ का कहना है कि वर्तमान प्रणाली केवल छात्रों द्वारा सीखे गए तथ्यों को फिर से लिखने की क्षमता पर केंद्रित है, जो कि परीक्षा का मकसद पूरा नहीं करते हैं। एनसीएफ में कहा गया है कि ज्यादातर परीक्षाएं रटने की क्षमता का टेस्ट कर रहे हैं, छात्र की दक्षता बहुत आंकी जा रही है। छात्र ने कितना सीखा, यह चेक करने के लिए वर्तमान सिस्टम गलत और अधूरा है।

मुख्य बातें

- छात्रों को अपना बेस्ट स्कोर बरकरार रखने की अनुमति
- जिस परीक्षा में स्टूडेंट के अच्छे मार्क्स आएंगे, वही स्कोर आगे मान्य होगा

नौवी व दसवीं के छात्रों को दो भारतीय भाषाएं

नयी दिल्ली। शिक्षा मंत्रालय ने स्कूली शिक्षा का नया राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचा (एनसीएफ) तैयार किया है जिसके तहत 9वीं एवं 10वीं कक्षा के छात्रों को तीन भाषाओं का अध्ययन करना होगा जिसमें दो भारतीय भाषाएं होंगी। वहीं कक्षा 11वीं और 12वीं के छात्र-छात्राओं को दो भाषाओं का अध्ययन करना होगा और इनमें से कम से कम एक भाषा भारतीय होनी चाहिए। इसरो के पूर्व प्रमुख के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति द्वारा तैयार एनसीएफ में कहा गया है कि 9-10वीं कक्षा के लिए सात विषय अनिवार्य होंगे जबकि 11-12वीं कक्षा के लिए छह विषय अनिवार्य होंगे। विभिन्न स्तरों पर भाषाओं से लोकतांत्रिक एवं ज्ञानमीमांसा आधारित मूल्यों को विकसित करने तथा संस्कृति एवं समाज की विविधता के प्रति सम्मान की भावना के विकास में मदद मिलेगी। वर्तमान में 9वीं एवं 10वीं कक्षा के छात्र दो भाषाओं का अनिवार्य रूप से अध्ययन करते हैं जबकि 11वीं एवं 12वीं कक्षा के छात्र एक भाषा का अध्ययन करते हैं ।

शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने कहा कि कस्तूरीरंगन के मार्गदर्शन में संचालन समिति ने नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लिए पाठ्यचर्या तैयार की है और सरकार को सौंपा है तथा सरकार ने इसे एनसीईआरटी को सौंप दिया है।

सिख दंगा: पूर्व सांसद सज्जन कुमार के खिलाफ आरोप तय

नयी दिल्ली। कांग्रेस नेता सज्जन कुमार को 1984 के सिख विरोधी दंगे के दौरान एक गुरुद्वारे को जलाने से संबंधित एक मामले में मुख्य उकसाने वाला शख्स करार देते हुए दिल्ली की एक अदालत ने बुधवार को उनके खिलाफ आरोप तय किये जिससे उनपर मुकदमे का रास्ता साफ हो गया। विशेष न्यायाधीश एम. के. नागपाल ने कहा कि प्रथम दृष्टया उन्हें लगता है कि अभियोजन पक्ष द्वारा पेश किये गये मौखिक और दस्तावेजी सबूत यह मानने के लिए पर्याप्त हैं कि एक नवंबर, 1984 को पूर्वाह्न करीब 11 बजे राजधानी के नवादा क्षेत्र के गुलाब बाग में एक गुरुद्वारे के समीप डंडों, लोहे की सरिया, ईंटों और पत्थरों आदि से लैस सैंकड़ों लोग इकटठा हुए थे। न्यायाधीश नागपाल ने कहा कि आरोपी सज्जन कुमार भी उस भीड़ का हिस्सा थे जिसका मकसद तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या का बदला लेने के लिए उक्त गुरुद्वारे में आग लगाना, वहां लूटपाट करना तथा उस क्षेत्र में रह रहे सिखों के घरों में आगजनी, लूटपाट और समुदाय के लोगों की हत्या करना था। न्यायाधीश नागपाल ने पूर्व सांसद को दंगे के एक अन्य मामले में भादंसं की धारा 302 के तहत हत्या के आरोप से बरी कर दिया। दूसरे मामले में उत्तम नगर में कांग्रेस कार्यालय के बाहर दंगे में दो नवंबर, 1984 को सोहन सिंह और अवतार सिंह नाम के दो लोगों की जान चली गयी थी।

मिजोरम में रेल पुल का गर्डर गिरने से 19 की मौत

एजेंसी

आइजल। मिजोरम में भैरबी को साईरंग से जोड़ने वाली कुरुंग नदी पर बुधवार को रेलवे का एक निमार्णाधीन पुल ढह जाने से 19 मजदूरों की मौत हो गई। घटना पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, रेल मंत्री, राज्य के मुख्यमंत्री के जोराम थांगा और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शोक जताया। घटना में पीड़ित परिवारों के लिए प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राज्य कोष और रेल मंत्रालय ने मुआवजा देने की घोषणा की है।

रेलवे ने घटना की उच्च स्तरीय जांच के भी आदेश दिए है, इसके लिए एक समिति भी गठित की गई है। आइजोल से लगभग 20 किलोमीटर दूर साईरंग इलाके में बुधवार सुबह हर रोज की तरह लगभग 40 से 50 मजदूर कुरुंग नदी पर रेलवे के निमार्णाधीन पुल पर काम रहे थे।यह परियोजना के पुल संख्या 196 के घाट पी-4 की ऊंचाई 104 मीटर है, जो नई दिल्ली में स्थित कुतुबमीनार से 42 मीटर ऊंची है। बुधवार सुबह लगभग 11 बजे यह निमार्णाधीन पुल का तीसरे और चौथे पिलर के बीच का लगभग 340 फुट की ऊंचाई से गार्डर गिर गया। गार्डर के मलबे में काम कर रहे मजदूर दब गए। इस हादसे में 17 मजदूरों की मौके पर ही मौत हो गई है। घटना की खबर मिलते ही पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के महाप्रबंधक (निर्माण) विशेष ट्रेन से घटनास्थल पहुंचे। इसके अलावा पूसीरे ने 11 चिकित्सकों की टीम सिलचर पहुंचे। राहत एवं बचाव कार्य के दौरान घटनास्थल पर मलबे से 17 मजदूरों के शव निकाले गए। नॉर्थ ईस्ट फ्रंटियर रेलवे ने बताया कि घटना की खबर मिलने के बाद घटनास्थल पर बचाव कार्य युद्धस्थर पर किया गया। घटना को लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने घटना पर दुख जताया। प्रधानमंत्री मोदी ने बुधवार को ट्वीट कर कहा कि मिजोरम में पुल दुर्घटना से दुखी हूं। जिन लोगों ने अपने प्रियजनों को खोया है, उनके प्रति मेरी पूरी संवेदना है। घायलों के जल्द स्वस्थ होने की कामना करता हूं।

जांच के आदेश

- रेलवे व पीएम राहत कोष से मुआवजा की घोषणा
- प्रधानमंत्री, रेलमंत्री के साथ मिजोरम व पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्रियों ने जताया शोक
- 40 से 50 मजदूर कुरुंग नदी पर रेलवे के निर्माणाधीन पुल पर कर रहे थे काम

शेयर बाजार में तीसरे दिन भी तेजी

एजेंसी

सेंसेक्स 213 अंकों की लगायी छलांग और निफ्टी 47 अंक चढ़ा

मुंबई । वैश्विक बाजार के सकारात्मक रुझान से उत्साहित निवेशकों की स्थानीय स्तर पर वित्तीय सेवाएं, इंडस्ट्रियल्स, बैंकिंग, कैपिटल गुड्स और धातु समेत तेरह समूहों में हुई लिवाली की बदौलत शेयर बाजार में बुधवार को लगातार तीसरे दिन भी तेजी रही। बीएसई का संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 213.27 अंक की छलांग लगाकर 65,433.30 अंक और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 47.55 अंक चढ़कर 19,444 अंक पर पहुंच गया। बीएसई का मिडकैप भी 0.42 प्रतिशत की तेजी के साथ 30,946.75 अंक और स्मॉलकैप 0.60 प्रतिशत उछलकर 36,065.95 अंक पर रहा। इस दौरान बीएसई में कुल 3783 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 2078 में लिवाली जबकि 1544 में बिकवाली हुई वहीं 161 में कोई बदलाव नहीं हुआ। इसी तरह 29 कंपनियों में तेजी जबकि शेष 22 में गिरावट रही। बीएसई के 13 समूहों में तेजी का रुख रहा। इस दौरान कमोडिटीज 0.09, सीडी 0.17, वित्तीय सेवाएं 0.86, हेल्थकेयर 0.15, इंडस्ट्रियल्स 1.08, आईटी 0.21, दूरसंचार 0.27, बैंकिंग 1.20, कैपिटल गुड्स 1.16, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स 0.47, धातु 1.05, रियल्टी 0.43 और टेक समूह के शेयर 0.08 प्रतिशत मजबूत रहे।

हिमाचल में बारिश ने फिर मचायी तबाही, 13 की मौत व छह लापता

शिमला। हिमाचल प्रदेश में एक बार फिर मानसून का रौद्र रूप देखने को मिला है। राज्य के विभिन्न हिस्सों में मंगलवार रात से ही मूसलाधार बारिश का दौर बुधवार शाम तक जारी रहा। बिलासपुर, शिमला, कांगड़ा और मंडी जिलों में व्यापक बारिश हुई है। राज्य के अलग-अलग हिस्सों में बीते 24 घंटों के दौरान वर्षाजनित विभिन्न हादसों में 13 लोग मारे गए और छह लापता हैं। इस दौरान राज्य के 24 स्थानों पर भूस्खलन की घटनाएं हुईं। आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के अनुसार भूस्खलन, बाढ़ और बादल फटने की घटनाओं में छह लोगों की जान गई जबकि बर्षाजनित विभिन्न हादसों में सात लोगों ने दम तोड़ा।

छत्तीसगढ़ के सीएम के राजनीतिक सलाहकार के यहां इडी का छापा

एजेंसी

कोयला, शराब घोटाले में विनोद वर्मा के रायपुर आवास पर दबिश

रायपुर। छत्तीसगढ़ में प्रवर्तन निदेशालय के दल ने मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के राजनीतिक सलाहकार विनोद वर्मा और मुख्यमंत्री के ओएसडी तथा कारोबारी के यहां छापेमारी की। अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी। मुख्यमंत्री बघेल ने इसे अपने जन्मदिन का तोहफा करार देते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह को धन्यवाद दिया है। अधिकारियों ने बताया कि ईडी के अधिकारियों ने आज तड़के विनोद वर्मा के रायपुर स्थित निवास स्थान पर तथा मुख्यमंत्री के ओएसडी के भिलाई स्थित निवास स्थान पर छापे की कार्रवाई की। साथ ही ईडी ने मुख्यमंत्री के करीबी कारोबारी के यहां भी दबिश दी है। उन्होंने बताया कि अभी तक यह पुष्टि नहीं हो पाई है कि ईडी ने किस मामले के तहत छापे की कार्रवाई की है। ईडी छत्तीसगढ़ में कथित कोयला घोटाले, शराब घोटाले, डीएमएफ में अनियमितताओं और एक ऑनलाइन सट्टेबाजी से संबंधित विभिन्न मामलों की जांच कर रहा है।

अभिषेक बनर्जी से जुड़ी कंपनी के यहां से दस्तावेज जब्त

नयी दिल्ली। तृणमूल कांग्रेस सांसद अभिषेक बनर्जी जिस कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ)थे उसके कोलकाता स्थित ठिकानों पर छापेमारी कर अपराध में संलिप्तता के संकेत करने वाले दस्तावेजों को जब्त किया गया है। प्रवर्तन निदेशालय ने बुधवार को यह जानकारी दी। अभिषेक बनर्जी तृणमूल कांग्रेस प्रमुख और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के भतीजे हैं।

शिल्पा शेट्टी की फिल्म सुखी 22 सितंबर को होगी रिलीज

मुंबई। शिल्पा शेट्टी अभिनीत फिल्म सुखी 22 सितंबर को देश भर के सिनेमाघरों में प्रदर्शित होगी। निर्माताओं ने बुधवार को इसकी जानकारी दी। सुखी एक मजेदार मनोरंजक सिनेमा है और इसका निर्देशन फिल्म निर्माता सोनल जोशी ने किया है । इसका निर्माण टी-सीरीज और अबुंदंतिया इन्टरटेनमेंट ने किया है। फिल्म में शिल्पा सुखप्रीत सुखी कालरा की मुख्य भूमिका में नजर आयेंगी । फिल्म निर्माताओं ने बताया कि फिल्म की कहानी राधिका आनंद ने लिखी है, जबकि पटकथा पॉलोमी दत्ता ने लिखी है।

मोदी ने किया ब्रिक्स के विस्तार का पूर्ण समर्थन

एजेंसी

बापू ने रखी एकता और सद्भाव की मजबूत नींव : प्रधानमंत्री

जोहान्सबर्ग। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में आयोजित ब्रिक्स देशों के 15वें शिखर सम्मेलन में महात्मा गांधी को याद किया। शिखर सम्मेलन के पूर्ण सत्र को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि बापू ने एकता व सद्भाव की मजबूत नींव रखी। इस दौरान ब्रिक्स के मंच से अफ्रीकी राष्ट्रपति ने चंद्रयान-3 के लिए भारत को शुभकामनाएं दी। ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका के संगठन ब्रिक्स का 15वां शिखर सम्मेलन दक्षिण अफ्रीका में चल रहा है। सम्मेलन के पूर्ण सत्र को संबोधित करते हुए भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि ब्रिक्स को भविष्य की तैयारी के लिए हमें अपने संबंधित समाजों को भी भविष्य के लिए तैयार करना होगा। प्रौद्योगिकी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि पिछले दो दशकों में ब्रिक्स ने एक लंबी और शानदार यात्रा तय की है। इस यात्रा में हमने कई उपलब्धियां हासिल कीं।

उन्होंने कहा कि जोहान्सबर्ग जैसे खूबसूरत शहर में एक बार फिर आना उनके लिए खुशी की बात है। इस शहर का भारतीयों और भारतीय इतिहास से गहरा और पुराना रिश्ता है। यहां से कुछ दूरी पर टॉल्स्टॉय फार्म स्थित है, जिसका महात्मा गांधी ने 110 वर्ष पूर्व निर्माण करवाया था। महात्मा गांधी ने भारत, यूरेशिया और अफ्रीका के महान विचारों को जोड़ कर हमारी एकता और सद्भाव की मजबूत नींव रखी। उन्होंने कहा कि भारत ब्रिक्स के विस्तार का पूरा समर्थन करता है। हम इस पर आम सहमति के साथ आगे बढ़ने का स्वागत करते हैं।

- चीन के औद्योगिक विकास को ब्रिक्स ढांचे को संयुक्त रूप से मजबूत करें : जिनपिंग

चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने कहा कि चीन सतत विकास के लिए औद्योगिक सहयोग पर ब्रिक्स ढांचे को संयुक्त रूप से स्थापित करने के लिए सभी पक्षों के साथ काम करेगा। उन्होंने कहा कि हमें शांति और स्थिरता बनाए रखने के लिए राजनीतिक और सुरक्षा सहयोग का विस्तार करना चाहिए। शीत युद्ध की मानसिकता अभी भी हमारी दुनिया को परेशान कर रही है और भू-राजनीतिक स्थिति तनावपूर्ण होती जा रही है। ब्रिक्स देशों को शांतिपूर्ण विकास की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए और रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करना चाहिए। जिनपिंग ने कहा कि हमें ब्रिक्स विदेश मंत्रियों की बैठक, राष्ट्रीय सुरक्षा और अन्य तंत्रों पर उच्च प्रतिनिधियों की बैठक का अच्छा उपयोग करने की आवश्यकता है। इसके अलावा ब्रिक्स के सदस्य देशों को अपने मूल हितों में एक-दूसरे का समर्थन करने और प्रमुख अंतरराष्ट्रीय और क्षेत्रीय मुद्दों पर समन्वय बढ़ाने की जरूरत है।

जिनपिंग ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय नियमों को संयुक्त राष्ट्र चार्टर के उद्देश्यों और सिद्धांतों के आधार पर सभी देशों द्वारा संयुक्त रूप से लिखा और बरकरार रखा जाना चाहिए। यह सबसे मजबूत या सबसे ऊंची आवाज वाले लोगों के हाथ में नहीं होना चाहिए। ब्रिक्स देशों को सच्चा बहुपक्षवाद अपनाना चाहिए, एकजुटता पर कायम रहना चाहिए और विभाजन का विरोध करना चाहिए।

वर्मा प्रेस प्रा० लि० राँची
VERMA PRESS
Verma's® Today®
शृंखला की निम्न पुस्तकें सर्वत्र उपलब्ध हैं—

Class - X		Class - IX	
Hindi	₹ 140	Hindi	₹ 140
English	₹ 140	English	₹ 140
Mathematics	₹ 140	Mathematics	₹ 140
Science	₹ 140	Science	₹ 140
Social Science	₹ 140	Social Science	₹ 140
Sanskrit	₹ 120	Sanskrit	₹ 120
Hindi – B	₹ 140	Hindi – B	₹ 80
Hindi Vyakaran– II	₹ 120	Hindi Vyakaran– II	₹ 120
English Grammar– II	₹ 120	English Grammar– II	₹ 120
Sanskrit Vyakaran–II	₹ 100	Sanskrit Vyakaran–II	₹ 100
Hindi Practical	₹ 55	Hindi Practical	₹ 55
English Practical	₹ 55	English Practical	₹ 55
Maths. Practical	₹ 65	Maths. Practical	₹ 55
Science Practical	₹ 65	Science Practical	₹ 70
S. Science Practical	₹ 65	S. Science Practical	₹ 65
Sanskrit Practical	₹ 55	Sanskrit Practical	₹ 55
Maths. Practical (Combined)	₹ 90	Maths. Practical (Combined)	₹ 75
Science Practical (Combined)	₹ 90	Science Practical (Combined)	₹ 75
English Medium		English Medium	
Mathematics	₹ 200	Mathematics	₹ 130
Science	₹ 200	Science	₹ 200
Social Science	₹ 200	Social Science	₹ 130
Maths. Practical	₹ 80	Maths. Practical	₹ 80
Science Practical	₹ 80	Science Practical	₹ 80
S. Science Practical	₹ 80	S. Science Practical	₹ 80

मिलते-जुलते नाम वाली नकली पुस्तकों से सावधान !

नये भारत का उदघोष : अंतरिक्ष विजय

नागेन्द्र सिंह

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन इसरो ने बुधवार को अंतरिक्ष क्षेत्र में एक नया इतिहास रचते हुए चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर लैंडर विक्रम और रोवर प्रज्ञान से लैस एलएम की साफ्ट लैंडिग कराने में सफलता हासिल की। भारतीय समयानुसार शाम करीब छह बजकर चार मिनट पर इसने चांद की सतह को छुआ। इसके साथ ही भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर साफ्ट लैंडिंग कराने वाला दुनिया का पहला देश तथा चांद की सतह पर साफ्ट लैंडिंग करने वाले चार देशों में शामिल हो गया है। इसरो के महत्वाकांक्षी तीसरे चंद्रमा मिशन चंद्रयान-3 के लैंडर मॉड्यूल (एलएम) ने बुधवार शाम चंद्रमा की सतह को चूम कर अंतरिक्ष विज्ञान में सफलता की एक नयी इबारत रची।

वैज्ञानिकों के अनुसार इस अभियान के अंतिम चरण में सारी प्रक्रियाएं पूर्व निर्धारित योजनाओं के अनुरूप ठीक से चली। यह एक ऐसी सफलता है जिसे न केवल इसरो के शीर्ष वैज्ञानिक बल्कि भारत का हर आम और खास आदमी टीवी की स्क्रीन पर टकटकी बांधे देख रहा था। लैंडर विक्रम और रोवर प्रज्ञान से लैस एलएम ने बुधवार शाम 6.04 बजे चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग की। यह एक ऐसी उपलब्धि है, जो अब तक किसी भी देश को हासिल नहीं हुई है।
इसरो के अधिकारियों के मुताबिक, लैंडिंग के लिए लगभग 30 किलोमीटर की ऊंचाई पर लैंडर पॉवर ब्रेकिंग फेज में कदम रखता है और गति को धीरे-धीरे कम करके, चंद्रमा की सतह तक पहुंचने के लिए अपने चार थ्रस्टर इंजन की रेट्रो फायरिंग करके उनका

लैंडिंग के लिए लगभग 30 किलोमीटर की ऊंचाई पर लैंडर पॉवर ब्रेकिंग फेज में कदम रखा, माने गति धीमी कर दी

इस्तेमाल करना शुरू कर देता है। उन्होंने बताया कि ऐसा यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है कि चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव के कारण लैंडर क्रैश न हो जाए। अधिकारियों के अनुसार, 6.8 किलोमीटर की ऊंचाई पर पहुंचने पर केवल दो इंजन का इस्तेमाल हुआ और बाकी दो इंजन बंद कर दिए गए, जिसका उद्देश्य सतह के और करीब आने के दौरान लैंडर को रिवर्स थ्रस्टह्न(सामान्य दिशा की विपरीत दिशा में धक्का देना, ताकि लैंडिंग के बाद लैंडर की गति को धीमा किया जा सके) देना था।
अधिकारियों ने बताया कि लगभग 150 से 100 मीटर की ऊंचाई पर पहुंचने पर लैंडर ने अपने सेंसर और कैमरों का इस्तेमाल कर सतह की जांच की कि कोई बाधा तो नहीं है और फिर सॉफ्ट-लैंडिंग करने के लिए नीचे उतरना शुरू कर दिया। इसरो के अध्यक्ष एस सोमनाथ ने हाल में कहा था कि लैंडर की गति को 30 किलोमीटर की ऊंचाई से अंतिम लैंडिंग तक कम करने की प्रक्रिया और अंतरिक्ष यान को क्षैतिज से ऊर्ध्वाधर दिशा में पुनः निर्देशित करने की क्षमता लैंडिंग का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होगी।
अधिकारियों के मुताबिक, सॉफ्ट-लैंडिंग के बाद रोवर अपने एक साइड पैनल का उपयोग करके लैंडर के अंदर से चंद्रमा की सतह पर उतरा, जो रैंप के रूप में इस्तेमाल हुआ। इसरो के अनुसार, चंद्रमा की सतह और आसपास के वातावरण का अध्ययन करने के लिए लैंडर और रोवर के पास एक चंद्र दिवस (पृथ्वी के लगभग 14 दिन के बराबर) का समय होगा। हालांकि, वैज्ञानिकों ने दोनों के एक और चंद्र दिवस तक सक्रिय रहने की संभावनाओं से इनकार नहीं किया है।

तीन कारणों से लूना ध्वस्त, चंद्रयान सफल

सुधांशु कुमार

रूस के मून मिशन लूना-25 के विफल होने के बाद दुनिया भर की निगाहें भारत के चंद्रयान-3 की ओर लगी थीं। हालांकि इसरो ने भी पहले से ही कहा था कि हम चांद पर सफल सॉफ्ट लैंडिंग के लिए पर्याप्त एहतियात बरत रहे हैं। जिन वजहों से रूस का मून मिशन नाकाम हुआ उन्हें पहले से ही भांपते हुए इसरो ने अपनी तैयारी कर रखी थी।
भारत का मिशन चंद्रयान आखिर सफल हुआ। चंद्रयान- की लैंडिंग के साथ ही भारत ने एक रिकॉर्ड भी अपने नाम किया है। इस मिशन की सफलता के साथ ही चांद के दक्षिणी ध्रुव पर लैंड करने वाला पहला देश भारत बन गया है। साथ ही भारत उन देशों की सूची में भी शामिल हो गया है जिन्होंने चांद पर सफल लैंडिंग की है। अब तक रूस, चीन और अमेरिका ही चांद पर सफल लैंडिंग में कामयाब रहे हैं।
गौरतलब है कि रूस के मून मिशन लूना-25 के विफल होने के बाद दुनिया भर की निगाहें भारत के चंद्रयान-3 की ओर लगी थीं। हालांकि इसरो ने भी पहले से ही कहा था कि हम चांद पर सफल सॉफ्ट लैंडिंग के लिए पर्याप्त एहतियात बरत रहे हैं। हम आपको बताएंगे कि जिन वजहों से रूस का मून मिशन नाकाम हुआ उन्हें पहले से ही भांपते हुए इसरो ने अपनी तैयारी कर रखी थी।

1. रूस ने बाद में मिशन शुरू किया, भारत पहले चंद्रयान मिशन के समय से शोध कर रहा

रूस की विफलता का सबसे बड़ा कारण जो बना था वो था कि रूस ने काफी लंबे समय तक अपने चंद्र कार्यक्रम को बंद कर रखा था। रूसी अंतरिक्ष एजेंसी रोस्कोस्मोस के प्रमुख यूरी बोरिसोव ने भी लूना-25 के फेल होने के बाद इसे स्वीकारा था। उन्होंने कहा था कि लगभग 50 वर्षों तक चंद्र कार्यक्रम को बाधित करना लूना 25 की विफलता का मुख्य कारण है। हमारे पूर्ववर्तियों ने 1960 और 1970 के दशक में जो अमूल्य अनुभव अर्जित किया था, वह अंतरिक्ष कार्यक्रमों की रुकावट के दौरान व्यावहारिक रूप से खो गया था।
बता दें कि रूसी अंतरिक्ष एजेंसी रासकास्माज ने 10 अगस्त को लूना- 25 अंतरिक्ष यान लांच किया था। इसे मास्को से लगभग 3,450 मील (5,550 किमी) पूर्व में स्थित वोस्तोचनी कोस्मोड्रोम से लॉन्च किया गया था। लूना- 25 को 313 टन वजनी रॉकेट सोयुज 2.1 बी में भेजा गया था। मिशन को नाम लूना- ग्लोब दिया गया था। हालांकि यह सफल हो पाता इससे पहले ही मिशन चांद की सतह से टकराकर क्रैश हो गया।
वहीं, भारत ने जबसे अपने चंद्र मिशन शुरू किए तब से इसरो लगातार इन पर काम करता रहा। जबकि भारत ने जबसे अपने चंद्र मिशन शुरू किए तब से इसरो लगातार इन पर काम करता रहा।

चंद्रयान-1

बता दें कि चंद्रयान-1 भारत का पहला चंद्र मिशन था, जिसे 22 अक्टूबर 2008 को आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से लॉन्च किया गया था। 29 अगस्त 2009 तक यह 312 दिनों तक चालू रहा और 3,400 से अधिक चंद्र परिक्रमाएं पूरी कीं। लगभग एक साल तक तकनीकी कठिनाइयों से जूझने के बाद इससे संपर्क टूट गया।

चंद्रयान-2

इसके बाद 22 जुलाई 2019 को चंद्रयान-2 लॉन्च किया गया था। यह चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला किसी भी देश का पहला अंतरिक्ष मिशन था। हालांकि, चंद्रयान-2 मिशन का विक्रम चंद्र लैंडर छह सितंबर को चंद्रमा पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। तीन महीने बाद नासा ने इसका मलबा खोजा। असफलता के बावजूद, मिशन पूरी तरह से असफल नहीं हुआ। इसकी वजह थी कि मिशन का ऑर्बिटर घटक सुचारू रूप से काम करता रहा और ढेर सारे नए डेटा जुटाए जिससे चंद्रमा और उसके पर्यावरण के बारे में इसरो को नई जानकारियां मिलीं। बावजूद इसके भारत ने अपनी असफलताओं से सीखते हुए चंद्रयान-3 लॉन्च किया और सफल हुआ।

चंद्रयान-3

मिशन चंद्रयान-2 का ही अगला चरण है, जो चंद्रमा की सतह पर उतरेगा और परीक्षण करेगा। यह चंद्रयान-2 की तरह ही दिखता है, जिसमें एक लैंडर और एक रोवर शामिल किए गए हैं। चंद्रयान-3 का फोकस चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित लैंड करने पर है। मिशन की सफलता के लिए नए उपकरण बनाए गए हैं। एल्गोरिदम को बेहतर किया गया है। जिन वजहों से चंद्रयान-2 मिशन चंद्रमा की सतह नहीं उतर पाया था, उन पर फोकस किया गया है।
मिशन ने 14 जुलाई को दोपहर 2:35 बजे श्रीहरिकोटा केन्द्र से उड़ान भरी थी और पूर्व नियोजित योजना के अनुसार 23 अगस्त को चंद्रमा पर उतरा। इस मिशन की सफलता के बाद भारत अमेरिका, रूस और चीन के बाद चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला दुनिया का चौथा देश बन गया है।

ऐसे हुई थी स्पेस प्रोग्राम की शुरूआत

डॉ. विक्रम साराभाई ने 1962 में भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति बनाई। डॉ. साराभाई के नेतृत्व में तिरुवनंतपुरम में थुम्बा इक्वेटोरियल रॉकेट लॉन्चिंग स्टेशन की स्थापना की।
डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, जो बाद में भारत के राष्ट्रपति बने, रॉकेट इंजीनियरों की शुरूआती टीम में से थे बाद में नाम विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र रखा गया।
पहला रॉकेट 21 नवंबर 1963 को यहीं से लॉन्च किया गया था। इसने भारतीय स्पेस प्रोग्राम की ऐतिहासिक शुरूआत की। 15 अगस्त 1969 को इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन बन गया।

पहला रॉकेट लॉन्च

एक साल बाद, 1963 में, भारत ने अपना पहला रॉकेट अंतरिक्ष में लॉन्च किया था। ऊपरी वायुमंडल की जांच के लिए बनाए गए साउंडिंग रॉकेट को केरल के थुंबा इक्वेटोरियल रॉकेट लॉन्चिंग स्टेशन से लॉन्च किया गया था। इसे अब विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र के रूप में जाना जाता है। डॉ. कलाम ने बताया था कि कैसे तैयारी शुरू होने से पहले स्थानीय चर्च से जमीन लेनी

पड़ी और ग्रामीणों को स्थानांतरित करना पड़ा। फिर, वे रॉकेट पार्ट्स को साइकिल के माध्यम से लॉन्च पैड तक ले जा रहे थे। 21 नवंबर, 1963 को उन्होंने डॉ. होमी भाभा जैसे एलीट साइंस्टिस्ट्स की मौजूदगी में रॉकेट लॉन्च किया।

आर्यभट्ट: पहले सैटेलाइट का लॉन्च

आर्यभट्ट भारत का पहला उपग्रह था जिसे 19 अप्रैल 1975 को कॉस्मोस-3 एम लॉन्च वीइकल से लॉन्च किया गया था। प्रसिद्ध भारतीय खगोलशास्त्री के नाम पर इसका नाम आर्यभट्ट रखा गया। इसे करफड ने बनाया था और सोवियत संघ ने लॉन्च किया था।

इसरो का बनाया पहला स्वदेशी रॉकेट

सैटलाइट लॉन्च वीइकल-3 भारत का पहला एक्सपेरिमेंटल सैटलाइट लॉन्च वीइकल था। यह 40 किलोग्राम श्रेणी के पेलोड को निम्न पृथ्वी ऑर्बिट में रखने में सक्षम था। इसे 18 जुलाई 1980 को लॉन्च किया गया था। रछश-3 ने रोहिणी को ऑर्बिट में स्थापित किया था। इस तरह भारत अंतरिक्ष-प्रगतिशील देशों के एक विशेष क्लब का छठा सदस्य बन गया। रोहिणी करफड द्वारा लॉन्च सैटलाइट की एक सीरीज थी। इस सीरीज में चार सैटलाइट शामिल थे। उनमें से तीन ने सफलतापूर्वक ऑर्बिट में प्रवेश किया।
पोलर सैटलाइट लॉन्च वीइकल भारत का तीसरी पीढ़ी का लॉन्च वीइकल है। इसे अक्टूबर 1994 में लॉन्च किया गया था और तब से जून 2017 तक लगातार 39 सफल मिशनों के साथ एक विश्वसनीय लॉन्च वीइकल के रूप में उभरा है। इसी ने सफलतापूर्वक 2008 में चंद्रयान-1 और 2013 में मंगल ऑर्बिटर स्पेसक्राफ्ट को लॉन्च किया था।

चन्द्रमा के दक्षिण हिस्से में सबसे पहले पहुंचा भारत

प्रियंका चन्द्रा

इसरो के संस्थापक विक्रम साराभाई के बेटे ने कहा- यह एक बड़ा दिन है
चंद्रयान-3 मिशन पर इसरो के संस्थापक विक्रम साराभाई के बेटे कार्तिकेय साराभाई ने कहा, 'यह एक बड़ा दिन है। यह सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि इस ग्रह पर किसी के लिए भी इतनी सटीकता से इसे भेजने के लिए एक शानदार बात है जिसके साथ हम चंद्रयान - 3 भेजने में सक्षम हुए हैं और वह भी एक ऐसी प्रक्रिया के माध्यम से जो दूसरों से अलग है... विज्ञान और इंजीनियरिंग में, हम गलतियों से सीखते हैं...यह मानवता के लिए बहुत बड़ी बात होगी क्योंकि चंद्रमा के दक्षिणी हिस्से पर आज तक कोई नहीं उतर सका है...।'

केंद्र सरकार ने शिक्षण संस्थानों से चंद्रयान-3 की लैंडिंग का सीधा प्रसारण दिखाने को कहा

केंद्र सरकार ने सभी विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों से चंद्रमा पर चंद्रयान-3 की लैंडिंग का सीधा प्रसारण दिखाने के लिए विशेष सभाएं आयोजित करने को कहा है। उच्च शिक्षा सचिव के संजय मूर्ति ने सभी शिक्षण संस्थानों के प्रमुखों को लिखे एक पत्र में कहा है, ह्लभारत के चंद्रयान-3 की लैंडिंग एक यादगार अवसर है, जो न केवल जिज्ञासा को बढ़ावा देगा, बल्कि हमारे युवाओं के मन में अन्वेषण के लिए जुनून भी जगाएगा। इससे गर्व और एकता की गहरी भावना पैदा होगी, क्योंकि हम सामूहिक रूप से भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी की ताकत का जश्न मनाएंगे।ह्व

वैज्ञानिकों और सरकार की पिछले 9 साल की मेहनत आज पूरी : ज्योतिरादित्य सिंधिया

चंद्रयान-3 मिशन पर केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने मीडिया से बातचीत के दौरान कहा, 'आज इतिहास रचा जाएगा जब पीएम मोदी के नेतृत्व में चांद पर भारत का झंडा लहराएगा। पूरा देश इस पल का बेसब्री से इंतजार कर रहा है। वैज्ञानिकों और सरकार की पिछले 9 साल की मेहनत आज पूरी होगी। हम सफलता की ओर बढ़ रहे हैं। इससे भारत नई ऊंचाइयों को छू रहा है।'

ग्रहों की खोज के लिए सबसे महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होने जा रहा है...

इसरो के पूर्व अध्यक्ष जी. माधवन नायर ने कहा, 'हर कोई इस महान आयोजन का बेसब्री से इंतजार कर रहा है। जहां तक भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का सवाल है, यह ग्रहों की खोज के लिए सबसे महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होने जा रहा है... इस मिशन का चंद्रमा की कक्षा से चंद्र सतह पर उतरने के आखिरी 20 मिनट इतिहास में सबसे चुनौतीपूर्ण क्षण होने जा रहे हैं।'चंद्रयान-3 पर मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कही ये बात
मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा, 'पूरा देश को गर्व है...मैं सभी वैज्ञानिकों को तहे दिल से धन्यवाद देना चाहता हूं...पीएम मोदी के नेतृत्व में देश ने बहुत कुछ हासिल किया है।'

मैं वैज्ञानिकों को प्रणाम करता हूं : उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री

उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कहा, 'मैं अपनी शुभकामनाएं देना चाहता हूं और प्रार्थना करता हूं कि चंद्रयान-3 चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग करे। पूरा देश इंतजार कर रहा है। पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत ने हर क्षेत्र में तेजी से प्रगति की है। मैं वैज्ञानिकों को प्रणाम करता हूं।'
उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद क्षेत्र में चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग के लिए छात्रों ने अपने चेहरे रंगे और पोस्टर प्रदर्शित किए।

सॉफ्ट लैंडिंग करने वाले दूसरा देश बन जाएंगा भारत

रॉकेटियर्स रिसर्च इंस्टीट्यूट के निदेशक और मुख्य शिक्षक, दिव्यांशु पोद्दार ने कहा, 'अगर हम चंद्रमा पर सफलतापूर्वक उतर गए तो यह हमारे लिए एक बड़ी उपलब्धि होगी। हम सॉफ्ट लैंडिंग करने वाले दूसरे देश बन जाएंगे...हमने चंद्रयान 2 से बहुत कुछ सीखा है...हमने अपने संचार, प्रणोदन और पैरों में बदलाव किए हैं...रूस की विफलता से पता चलता है कि चंद्रमा पर उतरना करना कितना मुश्किल है।' लेकिन हमलोगों ने सफलता प्राप्त किया है।

चंद्रयान-3 के सामने हैं ये चुनौतियां

करफड के मिशन के लिए जो पहली चुनौती हो सकती है वो है लैंडर की स्पीड को नियंत्रित रखना, क्योंकि पिछली बार तेज रफ्तार की वजह से लैंडर क्रैश हो गया था। दूसरी चुनौती जो चंद्रयान-3 के लिए हो सकती है वो है लेंडिंग के समय लैंडर का सीधा उतरना। वहीं, तीसरी चुनौती होगी लैंडर का इसरो द्वारा चुनी गई जगह पर उतरना। बता दें कि पिछली बार ऊबड़-खाबड़ जगह से टकराने के कारण चंद्रयान-2 क्रैश हो गया था।
चांद पर पहुंचकर ये काम करेगा
41 दिन की लंबी यात्रा के बाद आज चंद्रयान-3 चांद पर लैंडिंग कर चुका है। इसरो का ये मिशन चांद पर भूकंप की स्टडी, सतह पर गर्मी का अध्ययन, पानी की खोज, खनिज की जानकारी और मिट्टी की स्टडी करेगा। बता दें कि ये मिशन 14 दिन तक चांद पर एक्टिव रहेगा।

लैंडिंग क्षेत्र को 2.5 किमी से बढ़ाकर 4 किमी किया गया

इसरो के पूर्व निदेशक डॉ. सुरेंद्र पाल ने कहा, मुझे इसरो के वैज्ञानिकों की तरह ही विश्वास है कि हम बहुत बेहतर करेंगे क्योंकि चंद्रयान 2 की तुलना में बहुत सारे बदलाव किए गए हैं। बहुत सारे एल्गोरिदम बदले गए हैं। लैंडर में घूमने की क्षमता है. लैंडिंग क्षेत्र को 2.5 किमी से बढ़ाकर 4 किमी कर दिया गया है।

इसरो क्या करता है?

राहुल कुमार

इसरो/अं.वि. का मुख्य उद्देश्य विभिन्न राष्ट्रीय आवश्यकताओं के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का विकास और अनुप्रयोग है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए, इसरो ने संचार, दूरदर्शन प्रसारण और मौसम संबंधी सेवाओं, संसाधन मॉनीटरन और प्रबंधन; अंतरिक्ष आधारित नौसंचालन सेवाओं के लिए प्रमुख अंतरिक्ष प्रणालियों की स्थापना की है। इसरो ने उपग्रहों को अपेक्षित कक्षाओं में स्थापित करने के लिए उपग्रह प्रक्षेपण यान, पी.एस.एल.वी. और जी.एस.एल.वी. विकसित किए हैं।
इसरो अंतरिक्ष विभाग (अं.वि.), भारत सरकार का एक प्रमुख घटक है। विभाग भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम को मुख्य रूप से इसरो के तहत विभिन्न केंद्रों या इकाइयों के माध्यम से निष्पादित करता है। पहले इसरो को भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति (इन्कोस्पार) के नाम से जाना जाता था, जिसे डॉ. विक्रम ए. साराभाई की दूरदर्शिता पर 1962 में भारत सरकार द्वारा स्थापित किया गया था। इसरो का गठन 15 अगस्त, 1969 को किया गया था तथा अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के लिए विस्तारित भूमिका के साथ इन्कोस्पार की जगह ली। अं.वि. की स्थापना हुई और 1972 में इसरो को अं.वि. के तहत लाया गया।
अपनी तकनीकी प्रगति के साथ, इसरो देश में विज्ञान और विज्ञान संबंधी शिक्षा में योगदान देता है। अंतरिक्ष विभाग के तत्वावधान में सामान्य प्रकार्य में सुदूर संवेदन, खगोल विज्ञान और तारा भौतिकी, वायुमंडलीय विज्ञान और अंतरिक्ष विज्ञान के लिए विभिन्न समर्पित अनुसंधान केंद्र और स्वायत्त संस्थान हैं। इसरो के स्वयं के चंद्र और अंतरग्रहीय मिशनों के साथ-साथ अन्य वैज्ञानिक परियोजनाएं वैज्ञानिक समुदाय को बहुमूल्य आंकडे प्रदान करने के अलावा विज्ञान शिक्षा को प्रोत्साहित और बढ़ावा देते हैं, जो परिणामस्वरूप विज्ञान को बढ़ावा देता है।

इसरो का मुख्यालय कहां है

इसरो का मुख्यालय बेंगलूरु में स्थित है। इसकी गतिविधियाँ विभिन्न केंद्रों और इकाइयों में फैली हुई हैं। विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र (वी.एस.एस.सी.), तिरुवनंतपुरम में प्रमोचक रॉकेट का निर्माण किया जाता है; यू. आर. राव अंतरिक्ष केंद्र (यू.आर.एस.सी.), बेंगलूरु में उपग्रहों की डिजाइन एवं विकास किया जाता है; सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (एस.डी.एस.सी.), श्रीहरिकोटा में उपग्रहों एवं प्रमोचक रॉकेटों का समेकन तथा प्रमोचन किया जाता है; द्रव नोदन प्रणाली केंद्र (एल.पी.एस.सी.), वलियमाला एवं बेंगलूरु में क्रायोजेनिक चरण के साथ द्रव चरणों का विकास किया जाता है; अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (सैक), अहमदाबाद में संचार एवं सुदूर संवेदन उपग्रहों के संवेदकों तथा अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग से संबंधित पहलुओं पर कार्य किया जाता है; राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र (एन.आर.एस.सी.), हैदराबाद में सुदूर संवेदन आँकड़ों का अभिग्रहण, प्रसंस्करण तथा प्रसारण किया जाता है।इसरो की गतिविधियों का मार्गदर्शन इसके अध्यक्ष द्वारा किया जाता है, जो अं.वि. के सचिव और अंतरिक्ष आयोग - शीर्ष निकाय, जो नीतियों को तैयार करता है और भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के कार्यान्वयन का निरीक्षण करता है, के अध्यक्ष भी होंगे।'